

वर्ष: 6 अंक: 2 फरवरी, 2026

मूल्य: 60 रु.

पृष्ठ : 44

राजस्थान टुडे

RNI No. RAJIN/2020/11458

मुक्त व्यापार की छाया
में केंद्रीय बजट

6

लोकमत ही सर्वोच्च

13

बीमारी बना रही कर्जदार

26

'3S' फॉर्मूले से बुनी
राजस्थान की नई
स्टार्टअप संस्कृति

9



राजस्थान ग्रामीण बैंक

(सरकार के स्वामित्वाधीन अनुसूचित बैंक)

(Scheduled Bank owned by the Govt)

Serving People of Rajasthan for more than 4 decades



व्यवसाय की उड़ान **RGB** के साथ

RGB सरल MSME ऋण योजना*



- 25 करोड़ तक का ऋण
- मैन्युफैक्चरिंग एवं सर्विस क्षेत्र से जुड़े सभी MSME एवं अन्य यूनिट्स पात्र
- वर्किंग कैपिटल एवं सावधि ऋण की सुविधा
- CGTMSE के अंतर्गत ऋण सुरक्षा उपलब्ध
- ब्याज दर 8.20%* से प्रारंभ
- सरल स्वीकृति, न्यूनतम दस्तावेज़

RGB जमा योजना

- ♦ आकर्षक ब्याज दर
- ♦ सुरक्षित एवं भरोसेमंद जमा
- ♦ DICGC के अंतर्गत बीमा सुरक्षा उपलब्ध
- ♦ **RGB DISA App** के माध्यम से खाता खोलने की सुविधा (एंड्रॉइड एवं iOS पर उपलब्ध)
- ♦ सभी डिजिटल बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध



* नियम व शर्तें लागू

Rajasthan Gramin Bank

Camp Office Jodhpur, Tulsi Tower, 9th B Road, Sardarpura, Jodhpur.
0291-2593100; Contactus@rgb.bank.in



RNI No. RAJHIN/2020/11458
वर्ष 6, अंक 2, फरवरी 2026
(प्रत्येक माह 15 तारीख को प्रकाशित)

प्रधान सम्पादक - दिनेश रामावत
प्रबंध सम्पादक - राकेश गांधी
राजनीतिक सम्पादक - सुरेश व्यास
कार्यकारी सम्पादक - अजय अस्थाना
सह सम्पादक - बलवंत राज मेहता

विशेष प्रतिनिधि

नई दिल्ली - राधा रमण

जयपुर - मणिमाला शर्मा,

विवेक श्रीवास्तव

अजमेर - रमेश शर्मा

उदयपुर - मधुलिका सिंह

कोटा - अरविन्द गुप्ता

पाली - चैनराज भाटी

सिरोही - गणपत सिंह

जालोर - तरुण गहलोत

बाड़मेर - धर्मसिंह भाटी

रेखाचित्र - राजेंद्र यादव

बिजनेस एसोसिएट - दीपक पंवार

विज्ञापन प्रतिनिधि

जोधपुर - प्रवीण गिरी - 99280 26609

कोटा - यतीन्द्र जैन - 94140 76997

संपादकीय कार्यालय

बी-4, फोर्थ फ्लोर, एम.आर. हाईट्स महावीर कॉलोनी,

भास्कर सर्किल, रातानाड़ा, जोधपुर - 342 011

फ़ोटोसर्प नंबर - 81078 00000

ई-मेल - rajasthanodaya@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और प्रधान सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी भावना किसी वर्ग या व्यक्ति को आहत करना नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक पूनम अस्थाना द्वारा बी-4, फोर्थ फ्लोर, महावीर कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342 011 से प्रकाशित और डी.बी. कॉर्पोरेट लिमिटेड, 01 पार्श्वनाथ इंडस्ट्रियल एरिया, रिलायंस वेयर हाउस के पास, मोगरा कला, जोधपुर-342 802 में मुद्रित। संपादक: अजय अस्थाना* (*पी आर पी एक्ट के तहत उत्तरदायी)

4 अपनी बात
भारत की ओर झुकती दुनिया

नियमित कालम

18 बोल हरि बोल **21** बात बेलगाम
38 अभिव्यक्ति **42** ग्रहों की चाल

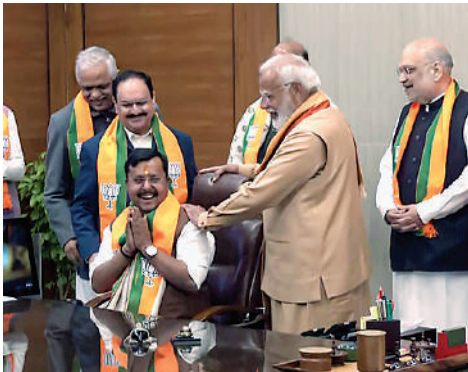
6 मुक्त व्यापार की छाया में बजट



9 नई स्टार्टअप संस्कृति



11 मोदी युग की नई सत्ता रणनीति



13 लोकमत ही सर्वोच्च

16 वेनेजुएला और ईरान क्यों बने निशाना

19 अजमेर विशेष...
अजमेर का डिजिटल अवतार



22 कोटा विशेष...
नई उड़ान की ओर कोटा

24 साक्षात्कार...
तीन पीढ़ियां, एक सच

26 सेहत...
बीमारी बना रही कर्जदार

28 समाज...
बचपन का अदृश्य बोझ

32 साहित्य...
ज्ञान की नई उड़ान



33 स्पोर्ट्स...
रफतार का नया भारतीय युग

36 वसन्त ऋतु...
आज के आनन्द की जय

41 फनकार...
अच्छा चलता हूँ, दुआओं में याद रखना...

भारत की ओर झुकती दुनिया

अपनी बात



दिनेश रामावत प्रधान सम्पादक

बदलती वैश्विक व्यवस्था, अमेरिकी अनिश्चितता और संरक्षणवादी रुझानों के बीच भारत एक भरोसेमंद और संतुलित विकल्प के रूप में उभर रहा है। भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता इसी भरोसे का प्रतीक है। डिजिटल प्रगति, कूटनीतिक संतुलन और बाजार क्षमता भारत की ताकत हैं, लेकिन नियामक सुधार और समावेशी लाभ सुनिश्चित करना बड़ी चुनौती है। अवसर और आशंका के इस संगम में संतुलित दृष्टि ही भारत के भविष्य की कुंजी है।

देखिए, आप अकेले नहीं सोच रहे। मेरे मन में भी वही सवाल है जो शायद आपके मन में है-क्या वाकई यह भारत का "क्षण" है, या हम फिर किसी बड़े मौके को लेकर जरूरत से ज्यादा उत्साहित हो रहे हैं? लेकिन इसी सवाल के साथ एक दूसरा, उतना ही जरूरी सवाल भी उठता है-अगर यह मौका नहीं है, तो फिर कौन-सा होगा?

आज की दुनिया को अगर एक शब्द में समझना हो, तो वह शब्द है-अनिश्चितता। व्यापार अनिश्चित है, राजनीति अनिश्चित है, गठबंधन अनिश्चित हैं। अमेरिका, जो कभी वैश्विक व्यवस्था का स्थायी स्तंभ माना जाता था, आज खुद अपने फैसलों से दुनिया को असहज कर रहा है। टैरिफ की धमकियां, संरक्षणवादी सोच और नेतृत्व की अस्थिरता ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को सोचने पर मजबूर कर दिया है-क्या अब किसी एक ताकत पर निर्भर रहना समझदारी है?

यहीं से "डी-रिस्क" और "डाइवर्सिफिकेशन" सिर्फ शब्द नहीं रह जाते, बल्कि नीति बन जाते हैं। और इसी नीति के केंद्र में भारत धीरे-धीरे नहीं, बल्कि स्पष्ट रूप से उभरता है।

भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते को "मदर ऑफ ऑल डीलस" कहा जाना यूँ ही नहीं है। 27 देशों का एक साथ भारत से इतने व्यापक दायरे में समझौता करना इस बात का संकेत है कि यूरोप भारत को अब हाशिए का खिलाड़ी नहीं मानता।

यह भरोसा यूँ ही नहीं बनता। यह भरोसा पिछले एक दशक में भारत की बदली हुई छवि से पैदा हुआ है- एक ऐसा देश जो लोकतांत्रिक भी है, बाजार-उन्मुख भी है और रणनीतिक रूप से संतुलित भी।

यहां अक्सर हम आलोचना करते हैं- और करना भी चाहिए-लेकिन जरा ईमानदारी से यह भी देखें कि भारत ने क्या बदला है। डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, यूपीआई जैसी प्रणालियां, तेजी से बढ़ता स्टार्टअप इकोसिस्टम, और वैश्विक मंचों पर स्पष्ट और आत्मविश्वासी कूटनीति-ये सब भारत को पहले से अलग बनाते हैं।

यूरोप, कनाडा या ब्राजील भारत की ओर इसलिए नहीं देख रहे कि उनके पास कोई और विकल्प नहीं है, बल्कि इसलिए देख रहे हैं क्योंकि भारत अब एक विश्वसनीय विकल्प बन चुका है। कनाडा के प्रधानमंत्री की प्रस्तावित यात्रा और ब्राजील के राष्ट्रपति का प्रस्तावित उद्योग-संवाद इसी भरोसे का विस्तार है। यह स्वीकारोक्ति है कि भारत के निजी क्षेत्र के बिना अब वैश्विक व्यापार की रणनीति अधूरी है। यह वही भारत है, जिसे कभी "लाइसेंस-परमिट राज" के उदाहरण के तौर पर देखा जाता था।

अब सवाल उठता है- क्या यह सब सिर्फ बड़े कॉर्पोरेट्स तक सीमित रहेगा? यह चिंता जायज है, और इसे नजरअंदाज करना खतरनाक होगा। लेकिन यहां एक सकारात्मक संभावना भी है, जिसे हम अक्सर देखने से चूक जाते हैं। वैश्विक सप्लाई चेन का भारत की ओर आना केवल बड़े उद्योगों का खेल नहीं है। इसके साथ लॉजिस्टिक्स, वेयरहाउसिंग, पैकेजिंग, टेक्निकल सर्विसेज और स्किल्ड मैनुफाचर की मांग बढ़ेगी। अगर नीतियां सही रहें, तो इसका सीधा असर रोजगार पर पड़ेगा— खासकर अर्ध-शहरी और



ग्रामीण भारत में।

यूरोप के साथ समझौते में पर्यावरण और श्रम मानकों की शर्तें भी हैं। पहली नजर में यह बोझ लग सकता है, लेकिन दीर्घकाल में यही शर्तें भारतीय उद्योग को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाएंगी। हरित तकनीक, स्वच्छ ऊर्जा और टिकाऊ उत्पादन अब "विकल्प" नहीं, अनिवार्यता बनते जा रहे हैं। भारत अगर इस बदलाव को जल्दी अपनाता है, तो वह पिछड़ने के बजाय नेतृत्व कर सकता है।

यह भी सच है कि भारत के सामने चुनौतियां कम नहीं हैं- नियामक जटिलताएं, न्यायिक देरी, और नीति-क्रियान्वयन की कमजोरियां। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि भारत आज उन चुनौतियों को पहचानता है। शायद पहली बार, नीति और सार्वजनिक बहस में यह स्वीकार किया जा रहा है कि केवल बड़े समझौते काफी नहीं हैं; जमीन पर सुधार उतने ही जरूरी हैं।

यहां सकारात्मक दृष्टि इसलिए जरूरी है, क्योंकि दुनिया भारत से किसी परिपूर्ण व्यवस्था की उम्मीद नहीं कर रही। वह एक ऐसे साझेदार की तलाश में है, जो सीखने को तैयार हो, स्थिर हो और दीर्घकालिक सोच रखता हो। और इस कसौटी पर भारत कई देशों से आगे दिखता है।

एक और बात, जो अक्सर अनदेखी रह जाती है- भारत की रणनीतिक स्वायत्तता। भारत न तो किसी एक ध्रुव का अनुयायी है, न किसी वैचारिक खेमे में बंद। यही संतुलन उसे यूरोप, अमेरिका, लैटिन अमेरिका और एशिया- सभी के लिए स्वीकार्य बनाता है। यह संतुलन कोई संयोग नहीं, बल्कि कूटनीतिक सोच का नतीजा है।

तो हां, कुछ आशंकाएं भी हैं। यह भी संभव है कि कुछ लाभ सीमित हाथों में सिमट जाएं। यह भी संभव है कि सुधारों की गति उम्मीद से धीमी रहे। लेकिन इतिहास केवल आशंकाओं से नहीं बनता। इतिहास उन क्षणों से बनता है, जब देश अपनी क्षमताओं पर भरोसा करते हुए जोखिम उठाते हैं।

आज भारत उसी मोड़ पर खड़ा है। दुनिया की निगाहें उस पर हैं- संदेह के साथ भी, उम्मीद के साथ भी। और शायद यही सबसे बड़ा सकारात्मक संकेत है। उदासीन दुनिया सबसे खतरनाक होती है; उम्मीद रखने वाली दुनिया आपको अवसर देती है।

अंत में, बस इतना ही कि- यह समय सिर्फ आत्मालोचना का नहीं, आत्मविश्वास का भी है। अगर हम केवल कमियां गिनेंगे, तो अवसर हाथ से निकल जाएगा। और अगर केवल उत्सव मनाएंगे, तो वही कमियां हमें ले डूबेंगी।

संतुलन ही शायद इस दौर का सबसे बड़ा सबक है।



सोना, केंद्रीय बैंक और बदलती वैश्विक मुद्रा व्यवस्था

वैश्विक अस्थिरता, डॉलर पर घटता भरोसा और भू-राजनीतिक तनावों के बीच केंद्रीय बैंक तेजी से सोने की ओर लौट रहे हैं। भारत, चीन और रूस जैसे देश आरक्षित रणनीति बदल रहे हैं, जबकि ब्रिक्स जैसी पहल बहु-मुद्रा व्यवस्था की ओर संकेत देती हैं।

वै

श्विक वित्तीय व्यवस्था एक बार फिर संक्रमण के दौर से गुजर रही है। जिस डॉलर को दशकों तक स्थिरता और सुरक्षा का प्रतीक माना गया, उस पर भरोसा धीरे-धीरे दरक रहा है। यही कारण है कि सोना—जिसे आधुनिक वित्त लंबे समय तक अप्रासंगिक मानता रहा—आज फिर केंद्रीय बैंकों की रणनीति के केंद्र में आ गया है।

हाल के महीनों में सोने की कीमत का रिकॉर्ड स्तर तक पहुँचना केवल बाजार का उतार-चढ़ाव नहीं है। यह वैश्विक अस्थिरता, भू-राजनीतिक तनाव और मुद्रा युद्धों का सीधा परिणाम है। अमेरिकी नीतिगत



अनिश्चितता, व्यापार प्रतिबंधों की वापसी और डॉलर में कमजोरी ने दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों को अपनी आरक्षित परिसंपत्तियों पर पुनर्विचार के लिए मजबूर किया है।

भारत इसका स्पष्ट उदाहरण है। भारतीय रिजर्व बैंक ने अपने विदेशी मुद्रा भंडार में सोने की हिस्सेदारी को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया है। यह संकेत देता है कि भारत अब केवल विदेशी मुद्राओं पर निर्भर रहने के बजाय संतुलित और सुरक्षित आरक्षित संरचना की ओर बढ़ रहा है। यह रुझान भारत तक सीमित नहीं है।

चीन लगातार अमेरिकी ट्रेजरी बॉन्ड से दूरी बनाते हुए सोने का भंडार बढ़ा रहा है। रूस, पश्चिमी प्रतिबंधों के बाद, सोने को अपनी वित्तीय संप्रभुता के आधार के रूप में स्थापित कर चुका है। यूरोपीय देश भले ही आक्रामक खरीद न कर रहे हों, लेकिन वे अपने स्वर्ण भंडार को सुरक्षित रखने पर विशेष जोर दे रहे हैं। खाड़ी देश भी तेल व्यापार में वैकल्पिक मुद्राओं और व्यवस्थाओं पर विचार कर रहे हैं।

इसी पृष्ठभूमि में ब्रिक्स देशों द्वारा वैकल्पिक मुद्रा व्यवस्था की चर्चा को समझा जाना चाहिए। ब्रिक्स मुद्रा अभी सैद्धांतिक स्तर पर है, लेकिन इसका उद्देश्य स्पष्ट है—डॉलर-केंद्रित वैश्विक व्यवस्था को चुनौती देना। इस परिवर्तन की बुनियाद किसी एक राष्ट्रीय मुद्रा पर नहीं, बल्कि सोने जैसी सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य संपत्ति पर टिक सकती है।

आगे की राह में सोने की कीमतों में उतार-चढ़ाव संभव है। अल्पकाल में मुनाफ़ावसूली और स्थिरता के दौर आ सकते हैं, लेकिन दीर्घकालिक रुझान सोने के पक्ष में ही दिखाई देता है। जब तक वैश्विक राजनीति में स्थिरता नहीं आती और एक नई संतुलित मुद्रा व्यवस्था आकार नहीं लेती, तब तक सोना केंद्रीय बैंकों के लिए सबसे सुरक्षित विकल्प बना रहेगा।

अन्त में, सोने की बढ़ती भूमिका केवल आर्थिक नहीं, बल्कि राजनीतिक और रणनीतिक परिवर्तन का संकेत है। यह बदलाव इस बात की पुष्टि करता है कि वैश्विक वित्त अब एकध्रुवीय नहीं रहा—और ऐसी दुनिया में सोना फिर से केंद्रीय स्थान ग्रहण कर रहा है।

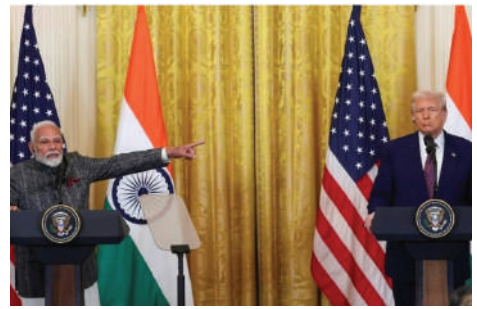
अवसर, अहंकार और छूटी हुई ट्रेन

भारत-अमेरिका व्यापार समझौता इसलिए अटक गया क्योंकि अमेरिका ने दबाव और टैरिफ की नीति अपनाई, जबकि भारत बराबरी और सम्मान पर आधारित साझेदारी चाहता है। बदलती वैश्विक आर्थिक वास्तविकताओं में पुरानी सोच अब काम नहीं कर रही।

भा

रत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित व्यापार समझौता केवल दो देशों के बीच आर्थिक करार भर नहीं था, बल्कि यह 21वीं सदी के सबसे अहम रणनीतिक रिश्तों में से एक को नई दिशा दे सकता था। दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले लोकतंत्र और दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के बीच यह समझौता दोनों के लिए लाभकारी हो सकता था। लेकिन यह अवसर अमेरिकी नीति-निर्माण की गलतियों और भारत की बदली हुई आत्मविश्वासी सोच के बीच कहीं खो गया।

अमेरिका की ओर से यह धारणा बनी रही कि भारत को पहल करनी चाहिए, प्रधानमंत्री



स्तर पर फोन आएगा और समझौते की शर्तें वॉशिंगटन तय करेगा। यह सोच उस दौर की है जब भारत को “उभरता हुआ बाज़ार” मानकर उस पर दबाव बनाया जा सकता था। लेकिन आज का भारत अलग है। भारत अब न तो जल्दबाजी में सौदे करता है और न ही दंडात्मक नीतियों के आगे झुकता है। व्यापार वार्ता में बराबरी और सम्मान की अपेक्षा रखना भारत की स्पष्ट नीति बन चुकी है।

इस पृष्ठभूमि में ट्रेड प्रशासन की टैरिफ नीति निर्णायक साबित हुई। भारतीय उत्पादों पर 50 प्रतिशत तक शुल्क और रूसी तेल खरीद को लेकर दंडात्मक कर केवल आर्थिक कदम नहीं थे, बल्कि राजनीतिक संदेश भी थे। इन फैसलों ने यह संकेत दिया कि अमेरिका साझेदारी से अधिक दबाव की भाषा में बात कर रहा है। ऐसे माहौल में किसी भी स्थायी व्यापार समझौते की कल्पना करना कठिन हो जाता है।

भारत की प्रतिक्रिया इस बदलते आत्मविश्वास को दर्शाती है। भारत ने बातचीत के दरवाजे बंद नहीं किए, लेकिन यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह धमकियों के साए में समझौता नहीं करेगा। “ट्रेन छूट गई” जैसे बयान दरअसल इस सच्चाई को छुपाने का प्रयास हैं कि अमेरिका ने स्वयं ही कदम पीछे खींचे। जब भरोसा कमजोर होता है, तो देरी स्वाभाविक हो जाती है—और उसी देरी ने अमेरिका को निर्णायक मोड़ पर पीछे कर दिया।

इस पूरे घटनाक्रम से एक बड़ा सबक निकलता है। भारत और अमेरिका के रिश्ते केवल सामरिक साझेदारी या रक्षा सहयोग तक सीमित नहीं रह सकते। यदि आर्थिक आधार मजबूत नहीं होगा, तो रणनीतिक रिश्ते भी अधूरे रहेंगे। अमेरिका को यह समझना होगा कि भारत के साथ व्यापारिक संबंध दबाव नहीं, साझेदारी की मांग करते हैं।

भारत के लिए यह क्षण संयम और स्पष्टता का है। अमेरिका के साथ व्यापार समझौता अब भी संभव है, लेकिन शर्त वही होगी—बराबरी, पारदर्शिता और दीर्घकालिक सोच। अगर अमेरिका पुराने अहंकार और टैरिफ की राजनीति में उलझा रहा, तो वह केवल एक समझौता नहीं, बल्कि एशिया में उभरती आर्थिक साझेदारी का केंद्र बनने का अवसर भी गंवा सकता है।

वैश्विक दबावों के बीच बजट 2026-27 की आर्थिक दिशा मुक्त व्यापार की छाया में केंद्रीय बजट

वैश्विक टैरिफ दबावों और मुक्त व्यापार समझौतों की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत बजट 2026-27 में सरकार की प्राथमिकताएं बदली नजर आती हैं। पूंजीगत खर्च, कर राहत और कृषि जैसे मुद्दों पर खामोशी के बीच एमएसएमई, एआई और सेवाक्षेत्र पर जोर दिखता है।



डॉ. पूजा वोहरा, आर्थिक मामलों के जानकार

मो दी सरकार द्वारा वर्ष 2026-27 का बजट पूर्णतया वैश्विक स्तर पर हुए बदलावों के दबाव में और इसके चलते ही तीव्र आर्थिक सुधार बजट से नदारद दिखे। इस बजट में आम जनता को ना तो किसी तरह से करों की दरों में कमी मिली और ना ही महंगाई से पड़ रही मार से कोई राहत। सबसे अधिक हैरानी वाली बात सरकार के द्वारा पूंजीगत खर्चों में बढ़ोतरी के संबंध में भी कोई घोषणा नहीं हुई जो बीते कई वर्षों में मोदी सरकार की एक बहुत बड़ी ताकत रही है और इसी के चलते बजट के तुरंत बाद स्टॉक मार्केट में बहुत बड़े स्तर गिरावट पर दर्ज हुई।

बजट 2026-27 के संबंध में विश्लेषण का आधार यही बताता है कि सरकार, राष्ट्रपति ट्रंप की टैरिफ नीतियों के दबाव के चलते पहले से ही दिवाली से पूर्व जीएसटी की दरों में बहुत बड़े स्तर पर कमी कर चुकी है और उसे राजस्व में बड़ी कमी हुई और इसके साथ ही पिछले वित्तीय वर्ष में सरकार के द्वारा आयकर की सीमा में भी बड़ा बदलाव किया गया जिसके चलते भी प्रत्यक्ष करों के संग्रहण में तुलनात्मक रूप से कमी हुई है। इसी कारण पूंजीगत खर्चों में बढ़ोतरी पर कोई घोषणा नहीं हुई जो यकीनन मोदी सरकार की उस सोच पर एक प्रश्न उठता है जो हमेशा से उसकी पहचान हुआ करती थी। विश्लेषण का अन्य आधार यह भी है कि ये बजट पूर्णतया सरकार के द्वारा ट्रंप की टैरिफ नीतियों से बचने के लिए बीते कुछ महीनों में बड़ी तेजी से हुए मुक्त व्यापार समझौतों की छाया में बना है। सरकार जीएसटी के दरों में कमी से घरेलू बाजार में बचत को पहले से ही बढ़ा चुकी है और अब सरकार का पूरा फोकस मुक्त व्यापार समझौते के तहत निर्यातों को बढ़ाने पर है और उसी के माध्यम से विदेशी पूंजी बाजार के संग्रहण पर भी। सरकार ने राजकोषीय घाटे पर नियंत्रण को स्थापित कर लेने के लिए अपनी पीठ भी थपथपाई है। और इस संबंध में वर्ष 2021-22 में की गई घोषणा के तहत राजकोषीय घाटे 4.5 प्रतिशत से नीचे लाने में सफलता का जिफ्र भी किया है और आगामी बजट में इसे 4.3 प्रतिशत पर लाने के उद्देश्य को बड़ी प्रमुखता के साथ रखा भी है।

Inc4
**UNION ₹ 2026
BUDGET**

एआई

के क्षेत्र में भारत को अपनी बहुत बहुत तेजी से बढ़ानी होगी और इसके लिए सरकार के द्वारा सभी विदेशी कंपनियों को जो भारत में क्लाउड सर्विसेज के अंतर्गत अपनी सेवाएं प्रदान करेगी उनसे 2047 तक शत प्रतिशत कर छूट देने की घोषणा की है, यह कदम बहुत उत्साहजनक है। परंतु एआई के वे भारतीय स्टार्टअप जो भारत छोड़कर अमेरिका में सेवाएं दे रहे हैं उन्हें वापस आकर्षित करने हेतु प्रयासों पर बजट में चुप्पी अखरती है।



इंफ्रास्ट्रक्चर

डेवलपमेंट में 7 रेल कॉरिडोर के अलावा कोई बड़ी घोषणा नहीं दिखी जो बड़ा हतप्रभ करती है। किसानों के संबंध में उनकी आय को शुरू से दुगना करने की बात करने वाली मोदी सरकार इस बजट में पूर्ण रूप से शांत दिखी। मात्र कुछ घोषणाएं काजू और नारियल की खेती के संबंध में की गई है ताकि उस संबंध में भारत आत्मनिर्भरता को प्राप्त करके निर्यातों की तरफ बड़ी तेजी से बढ़े। परंतु उसके अलावा किसानों के ऋण व एमएसपी इत्यादि पर कोई बात नहीं रखी गई है जो बहुत निराशाजनक है।

कैंसर : कस्टम ड्यूटी खत्म

वैश्विक बाजार में भारत की जैविक दवाइयों के उत्पादन में बढ़त को स्थापित करने की पहल फार्मा सेक्टर के लिए बहुत उत्साहजनक है। इसके अलावा स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार के द्वारा निजी क्षेत्र के साथ आगे बढ़ते हुए पांच क्षेत्रीय मेडिकल हब बनाने की बात की गई है जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार की बीमारियों की की जांच, आवश्यक देखभाल और मरीज की पुनर्वास से संबंधित सभी सुविधाओं को एक छत के नीचे लाने की बात की गई है इससे आने वाले समय में स्वास्थ्य के क्षेत्र में रोजगारों की भरने की काफी संभावना है। कैंसर की 17 दवाओं को कस्टम ड्यूटी खत्म करना भी एक आवश्यक अच्छी पहल के रूप में रखा जा सकता है। इससे समाज को एक बड़ी राहत मिलेगी।

शोध व अनुसंधान के लिए 5 विश्वविद्यालय कॉरिडोर बनेंगे

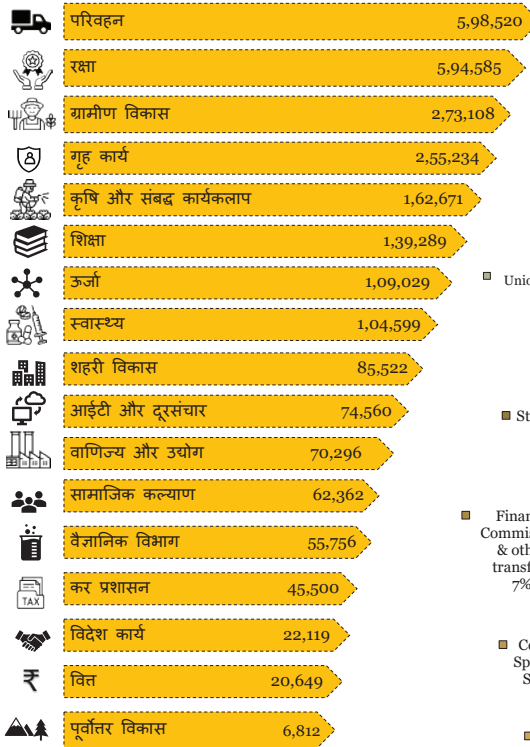
सरकार ने इस बजट के माध्यम से रोजगारों को सर्विस क्षेत्र के माध्यम से बढ़ाने के लिए पहला जरूर की है परंतु प्राथमिक स्तर पर अभी सिर्फ एक उच्च स्तरीय कमेटी बनाने की बात की गई है जिसके माध्यम से ऐसे क्षेत्र की पहचान करने की कोशिश की जाएगी जहां पर उन्नति की संभावना है और उसे हेतु शैक्षणिक संस्थानों में युवाओं के अंतर्गत आवश्यक स्किल और क्षमता के विकास के लिए पारस्परिक तालमेल को स्थापित किया जाएगा। परंतु इसके परिणाम भी अभी भविष्य की गत में ही है। शोध व अनुसंधान की बात करें तो इस पक्ष पर सरकार ने बढ़ोतरी करने के लिए पांच विश्वविद्यालय कॉरिडोर बनाए जाएंगे जो निजी क्षेत्र उद्योगों के साथ कार्य इस पक्ष पर कार्य करेंगे। लड़कियों व महिलाओं को इस हेतु मुख्यधारा में रखने की कोशिश की गई है और उनकी शिक्षा हेतु शहरों में अलग से होस्टल्स बनाने की बात भी रखी है। पर्यटन के क्षेत्र के लिए सरकार के द्वारा 20000 जगहों के लिए 10000 गाइड की ट्रेनिंग की व्यवस्था की गई है और इस हेतु सभी आवश्यक क्रियांव भारतीय प्रबंधन संस्थान के द्वारा किया जाएगा।

बैंकिंग

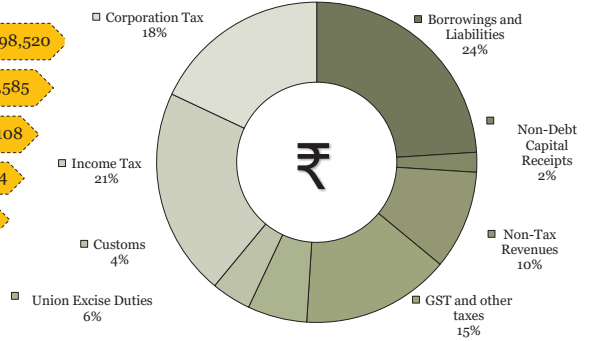
सेक्टर के लिए जरूर सरकार ने एक कदम आगे बढ़ते हुए विकसित भारत की सोच के अंतर्गत उन्हें मुख्यधारा में सम्मिलित करने के लिए एक कमेटी बनाने की बात रखी है जिससे आने वाले समय में ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत बैंकिंग का और विस्तार संभव है और आधुनिकीकरण की तरफ भी एक कदम आगे बढ़े।

प्रमुख मदों का व्यय

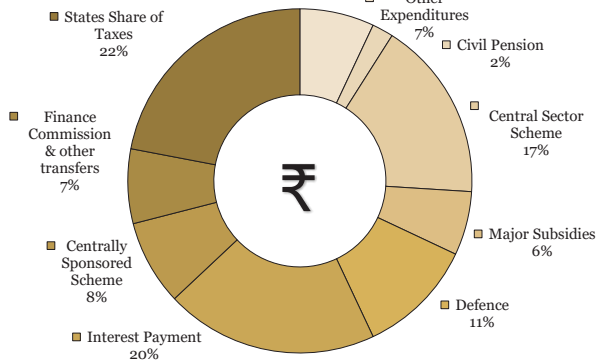
₹ करोड़ में



रुपया कहां से आता है



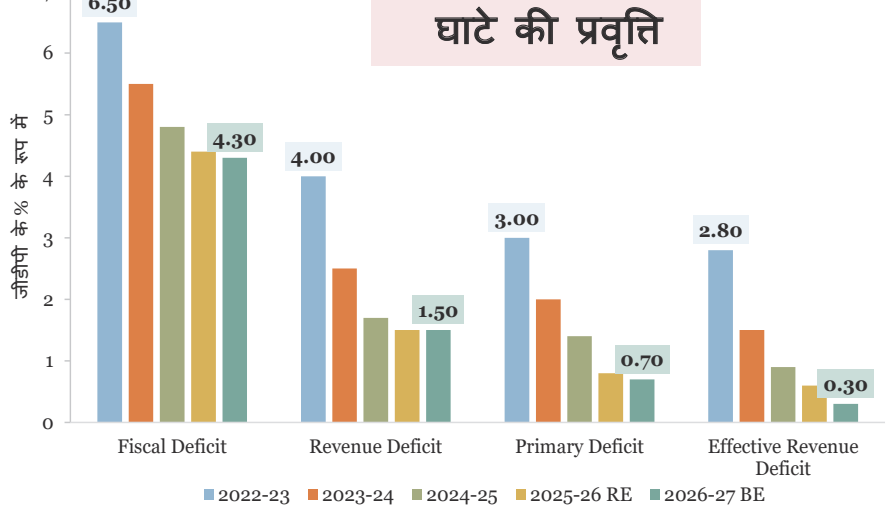
रुपया कहां जाता है



मैनुफैक्चरिंग

बजट के अंतर्गत मैनुफैक्चरिंग सेक्टर को बढ़ाने के लिए एमएसएमई पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो बहुत उत्साह जनक है। एमएसएमई को पूंजी सहायता के लिए 10000 करोड़ रुपये के घोषणा की गई है, इसके अतिरिक्त जोखिम से निपटने के लिए 2000 करोड़ के अतिरिक्त फंड की भी घोषणा है। छोटे शहरों में एमएसएमई को विभिन्न प्रकार की सहायता के लिए सरकार ने एक अच्छी पहल करते हुए विभिन्न प्रोफेशनल संस्थानों को छोटे उद्योगों के साथ एकीकृत करने की घोषणा भी की है।

घाटे की प्रवृत्ति





सेंसेक्स-निफ्टी धाराशाही

स्टॉक मार्केट में आम दिवेशक अपना हाथ न जला पाए इस हेतु फ्यूचर व ऑप्शन में होने वाले निवेश पर सरकार के द्वारा कर (एसटीटी) पर बढ़ोतरी की गई है जो अवनी बेसिक केतु हित में है लेकिन स्टॉक मार्केट में इसका नकारात्मक रूप तुरंत देखने को मिला और उसी के चलते भारी गिरावट दर्ज हुई।

बजट भाषण में स्पष्ट किया...

चीन ने चांदी का निर्यात रोका इसलिए तेजी

इन सब के बीच में इस बात की निराशा बहुत अधिक हुई कि सोने और चांदी के मूल्य पर लगातार हो रही



बढ़ोतरी पर सरकार के द्वारा किसी भी प्रकार की ड्यूटी कम नहीं की गई। चांदी के मूल्य में हो रही अप्रत्याशित वृद्धि जिसने असंगठित क्षेत्र के रोजगार पर

बहुत बड़ी मार पहले से ही कर दी है उसे पर सरकार का मौन रहना समझ से बाहर है। ये विदित है कि चीन ने चांदी के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है और ये उसका ही नतीजा है।

केंद्रीय बैंक की खरीद से सोने के दामों में इजाफा

हालांकि सोने के मूल्य में हो रही बढ़ोतरी पर सरकार



के द्वारा ये कहा जाता रहा है कि ये सब केंद्रीय बैंक के द्वारा हो रही खरीदारी के चलते हैं ताकि भविष्य में डॉलर के मूल्य पर हो रही

वृद्धि को नियंत्रित किया जा सके हालांकि ये पक्ष भी आम जनता के समझ से बाहर है। इसके चलते भारतीय समाज में अब आम आदमी सोना व चांदी दोनों के आभूषणों की खरीदारी से दूर हो जाएगा।



वित्त आयोग ने स्वीकारा... राजस्व का 41 फीसदी राज्यों को मिले यानि... करीब एक लाख करोड़ से ज्यादा वित्तीय रकम जारी होगी

16 वित्त आयोग द्वारा अपनी रिपोर्ट 17 दिसंबर 2025 को ही संसद में प्रस्तुत की गई थी परंतु उसे शीत सत्र के अंतर्गत सरकार ने संसद के पटल पर नहीं रखा था परंतु इस बजट में वित्त आयोग द्वारा 41 प्रतिशत राजस्व का बंटवारा राज्यों को करने के वित्त आयोग के प्रस्ताव को सरकार ने स्वीकार कर लिया है और इसके अंतर्गत तकरीबन एक लाख करोड़ से ऊपर की वित्तीय रकम राज्यों को दी जाएगी। कर से संबंधित घोषणाओं के अंतर्गत कंपनियों में अल्पसंख्यक अंश धारकों के हितों को सुरक्षित रखने हेतु बायबैक योजना के अंतर्गत अब कंपनियों के प्रमोटर्स को 22 प्रतिशत कर देना होगा और वहीं अन्यो को 30 प्रतिशत।

■ इसके अलावा इस बात से सभी परिचित है कि चीन बड़ी तेजी से एआई, ग्रीन टेक्नोलॉजी व दुर्लभ मुद्रा खनिज पर अपनी बढ़त बना रहा है और इन्हीं सबके चलते भारत की चीन पर निर्भरता बढ़ भी रही है, इस पक्ष पर भी मैनुफैक्चरिंग सेक्टर के लिए किसी भी तरह के कोई प्रोत्साहन बजट में नहीं दिखा।

■ सरकार ने सर्विसेज सेक्टर के अंतर्गत आईटी सेक्टर पर बहुत भरोसा जा रहा है और उन्हें सेफ हार्बर की सीमा जिसके माध्यम से वह विभिन्न प्रकार की तकनीकी वह वैधानिक अर्चना से बच सकते हैं वह 300 करोड़ से बढ़कर 2000 करोड़ कर दिया है। इसके माध्यम से आने वाले समय में आईटी सेक्टर के अंतर्गत विभिन्न सुविधाओं में सरलीकरण देखने को मिलेगा और लागत में कमी तथा कार्य कुशलता में वृद्धि होगी जिससे वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान इस पक्ष पर और तेजी से बढ़ेगी और बीते दिनों हुए मुक्त व्यापार समझौता के माध्यम से कुछ देशों में भारत अपनी भारत को तेजी से स्थापित कर सकेगा।



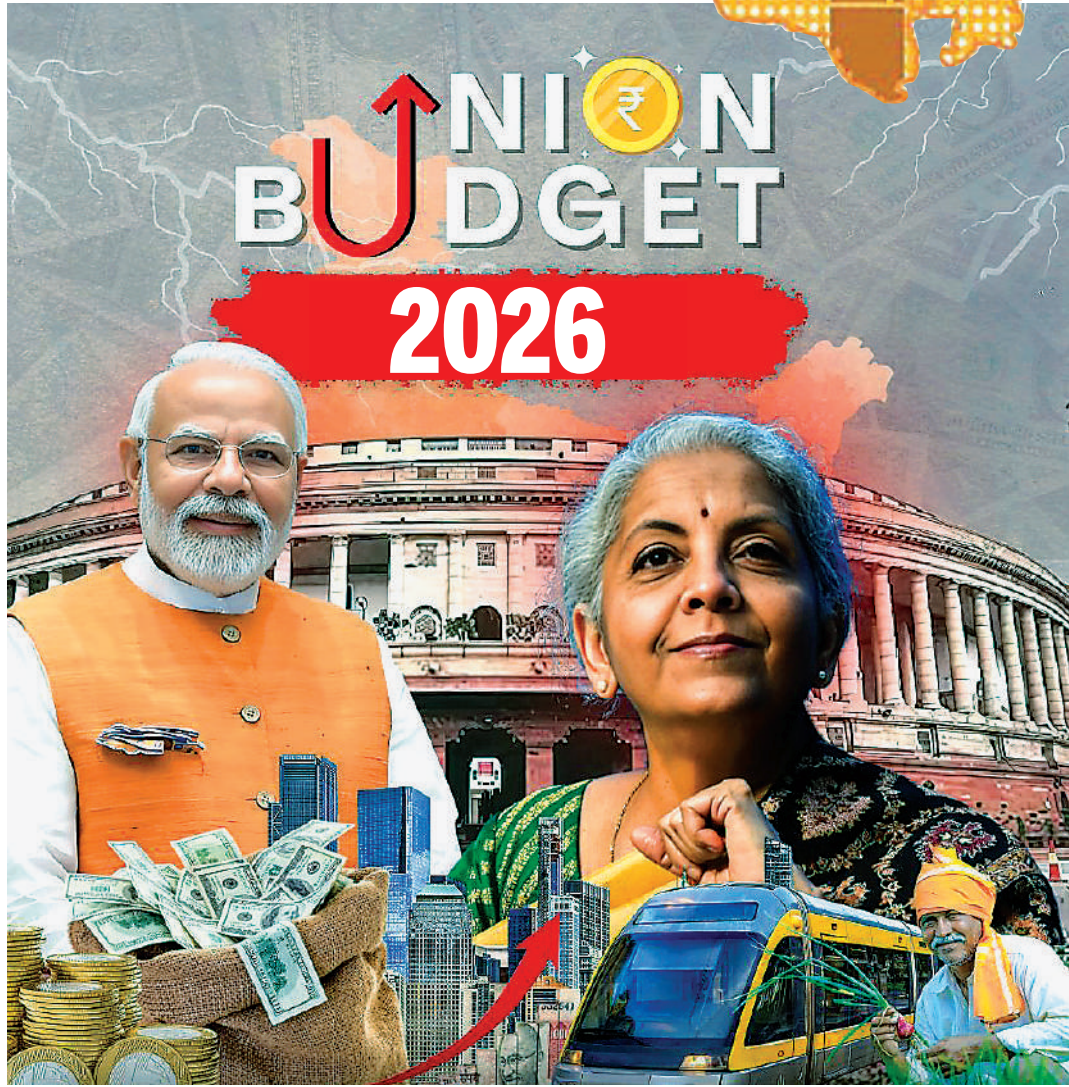
बजट 2026-27 : नीतिगत प्रोत्साहन और धरातल की शक्ति का ऐतिहासिक संगम

‘3S’ फॉर्मूले से बुनी राजस्थान की नई स्टार्टअप संस्कृति



राकेश गांधी, वरिष्ठ पत्रकार

वैश्विक आर्थिक दबावों, टैरिफ नीतियों और बजटीय आंकड़ों की गहमागहमी के बीच राजस्थान का युवा अब अपनी जड़ों से जुड़े अवसरों को वैश्विक मंच पर स्थापित कर रहा है। ‘थ्री-एस’ यानी साइल, स्किल और सस्टेनेबिलिटी के फॉर्मूले पर मिट्टी, हुनर और नवाचार का यह मेल प्रदेश को स्टार्टअप जगत का नया सिरमौर बनाने की राह प्रशस्त कर रहा है।



फ

रवरी का महीना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए केवल एक वित्तीय तिथि नहीं, बल्कि करोड़ों आकांक्षाओं के दस्तावेज का नाम है। जब भी देश की संसद में केंद्रीय बजट प्रस्तुत किया जा रहा होता है, तब मरुधरा की नजरें इस बात पर टिकी होती हैं कि ‘विकसित भारत’ के संकल्प में राजस्थान की विशिष्ट भौगोलिक चुनौतियों और संभावनाओं को कितनी

जगह मिली है। बजट 2026-27 एक ऐसे कालखंड में आया है जब पूरी दुनिया मुक्त व्यापार समझौतों की पेचीदगियों और वैश्विक टैरिफ दबावों के बीच अपनी आर्थिक दिशा तलाश रही है। हालांकि, स्टार्टअप की इस नई लहर में एक बड़ा सत्य यह उभरकर आया है कि सरकारी नीतियां केवल ‘खाद-पानी’ का काम करती हैं, असली बीज तो उस राज्य की मिट्टी और वहां के युवाओं के मौलिक विजन में होता है। राजस्थान के युवाओं के

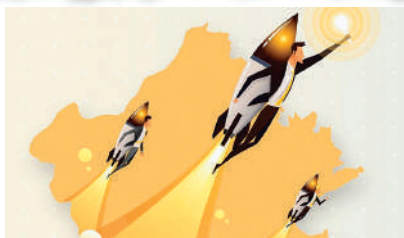
लिए अब समय आ गया है कि वे अपनी उद्यमिता को केवल दिल्ली या बंगलुरु के मॉडल्स की नकल तक सीमित न रखें, बल्कि उसे ‘थ्री-एस’ (3S) फॉर्मूले-साइल (मिट्टी), स्किल (हुनर) और सस्टेनेबिलिटी (निरंतरता) की कसौटी पर कसें। यह फॉर्मूला इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह किसी भी बजटीय उतार-चढ़ाव से परे एक स्थायी और स्वावलंबी आर्थिक रोडमैप प्रदान करता है।





सॉइल (Soil): मिट्टी की सामर्थ्य और एग्री-टेक का उदय इस वैचारिक यात्रा का सबसे पहला और बुनियादी स्तंभ है- 'सॉइल' यानी हमारी मिट्टी और उससे प्राप्त होने वाला प्रचुर कच्चा माल। राजस्थान को अक्सर एक मरुस्थलीय प्रदेश के रूप में देखा जाता है, लेकिन स्टार्टअप की दृष्टि से यह संसाधनों की 'सोने की खान' है। बजट में भले ही इस बार पारंपरिक कृषि ऋणों या एमएसपी जैसे विषयों पर अपेक्षित शोर न दिखा हो, लेकिन सरकार का पूरा ध्यान 'वैल्यू एडिशन' पर केंद्रित नजर आता है। राजस्थान देश का लगभग 41 प्रतिशत बाजरा और भारी मात्रा में सरसों व ग्वार पैदा करता है। आज का युवा उद्यमी केवल कच्चा माल बेचने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह 'एग्रीकल्चर एक्सेलेरेटर फंड' का लाभ उठाकर राज्य के बाजरे को वैश्विक बाजार के लिए 'ग्लूटेन-फ्री' स्नैक्स में बदल रहा है।

मिट्टी की इसी शक्ति का एक और आधुनिक चेहरा बीकानेर में दिखाई देता है। बीकानेर की सिरेमिक क्ले, जो दशकों से केवल दूसरे राज्यों के सेनेटरी उद्योगों के लिए कच्चे माल का स्रोत थी, अब नवाचार के दौर में है। यहां के स्टार्टअप्स अब इसी क्ले से हाई-वोल्टेज इंसुलेटर तैयार कर रहे हैं, जो 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में एक ठोस कदम है। इतना ही नहीं, जालोर और सांचौर जैसे जिलों में कृषि अपशिष्ट और नेपियर घास से बायो-सीएनजी का उत्पादन शुरू होना मरुधरा की बदलती आर्थिक नियति का गवाह है। बजट में 'वेस्ट-टू-वेल्थ' मिशन को दिए गए नए प्रोत्साहन इस दिशा में काम करने वाले स्टार्टअप्स के लिए किसी सजीवनी से कम नहीं हैं। राज्य की खनिज संपदा, विशेषकर मार्बल और ग्रेनाइट उद्योगों से निकलने वाली 'स्लरी' (धूल), जो कभी पर्यावरण के लिए संकट थी, अब नए उद्यमियों के लिए मुफ्त कच्चे माल के रूप में उपलब्ध है। जब कोई युवा इस धूल से ईंट या टाइल्स बनाने का नवाचार करता है, तो वह केवल व्यापार नहीं कर रहा होता, बल्कि स्थानीय संसाधनों की शक्ति को पुनः परिभाषित कर रहा होता है।



स्किल (Skill): विरासत का आधुनिकीकरण और MSME की नई दिशा आलेख का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम है- 'स्किल' यानी हुनर। राजस्थान की रगों में सदियों से चली आ रही हस्तशिल्प और कारीगरी की विरासत अब तकनीक के साथ कदमताल कर रही है। बजट 2026-27 में एमएसएमई सेक्टर के लिए घोषित 10,000 करोड़ रुपये का पूंजी सहायता फंड और 'पीएम विश्वकर्मा 2.0' का विस्तार सीधे तौर पर हमारे शिल्पकारों को उद्यमी बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। बाड़मेर-जैसलमेर के सीमान्त गांवों की कसीदाकारी और अजरक प्रिंट हो या जोधपुर का विख्यात कास्ट-शिल्प, शेखावाटी की भित्ति चित्रकला और राजसमंद की मोलेला मृण्मय कला, इन सभी प्राचीन रोजगारों को आधुनिक स्टार्टअप्स ने नए सिरे से उभारा है।

युवा उद्यमी अब 'ब्लॉकचेन' और 'ई-कॉमर्स' के माध्यम से इन शिल्पकारों को वैश्विक 'होम-डेकोर' की मुख्यधारा से जोड़ रहे हैं। हुनर का यह नया स्वरूप सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी दिखाई देता है। भड़ला (जोधपुर) जैसे विशाल सोलर पार्कों ने राजस्थान को दुनिया का ऊर्जा केंद्र बना दिया है, जहां अब स्थानीय युवा 'स्मार्ट सोलर सर्विसिंग' और AI आधारित मॉनिटरिंग के स्टार्टअप्स खड़ा कर रहे हैं। बजट में एआई क्षेत्र के लिए दी गई विशेष कर रियायतें और विदेशी क्लाउड सेवाओं के लिए 2047 तक की छूट, राजस्थान के उन युवाओं के लिए प्रेरणा है जो तकनीक के माध्यम से स्थानीय समस्याओं का समाधान ढूंढ रहे हैं। जयपुर स्थित 'फ्लीका इंडिया' जैसे सफल उदाहरण इस बात का प्रमाण हैं कि राजस्थानी युवा अपने पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक औद्योगिक समस्याओं के समाधान में बदलने का कौशल बखूबी जानते हैं।



सस्टेनेबिलिटी (Sustainability): भविष्य का आर्थिक आधार तीसरा और सबसे निर्णायक स्तंभ है- 'सस्टेनेबिलिटी' यानी निरंतरता। वैश्विक बाजार के दबाव और बदलती टैरिफ नीतियों के बीच भविष्य की अर्थव्यवस्था उन्हीं स्टार्टअप्स को स्वीकार करेगी जो पर्यावरण और सामाजिक संतुलन के साथ आगे बढ़ेंगे। राजस्थान की पशुपालन आधारित 'व्हाइट इकोनॉमी' इसका सबसे सटीक उदाहरण है। 'आद्विक फूड्स' जैसे स्टार्टअप्स ने जिस प्रकार ऊंटनी के दूध को एक प्रीमियम स्वास्थ्य उत्पाद के रूप में वैश्विक पहचान दिलाई, वह दर्शाता है कि मरुस्थल की विशिष्ट परिस्थितियों में भी टिकाऊ ब्रांड खड़े किए जा सकते हैं। इसी प्रकार, पिछले एक-दो वर्षों में उभरते 'वेस्ट-टू-वैल्यू' स्टार्टअप्स, जो मंदिरों के पुष्प-अपशिष्ट से अगरबत्ती और प्राकृतिक गुलाल बना रहे हैं, सस्टेनेबिलिटी के इस विचार को धरातल पर उतार रहे हैं।

चाहे वह रूरल टूरिज्म हो या जैविक खेती, राजस्थान का स्टार्टअप परिदृश्य अब 'इको-फ्रेंडली' होने के संतुलन पर टिका है। बजट में पर्यटन क्षेत्र के लिए 10,000 गाइडों की ट्रेनिंग और प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों के साथ जुड़ाव की घोषणा मरुधरा के ग्रामीण पर्यटन स्टार्टअप्स के लिए नई ऊर्जा लेकर आएगी।

नीति और धरातल का मिलन बजट की भूमिका इस पूरे परिदृश्य में एक 'एक्सीलेरेटर' की तरह होती है। केंद्रीय बजट में जब 'एग्री-टेक' स्टार्टअप्स के लिए बुनियादी ढांचे का विस्तार होता है या 'एंजेल टैक्स' जैसे जटिल प्रावधानों में पूर्णतः ढील मिलती है, तो राजस्थान के इन स्टार्टअप्स की गति दोगुनी हो जाने के आसार बढ़ जाते हैं। हालांकि, स्टॉक मार्केट की हलचल और राजकोषीय घाटे के आंकड़ों (4.3%) के अपने मायने हो सकते हैं, लेकिन '3S' की यह शक्ति राजस्थान की स्थायी आर्थिक जलवायु है। राजस्थान के युवाओं की आकांक्षाएं अब केवल सरकारी नौकरियों तक सीमित नहीं

हैं, बल्कि वे अब जोखिम लेने और अपनी जड़ों से जुड़कर वैश्विक साम्राज्य खड़े करने के इच्छुक हैं।

राज्य का 'iStart' कार्यक्रम और केंद्र की 'स्टार्टअप इंडिया' जैसी पहलें इन्हें एक मंच तो दे रही हैं, लेकिन असली ऊर्जा उस नवाचार से आ रही है जो मरुधरा की चुनौतियों को ही अपना अवसर बना चुका है। 16वें वित्त आयोग की सिफारिशों के तहत राज्यों को राजस्व का 41 प्रतिशत हिस्सा मिलने से राजस्थान जैसे विशाल राज्य को अपने बुनियादी ढांचे को स्टार्टअप-फ्रेंडली बनाने में मदद मिलेगी।

मोदी युग

की नई

सत्ता रणनीति

नितिन नवीन की ताजपोशी बदलाव का संकेत



नितिन का भाजपा के शीर्ष पद तक पहुंचना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के चाणक्य कहे जाने वाले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भाजपा की संगठनात्मक संरचना, नेतृत्व और शक्ति-संतुलन को नए सिरे से गढ़ने की रणनीति का हिस्सा है। यह रणनीति “युवा बनाम वरिष्ठ” की सरल बहस से कहीं आगे जाकर सत्ता के केंद्रीकरण, नेतृत्व के रोटेशन और स्थायी शक्ति-केंद्रों को तोड़ने की राजनीति का संकेत है।



सुरेश त्यास, वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक

भातीय जनता पार्टी (भाजपा) में इन दिनों एक अघोषित लेकिन स्पष्ट बदलाव चल रहा है। यह बदलाव न नारों में दिखता है, न मंचों से घोषित होता है, बल्कि नई नियुक्तियों और अचानक उभरते चेहरों में चुपचाप आकार ले रहा है। भाजपा में नेतृत्व परिवर्तन अब व्यक्तियों की अदला-बदली भर नहीं रह गया है। यह एक सुनियोजित डेमोग्राफिक री-इंजीनियरिंग यानी जनसांख्यिकीय पुनर्गठन का रूप ले चुका है, जिसमें उम्र, भूमिका और सत्ता के स्तर के आधार पर नेतृत्व को नए सिरे से परिभाषित किया जा रहा है।

बिहार से पांच बार के विधायक 45 वर्षीय नितिन नवीन का भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना इसी बदलाव का प्रतीकात्मक ही नहीं, पुख्ता प्रमाण है। नितिन भाजपा के न सिर्फ सबसे युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं, बल्कि वे पहले ऐसे अध्यक्ष हैं, जिनका जन्म भाजपा की स्थापना के बाद हुआ है। भाजपा उनके जन्म से 47 दिन पहले स्थापित हुई थी।

हालांकि वे एक पारम्परिक राजनीतिक परिवार से आते हैं और उनके पिता नवीन किशोर प्रसाद सिन्हा भाजपा के वरिष्ठ नेता थे और बिहार विधानसभा में कई बार विधायक रहे। नितिन पहली बार साल 2006 में अपने पिता की मृत्यु के बाद हुए उप चुनाव के जरिए राजनीति में आए थे।

नितिन का अचानक दुनिया के सबसे बड़े संगठन के रूप में प्रसिद्ध हो रहे भाजपा

जैसे संगठन का राष्ट्रीय अध्यक्ष पद तक पहुंचना भाजपा में हो रहे बदलाव का ज्वलंत उदाहरण है।

नितिन कभी पार्टी के सबसे चमकदार चेहरों में नहीं गिने गए। यही बात उन्हें मोदी युग की राजनीति में उपयुक्त बनाती है।

पार्टी के कई वरिष्ठ नेता मानते हैं कि नितिन ने कभी न कभी उनके साथ काम किया है। अक्सर तब, जब वे टीम में एक जूनियर सदस्य हुआ करते थे। कुछ उन्हें भाजपा की युवा शाखा के दिनों से याद करते हैं, जब वे पूर्व केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर के साथ भारतीय जनता युवा मोर्चा में काम कर रहे थे और दिल्ली के अशोक रोड स्थित पुराने भाजपा मुख्यालय में नियमित नजर आते थे। लेकिन उनकी सबसे बड़ी योग्यता शायद यही है कि वे न तो किसी बड़े नेता के खेमे से जुड़े हैं, न किसी प्रभावशाली जातीय या संगठनात्मक लॉबी से। और शायद की आज की भाजपा में टिके रहने या आगे बढ़ने के लिए यही गुण सबसे अहम है।

दरअसल, नितिन का भाजपा के शीर्ष पद तक पहुंचना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के चाणक्य कहे जाने वाले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भाजपा की संगठनात्मक संरचना, नेतृत्व और शक्ति-संतुलन को नए सिरे से गढ़ने की रणनीति का हिस्सा है। यह रणनीति “युवा बनाम वरिष्ठ” की सरल बहस से कहीं आगे जाकर सत्ता के केंद्रीकरण, नेतृत्व के रोटेशन और स्थायी शक्ति-केंद्रों को तोड़ने की राजनीति का संकेत है।

प्रयोग नहीं, प्रक्रिया

- भाजपा में युवा नेताओं को आगे लाना कोई नई बात नहीं है। अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी के दौर में भी शिवराज सिंह चौहान जैसे नेता 46 वर्ष की उम्र में मुख्यमंत्री बने थे। फर्क यह है कि तब यह अपवाद था, आज यह पैटर्न बन चुका है। पिछले एक दशक में भाजपा ने जिस तरह अपने मुख्यमंत्रियों, मंत्रियों और संगठनात्मक पदों पर नियुक्तियाँ की हैं, उससे साफ संकेत मिलता है कि पार्टी अब नेतृत्व को स्थायी नहीं मानती। सत्ता अब विरासत या लंबे अनुभव की गारंटी नहीं रही।
- आज भाजपा शासित 14 राज्यों में से केवल पांच मुख्यमंत्रियों की उम्र शपथ ग्रहण के समय 55 वर्ष से अधिक थी। शेष नौ मुख्यमंत्री अपेक्षाकृत युवा थे। कुछ तो 40 के दशक में ही सत्ता की कमान संभाल चुके थे यानी औसत उम्र रही 54 वर्ष। यह भारतीय राजनीति के लिहाज से बड़ा संकेत है।
- राजस्थान के भजनलाल शर्मा, दिल्ली की रेखा गुप्ता या मध्य प्रदेश के मोहन यादव, ये सभी ऐसे नेता हैं जिन्हें सत्ता के केंद्र में अचानक लाया गया। इनमें से कई नेता ऐसे थे, जो चुनाव से पहले तक संभावित मुख्यमंत्रियों की सूची में होना तो दूर मंत्री बनने की कल्पना भी नहीं करते थे या यूँ कहें कि इनकी खास पहचान तक नहीं थी।

नेतृत्व की नजर में रहना जरूरी

- मोदी-शाह युग की भाजपा में नेतृत्व की कसौटी भी बदल गई है। पार्टी के भीतर अब यह धारणा मजबूत है कि मीडिया में लोकप्रियता अब तरक्की की गारंटी की बजाय कई बार बाधा बन जाती है। एक वरिष्ठ भाजपा नेता ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि पहले लोग सोचते थे कि टीवी पर दिखना, अखबारों में नाम आना उन्हें ऊपर ले जाएगा। अब वही चीज ठहराव की वजह बन सकती है। असली पैमाना है, केंद्रीय नेतृत्व की नजरों में रहना।
- इन नेता का तर्क था कि प्रधानमंत्री मोदी अपने शीर्ष नेताओं से भारी 'लेगवर्क' की अपेक्षा करते हैं। लगातार दौरे, संगठनात्मक बैठकें, चुनावी तैयारियां आदि। युवा नेताओं को इसमें स्वाभाविक बढ़त मिलती है। पार्टी के भीतर यह टिप्पणी अब आम है कि जो नेता स्वास्थ्य या उम्र के कारण तेजी से काम नहीं कर सकते, वे इस नए मॉडल में फिट नहीं बैठते।

युवा मुख्यमंत्री, वरिष्ठ संगठन

दिलचस्प बात यह है कि भाजपा ने पूरी तरह युवाओं पर दांव नहीं लगाया है। मुख्यमंत्री अपेक्षाकृत युवा हैं, लेकिन राज्य अध्यक्षों और संगठन प्रमुखों में अनुभव को प्राथमिकता दी गई है। राज्य अध्यक्षों की औसत उम्र 58 वर्ष है, जो मुख्यमंत्रियों से अधिक है। यह संकेत देता है कि भाजपा नेतृत्व अनुभव और ऊर्जा का मिश्रण बनाए रखना चाहता है। उत्तर प्रदेश इसका बड़ा उदाहरण है। योगी आदित्यनाथ 49 वर्ष की उम्र में दूसरी बार मुख्यमंत्री बने, लेकिन प्रदेश अध्यक्ष बनाए गए 61 वर्षीय पंकज चौधरी। असम और महाराष्ट्र को छोड़कर लगभग सभी भाजपा शासित राज्यों में मुख्यमंत्री से उम्र में बड़े नेता संगठन की कमान संभाल रहे हैं। यह मॉडल सत्ता और संगठन के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास है, ताकि युवा नेतृत्व के साथ अनुभवी मार्गदर्शन बना रहे।

युवा वरिष्ठ का कॉकटेल

भाजपा नेतृत्व ने भले ही कम उम्र के नेताओं को मुख्यमंत्री बनाने की रणनीति अपनाई है, लेकिन उनके मंत्रिमंडलों में वरिष्ठ और अनुभवी नेताओं का पलड़ा अब भी भारी है। भाजपा के उपमुख्यमंत्रियों की औसत उम्र 57 वर्ष है, जो मुख्यमंत्रियों से अधिक है। केंद्र में स्थिति और भी स्पष्ट है। साल 2024 में तीसरी बार बनी मोदी सरकार की केंद्रीय मंत्रिपरिषद की औसत उम्र 59 वर्ष है। यहां युवा चेहरों की मौजूदगी प्रतीकात्मक है, निर्णायक नहीं। यह दर्शाता है कि भाजपा सत्ता के शीर्ष स्तर पर स्थिरता चाहती है, जबकि राज्यों और संगठन में प्रयोग की गुंजाइश रखती है।

स्थायी शक्ति-केंद्रों का खात्मा



- प्रदेशों में स्थायी शक्ति-केंद्रों पर अंकुश मोदी युग की राजनीति की सबसे अहम विशेषता है। यही वजह है कि शिवराज सिंह चौहान, वसुंधरा राजे, रमन सिंह और बीएस येदियुरप्पा जैसे दिग्गज नेताओं को राज्यों की राजनीति से शक्तिविहीन किया गया है। साथ ही राजस्थान, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ में बहुमत मिलने के बावजूद इन नेताओं की उम्मीदों पर तुषारापात करते हुए जिस तरह नए चेहरों को सत्ता की कमान सौंपी गई, उसका संदेश साफ था कि चुनावी सफलता भी सत्ता की स्थायी गारंटी नहीं है।
- शिवराज को केंद्र में लाकर मंत्री बना दिया गया। रमन ठंडे बस्ते में हैं। वसुंधरा अब भी अपनी सियासी जमीन बचाने के लिए संघर्ष कर रही है। इसके उलट, पुष्कर सिंह धामी जैसे नेता को चुनाव हारने के बावजूद न सिर्फ मुख्यमंत्री बनाया गया, बल्कि उन्हें राजनीतिक रूप से स्थापित होने का लगातार मौका दिया जा रहा है।

राजनीति का केंद्रीयकरण... इस पूरी प्रक्रिया ने भाजपा को एक बार फिर राजनीति के केंद्रीयकरण वाली यानी "आलाकमान पार्टी" बना दिया है, जबकि भाजपा इसी सियासी केंद्रीयकरण को मुद्दा बनाते हुए कांग्रेस नेतृत्व को पानी पी-पीकर कोसती रही है। कांग्रेस दुर्दिनों में है तो भाजपा के फैसले अब मोदी-शाह के इर्दगिर्द केंद्रित हैं। भाजपा के पैतृक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की पारंपरिक परामर्श भूमिका भी तुलनात्मक रूप से सीमित हो गई है। नितिन नवीन का चयन भी इसी बदलाव की ओर इशारा करता है। वे न तो आरएसएस के सीधे पसंदीदा हैं, न किसी बड़े नेता के प्रतिनिधि। हालांकि आरएसएस के लिए भी इस नियुक्ति में एक संतोष हो सकता है कि 45 से 55 वर्ष की उम्र के बीच, साफ छवि वाला, गैर-विवादित नेता शीर्ष पर पहुंचा है।

नितिन के लिए भी चुनौती

- नितिन नवीन के लिए भी भाजपा नेतृत्व या यूं कहें कि मोदी-शाह की रणनीति के अनुरूप चलना दुधारू तलवार पर चलने से कम नहीं है। हालांकि वे अब निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, लेकिन स्वतंत्र रूप से फैसले कर पाना उनके लिए किसी चुनौती से कम नहीं होगा। पहली चुनौती तो उन्हें अपनी संगठनात्मक टीम खड़ी करने के दौरान ही झेलनी पड़ सकती है। अगर वे सिर्फ मौजूदा ढांचे को आगे बढ़ाते हैं, तो कहा जाएगा कि वे रिमोट की तरह ही काम कर रहे हैं। ऐसे में पहले तो उम्र में बड़े और अनुभवी लोगों को अपनी टीम में जोड़ना उनके लिए मुश्किल भरा होगा और जोड़ भी लेते हैं तो सामंजस्य में दिक्कत आ सकती है। खुद पार्टी के वरिष्ठ नेता मानते हैं कि 140 करोड़ की आबादी वाले देश की सत्ता चलाने वाली पार्टी पूरी तरह नई टीम के भरोसे नहीं चल सकती। अनुभव और ऊर्जा—दोनों चाहिए।
- नितिन नवीन फिलहाल मोदी-शाह की छत्रछाया में हैं। उस से निकलकर अपनी पहचान बनाना आसान नहीं होगा, खासकर उस पार्टी में, जहां फैसले ऊपर से नीचे आते हैं। मोदी युग की भाजपा में यही नई कसौटी है। और, शायद यही इस पूरी कवायद का सार भी है कि चेहरे बदलते रहेंगे, सत्ता घूमती रहेगी, लेकिन नियंत्रण एक ही केंद्र में रहेगा।

उम्र की सीमा हो...

भाजपा के मुख्यमंत्री चयन का विश्लेषण करें तो एक स्पष्ट पैटर्न उभरता है। अभी भाजपा 14 राज्यों में सत्ता में है। इनमें से केवल पांच मुख्यमंत्री शपथ ग्रहण के समय 55 वर्ष से अधिक आयु के थे। शेष 9 मुख्यमंत्री 55 वर्ष से कम उम्र के थे। पिछले चार वर्षों में भाजपा मुख्यमंत्रियों की औसत शपथ ग्रहण आयु 54 वर्ष रही है। भारतीय राजनीति के परंपरागत मानकों में यह अपेक्षाकृत कम मानी जाएगी, जहां मुख्यमंत्री अक्सर अपने राजनीतिक जीवन के उत्तरार्ध में शीर्ष पद तक पहुंचते रहे हैं।

55 से अधिक उम्र वाले मुख्यमंत्री (5)

मानिक साहा, त्रिपुरा (70), भूपेंद्र पटेल, गुजरात (60), विष्णु देव साय, छत्तीसगढ़ (59), मोहन यादव, मध्य प्रदेश (58) और भजनलाल शर्मा, राजस्थान (56)

55 से कम उम्र वाले मुख्यमंत्री (9)

पेमा खांडू, अरुणाचल प्रदेश (44), हिमंत बिस्वा सरमा, असम (52), रेखा गुप्ता, दिल्ली (50), गोवा प्रमोद सांवत (48), नायबसिंह सैनी, हरियाणा (54), देवेन्द्र फड़नवीस, महाराष्ट्र (54), मोहन मांझी, ओडिशा (52), योगी आदित्यनाथ, उत्तर प्रदेश (49), पुष्करसिंह धामी उत्तराखंड (46)

केंद्रीय मंत्रिमंडल

21 मंत्री 55 वर्ष से अधिक उम्र के
केवल 5 मंत्री 55 वर्ष से कम उम्र के
मंत्रिमंडल की औसत आयु 59 वर्ष

सबसे वरिष्ठ मंत्री राव इंद्रजीत सिंह (74 वर्ष)
सबसे युवा मंत्री रक्षा निखिल खडसे (37 वर्ष)

प्रदेश अध्यक्ष

20 राज्य अध्यक्षों की उम्र 55 वर्ष से अधिक
14 राज्य अध्यक्ष 55 वर्ष से कम उम्र के
प्रदेशाध्यक्षों की औसत आयु 58 वर्ष

एसआईआर प्रक्रिया पर उठते सवाल और लोकतंत्र की चिंता

लोकमत ही सर्वोच्च

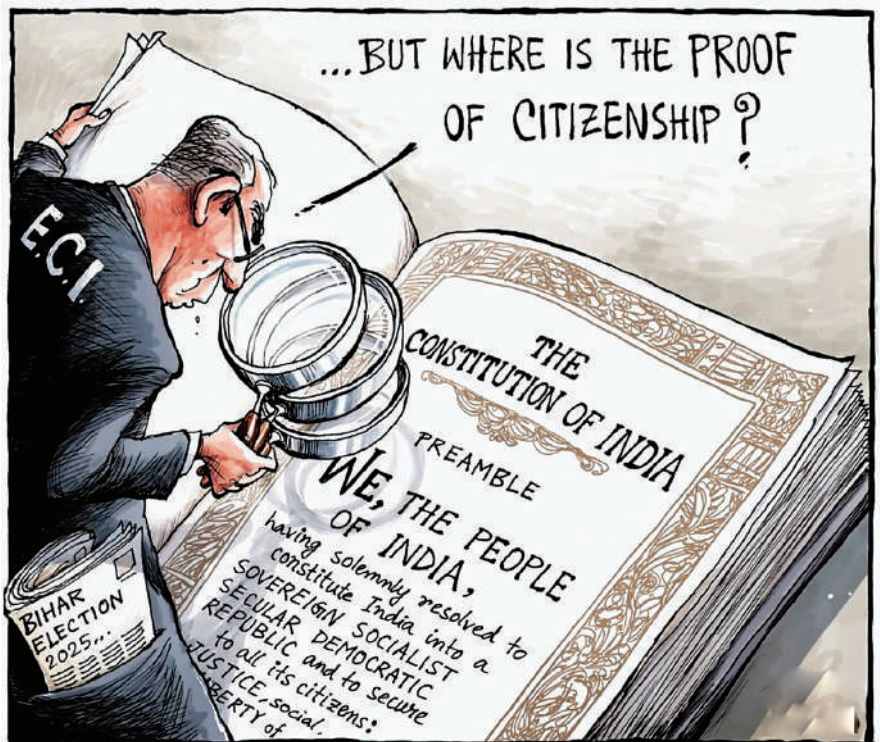
मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर पर देशभर में विवाद गहराता जा रहा है। विपक्ष, सामाजिक कार्यकर्ता और सुप्रीम कोर्ट चुनाव आयोग की भूमिका पर सवाल उठा रहे हैं। क्या लोकतंत्र की जड़ें कमजोर हो रही हैं?



राधा रमण बरिष्ठ पत्रकार

इस समय दो राय नहीं कि समय के साथ मतदाता पहचान पत्र (वोटर लिस्ट) में गड़बड़ियां हो जाती हैं। इसके वाजिब कारण भी होते हैं। किसी व्यक्ति का नाम दो जगहों की मतदाता सूची में दर्ज हो जाता है। किसी व्यक्ति की मृत्यु के वर्षों बाद भी मतदाता सूची में नाम बना रहता है। कई बार तो विदेश की नागरिकता ले लेने के बावजूद व्यक्ति का नाम उसके गांव की मतदाता सूची में दर्ज रह जाता है। इसलिए 1952 से सरकारों ने एसआईआर यानी स्पेशल इंटेन्सिव रिवीजन (विशेष गहन पुनरीक्षण) की प्रक्रिया शुरू की थी। इसका उद्देश्य मतदाता सूची से मृत व्यक्तियों, दो जगह मतदाता सूची में दर्ज मतदाताओं का नाम एक जगह से हटाने यानी मतदाता सूचियों का शुद्धिकरण करना था। कुछ वर्षों तक तो हर चुनाव के पहले एसआईआर किया जाता था लेकिन बीच में कई वर्षों तक नहीं भी किया गया। ऐसा अपने देश में चुनावी प्रक्रिया लगातार जारी रहने के कारण किया गया।

भारत एक विशाल लोकतांत्रिक देश है। यहां एक साल में कई राज्यों में चुनाव होते रहते हैं, जबकि चुनाव कार्य में लगे कर्मचारियों की संख्या सीमित है। यह सही है कि साल 2003-2004 के बाद एसआईआर का काम बंद रहा। लेकिन पिछले साल बिहार विधानसभा चुनाव से पहले जब चुनाव आयोग ने राज्य में एसआईआर कराया तो करीब 69 लाख मतदाताओं की संख्या घट गई। इससे उत्साहित चुनाव आयोग ने देश के 12 राज्यों उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, गुजरात, गोवा, तमिलनाडु, पुडुचेरी, केरल, लक्षद्वीप और अंडमान निकोबार में एसआईआर की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इसके लिए मतदाताओं से जरूरी कागजात मांगे जा रहे हैं।



एसआईआर के तहत जरूरी कागजात

चुनाव आयोग ने बिहार विधानसभा चुनाव से पहले एसआईआर के लिए कुल 11 दस्तावेज वैध माने थे। लेकिन सुप्रीम कोर्ट के दखल के बाद आधार कार्ड को भी उसमें जोड़ दिया है। इसी के आदेश में जिन दस्तावेजों को जरूरी माना गया है, वे हैं –

1. सरकारी कर्मचारी के मामले में पहचान पत्र या पेंशन के दस्तावेज
2. सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी जन्म प्रमाण-पत्र
3. किसी सरकारी या सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन द्वारा जारी पहचान-पत्र जो 1989 से पहले जारी किया गया हो
4. स्कूल से जारी 11वीं का प्रमाण-पत्र, विश्वविद्यालय अथवा शैक्षणिक संस्थान से जारी प्रमाण-पत्र
5. स्थायी निवास प्रमाण-पत्र
6. पासपोर्ट
7. एससी, एसटी और ओबीसी के मतदाताओं के लिए जाति प्रमाण-पत्र
8. वन अधिकार प्रमाण-पत्र
9. सरकार द्वारा आवंटित भूमि अथवा भवन का आवंटन प्रमाण-पत्र
10. राज्य सरकार अथवा स्थानीय सरकारी निकाय द्वारा जारी परिवार रजिस्टर
11. राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (जहां लागू हो) और
12. आधार कार्ड

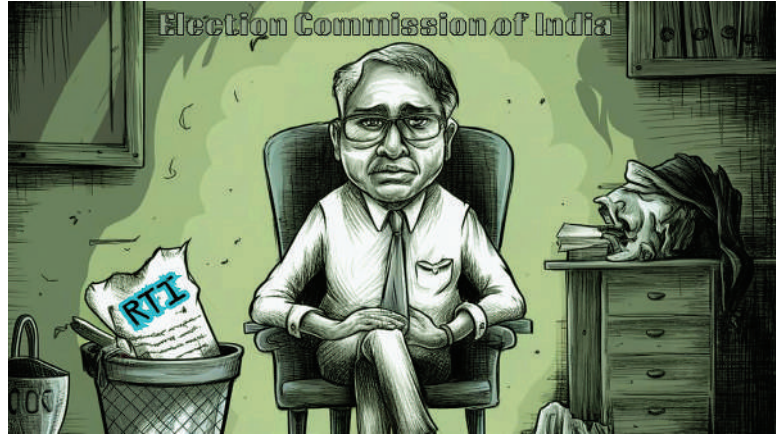
चुनाव आयोग का कहना है कि इनमें से कोई दस्तावेज होने पर और मतदाता की आयु एक जनवरी 2026 तक 18 वर्ष होने पर मतदाता सूची में जोड़ा जाएगा। यही नहीं जिस मतदाता का नाम 2003 की मतदाता सूची में दर्ज होगा, उसे कोई अतिरिक्त कागज नहीं देना होगा। आयोग ने यह भी कहा है कि पिछले एसआईआर के बाद अगर किसी मतदाता ने अपने नाम में बदलाव किया है तो उसे उसका प्रमाण-पत्र देना अनिवार्य होगा। चुनाव आयोग ने एसआईआर वाले राज्यों के बूथ लेवल अफसर (बीएलओ) को प्रत्येक मतदाताओं के पास कम से कम तीन बार जाने का निर्देश दिया है। साथ ही यह भी सुविधा दी है कि मतदाता चाहें तो ऑनलाइन भी एसआईआर फॉर्म भर कर जमा करा सकते हैं।

... तो फिर विवाद किस बात का

हालांकि, विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की इस कवायद को केवल संदेह की दृष्टि से देखना भी उचित नहीं होगा। राष्ट्रीय सुरक्षा और चुनावी शुचिता के लिहाज से यह प्रक्रिया अपरिहार्य है। लोकतंत्र में 'एक नागरिक, एक मत' का सिद्धांत तभी सार्थक है जब मतदाता सूची पूरी तरह पारदर्शी और त्रुटिहीन हो। पिछले दशकों में वोट बैंक की राजनीति के चलते जिस तरह से बेनामी मतदाताओं और अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों के नाम मतदाता सूची में शामिल होने के आरोप लगते रहे हैं, उनका निराकरण करना किसी भी सजग सरकार और संवैधानिक संस्था की प्राथमिकता होनी चाहिए। यदि पिछली सरकारों की कार्यशैली या उदासीनता के कारण मतदाता सूची में कृत्रिम विस्तार हुआ था, तो वर्तमान में डिजिटल सत्यापन और गहन पुनरीक्षण के जरिए उसे दुरुस्त करना राष्ट्रहित में उठाया गया एक कड़ा लेकिन जरूरी कदम माना जा सकता है। शुद्ध मतदाता सूची न केवल फर्जी मतदान को रोकती है, बल्कि देश के संसाधनों पर वास्तविक नागरिकों के हक को भी सुरक्षित करती है।

लेकिन, गंभीर प्रश्न तब खड़े होते हैं जब इस आवश्यक प्रक्रिया को लागू करने में भारी विसंगतियां और जल्दबाजी दिखाई देती है। चुनाव आयोग ने बिहार विधानसभा चुनाव से ठीक पहले एसआईआर कराया था, उसमें कई गड़बड़ियां देखने को मिली थीं। बिहार में जिस समय एसआईआर कराया जा रहा था, उस समय आधे से ज्यादा बिहार बाढ़ से बेहाल था। बीएलओ मतदाताओं तक नहीं पहुंच पाए थे। इससे करीब 69 लाख मतदाताओं का नाम कट गया था। कई जगहों से वर्षों पूर्व मृत लोगों के नाम भी मतदाता सूची में दर्ज थे, उन्हें हटाया नहीं जा सका है। बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की छप्परफाड़ जीत में अन्य कारणों के अलावा एसआईआर को भी बड़ी वजह माना जा रहा है। अब 12 राज्यों में हो रहे एसआईआर में भी वही जल्दबाजी दिखाई जा रही है। आयोग की मसौदा (प्रारंभिक) सूची में करीब 6.50 करोड़ मतदाताओं का नाम नहीं है। यही नहीं, काम के दबाव में 77 से अधिक बीएलओ ने आत्महत्या कर ली है। कई बीमार हैं तो कड़ियों की शादी टूट गई।

चुनाव आयोग की कार्यशैली पर सवाल



पिछले दिनों पश्चिम बंगाल में चुनाव आयोग की कार्यशैली को लेकर बवाल हो गया। दरअसल, उत्तर दिनाजपुर जिले के चाकुलिया थाना क्षेत्र के मतदाता एसआईआर के तहत सुनवाई नोटिस मिलने के बाद भड़क गए। उन्होंने सड़क जाम कर प्रदर्शन किया और फिर बीडीओ कार्यालय पर धावा बोल दिया। उनका कहना था कि उन्हें पहले 2003 के वोटर लिस्ट के आधार पर दस्तावेज देने को कहा गया था। उन्होंने दस्तावेज जमा करा दिए तो अब उनको सुनवाई के लिए नोटिस क्यों जारी किया जा रहा है? कई लोग शिक्षित नहीं हैं, उनके पास स्कूल के प्रमाण-पत्र नहीं हैं। वह कहां से दस्तावेज लाएं? कई युवा मैट्रिक की परीक्षा दे रहे हैं। उनके पास दस्तावेज के नाम पर परीक्षा का एडमिट कार्ड है, जिसे आयोग नहीं मान रहा है। कई बुजुर्ग ब्लॉक मुख्यालय तक आने में असमर्थ हैं। वे पहले से मतदाता रहे हैं। उन्हें सुनवाई के लिए क्यों बुलाया जा रहा है? मतदाताओं को जान-बूझकर परेशान किया जा रहा है। एसआईआर के कामों में सिर्फ पश्चिम बंगाल में ही बवाल नहीं है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, केरल सहित लगभग सभी राज्यों में गड़बड़ियों की शिकायतें लगातार मिल रही हैं। मृतकों के नाम भी मतदाता सूची में यथावत मिल रहे हैं। एक समुदाय विशेष के लोगों के नाम कटने की शिकायत सबसे ज्यादा हैं। चुनाव आयोग इसका समुचित जवाब नहीं दे पा रहा है।

अमर्त्य सेन और पूर्व नौसेना प्रमुख को नोटिस

चुनाव आयोग ने प्रख्यात अर्थशास्त्री नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन और पूर्व नौसेना प्रमुख एडमिरल अरुण प्रकाश को नोटिस भेजकर जवाब मांगा है। इसको लेकर आयोग की आलोचना भी हो रही है। अमर्त्य सेन को नोटिस जारी कर आयोग ने पूछा है कि गणना प्रपत्र में सेन और उनकी माताजी की आयु का अंतर 15 वर्ष से कम क्यों है? अमर्त्य सेन की आयु 92 वर्ष से अधिक है। अब चुनाव आयोग को कौन बताए कि सौ साल पहले अपने देश में बाल विवाह का चलन था। तब विवाह के लिए न्यूनतम आयु की प्रतिबद्धता नहीं थी। फिर भला कोई पुत्र कैसे बता सकता है कि उसकी माता ने कम उम्र में उसे पैदा क्यों और कैसे किया? सेन की माता का काफी पहले निधन हो चुका है। सेन अभी विदेश में हैं। जाहिर तौर पर वह आयोग के बुलावे पर तय समय पर नहीं आ पाएंगे। तो क्या अमर्त्य सेन का नाम मतदाता सूची से काट दिया जाएगा? अमर्त्य सेन के रिश्तेदार शांतभानु सेन ने चुनाव आयोग का नोटिस मिलने की पुष्टि की है। इसी तरह पूर्व नौसेना प्रमुख एडमिरल अरुण प्रकाश को भी चुनाव आयोग ने नोटिस भेजकर कहा था कि उनके गणना प्रपत्र में पिछली एसआईआर से जुड़ी जरूरी जानकारियां मसलन, विधानसभा क्षेत्र का नाम और नंबर, भाग संख्या और मतदाता सूची में क्रम संख्या नहीं भरी गई हैं। जब इस पर बवाल मचा तो आयोग ने अपनी भूल सुधार ली। सवाल उठता है कि ये काम तो बीएलओ का है। जब सबकुछ मतदाता ही भरेगा तो बीएलओ क्या करेगा? 81 वर्षीय अरुण प्रकाश फितलहाल गोवा में रह रहे हैं और वहीं के मतदाता हैं। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भूमिका के लिए वह वीर चक्र से सम्मानित हैं। ये तो कुछ बड़े नाम थे जिसकी चर्चा मीडिया में होने के बाद चुनाव अधिकारी हरकत में आए। लेकिन मसौदा (प्रारंभिक) मतदाता सूची से बड़े पैमाने पर (लगभग 6.50 करोड़) हटाए गए लोगों की फरियाद कौन सुनेगा?

विपक्ष का विरोध और सुप्रीम कोर्ट की सख्ती



विपक्ष पहले दिन से ही चुनाव आयोग पर वोट चोरी का आरोप लगाता रहा है। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी तो कई बार प्रेस कॉन्फ्रेंस कर चुनाव आयोग को घेर चुके हैं। उनके मुताबिक महाराष्ट्र, हरियाणा और कर्नाटक में वोट चोरी पकड़े जाने के बाद चुनाव आयोग अब एसआईआर के बहाने वोट चोरी का नया रास्ता निकाल रहा है। दिल्ली विधानसभा चुनाव के पहले आम आदमी पार्टी और बिहार विधानसभा चुनाव से पहले महागठबंधन के नेताओं ने भी कुछ इसी तरह के आरोप लगाए थे। अब समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव, पूर्व मुख्यमंत्री मायावती, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी समेत गैर एनडीए दलों के कई नेता चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठा रहे हैं। उनका कहना है कि बिहार से हटाए गए 69 लाख और चुनाव आयोग की मसौदा सूची के करीब साढ़े 6 करोड़ मतदाता आखिर कहाँ चले गए? बिहार के रोहतास जिले के सामाजिक कार्यकर्ता सूर्यकेश्वर सिंह आशंका जाहिर करते हुए कहते हैं कि कहीं हटाए गए मतदाता कोरोना काल के मृतक तो नहीं हैं? हालांकि सूर्यकेश्वर सिंह की बातों का कोई ठोस आधार नहीं है। ख़ास बात यह कि चुनाव आयोग भले ही विपक्ष के आरोपों पर खामोश रहता है, भाजपा के प्रवक्ता जरूर चुनाव आयोग के बचाव में दलीलें देने लगते हैं। इससे वोट चोरी का शक और बढ़ जाता है। विपक्ष के कई नेता और सामाजिक कार्यकर्ता चुनाव आयोग के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट भी गए हैं और सुप्रीम कोर्ट उसका संज्ञान ले रहा है। यहां तक की चुनाव आयोग की शक्तियों और रिटायरमेंट के बाद चुनाव आयुक्तों को उनके कार्यकाल के फैसलों पर अदालती सुनवाई न करने के सरकार के फैसले का भी सुप्रीम कोर्ट विश्लेषण कर रहा है। इस बीच, केरल में चुनाव आयोग की मसौदा सूची से हटाए गए 24 लाख मतदाताओं के मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने आयोग से मतदाताओं का नाम सार्वजनिक करने का निर्देश दिया है, ताकि हटाए गए मतदाता आपत्ति दर्ज करा सकें। अदालत ने आपत्ति दर्ज करने की समय सीमा दो सप्ताह बढ़ाने का भी निर्देश दिया है।

पिछले दिनों एसआईआर पर सुनवाई के दौरान चुनाव आयोग ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि उसका अधिकार क्षेत्र केवल मतदाता सूची में पंजीकरण के लिए नागरिकता तय करने तक सीमित है। आयोग न तो किसी व्यक्ति को देश से बाहर निकाल सकता है और न ही यह तय कर सकता है कि किसी के पास भारत में रहने के लिए वैध वीजा है या नहीं। आयोग मतदाता सूची एवं चुनाव से संबंधित मामलों में मूल प्राधिकारी के रूप में काम करता है। अगर कोई व्यक्ति किसी अन्य देश की नागरिकता हासिल करता है, तो इस संबंध में आयोग की राय राष्ट्रपति पर भी बाध्यकारी होती है। यह सुनवाई बिहार सहित 13 राज्यों में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर हो रही है, जिनमें चुनाव आयोग की शक्तियों, नागरिकता और मतदान से जुड़े संवैधानिक प्रश्न उठाए गए हैं।



बहरहाल, चुनाव आयोग एक महत्वपूर्ण संवैधानिक संस्था है और इसकी साख ही लोकतंत्र का आधार है। यह चिंताजनक है कि वर्तमान में इसकी कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे हैं। किसी भी लोकतंत्र के लिए संस्थाओं के प्रति जन-विश्वास अनिवार्य है। प्रक्रियागत जटिलताओं के कारण उपजा यह संदेह कि 'मतदाता की पात्रता का निर्धारण कितना पारदर्शी है', देशहित में नहीं कहा जा सकता। समय की मांग है कि आयोग तकनीक और मानवीय संवेदनशीलता के बीच बेहतर तालमेल बिठाकर अपनी पारदर्शिता को पुनः सिद्ध करे, ताकि निष्पक्षता केवल हो ही नहीं, बल्कि स्पष्ट रूप से दिखाई भी दे।

रिसोर्स वॉर की नई जंग-21वीं सदी की भू-राजनीति में तेल, गैस और समुद्री मार्गों की निष्पत्तिक भूमिका



वेनेजुएला और ईरान क्यों बने निशाना



संजीव पांडेय, वरिष्ठ पत्रकार

अमेरिकी विदेश नीति के केंद्र में लोकतंत्र नहीं बल्कि तेल, गैस और रणनीतिक समुद्री मार्ग हैं। वेनेजुएला और ईरान इसके प्रमुख उदाहरण हैं, जहां संसाधनों पर नियंत्रण के लिए वैश्विक शक्तियों का टकराव तेज होता जा रहा है।

21

वीं सदी में वैश्विक युद्धों का स्वरूप बदल चुका है। अब युद्ध केवल सीमाओं, सेनाओं या विचारधाराओं के लिए नहीं लड़े जाते, बल्कि वे प्राकृतिक संसाधनों, ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री व्यापारिक मार्गों और वैश्विक शक्ति-संतुलन के लिए लड़े जा रहे हैं। बीते दो महीनों में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की आक्रामक विदेश नीति ने इसी बदले हुए युग की झलक दुनिया के सामने रख दी है।

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी और उन्हें अमेरिकी जेल में डालने की घोषणा ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भूचाल ला दिया। इसके तुरंत बाद ट्रंप ने ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह अली खामेनेई को 'गंभीर परिणाम' भुगतने की चेतावनी दी और खुले तौर पर ईरान में सत्ता परिवर्तन की बात कही। ईरानी जनता से विद्रोह की अपील और संभावित सैन्य हमलों की धमकियों ने यह स्पष्ट कर दिया कि अमेरिका एक बार फिर शक्ति प्रदर्शन की राह पर है। इन सभी कदमों को 'लोकतंत्र बहाली' और 'तानाशाही के खिलाफ संघर्ष' के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। लेकिन वास्तविकता इससे कहीं अधिक कठोर है। डोनाल्ड ट्रंप की नजर लैटिन अमेरिका से लेकर पश्चिम एशिया तक फैले तेल, गैस और दुर्लभ खनिज संसाधनों पर है। यह संघर्ष लोकतंत्र का नहीं, बल्कि रिसोर्स वॉर का है।



पूरे इंडस्ट की जड़ है बड़ा तेल भंडार

डोनाल्ड ट्रंप की प्राथमिकताओं में वेनेजुएला 2017 में ही शामिल हो गया था, जब वे पहली बार अमेरिका के राष्ट्रपति बने। उसी समय से उन्होंने वेनेजुएला में सत्ता परिवर्तन की बात शुरू कर दी थी। ट्रंप प्रशासन ने वेनेजुएला को केवल एक क्षेत्रीय संकट के रूप में नहीं, बल्कि एक गंभीर रणनीतिक चुनौती के रूप में देखा। दूसरे कार्यकाल में सत्ता में लौटते ही ट्रंप प्रशासन ने निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी करवा दी। इसका औपचारिक कारण वेनेजुएला में लोकतंत्र की बहाली बताया गया, लेकिन यह महज एक राजनीतिक आवरण था। दरअसल मादुरो की गिरफ्तारी लैटिन अमेरिका में चल रहे उस ऐतिहासिक रिसोर्स वॉर का हिस्सा है, जिसकी जड़ें लगभग दो सौ वर्षों में फैली हुई हैं।

वेनेजुएला के पास दुनिया का सबसे बड़ा प्रमाणित तेल भंडार है। वेनेजुएला के पास करीब 300 अरब बैरल का तेल भंडार है जो तेल के बड़े उत्पादक देश सऊदी अरब, इराक, ईरान से कहीं ज्यादा है। ऐतिहासिक रूप से अमेरिका इस तेल पर अपना स्वाभाविक अधिकार समझता रहा है। दशकों तक अमेरिकी तेल कंपनियां वेनेजुएला के ऊर्जा क्षेत्र पर हावी रहीं और अमेरिकी रिफाइनरियां वेनेजुएला के भारी तेल पर निर्भर रहीं। 1990 के दशक में समाजवादी नेता ह्यूगो चावेज के सत्ता में आने के बाद यह समीकरण पूरी तरह बदल गया। चावेज ने वेनेजुएला के तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया और अमेरिकी कंपनियों को बाहर का रास्ता दिखाया। उनके बाद सत्ता में आए निकोलस मादुरो ने भी इसी नीति को आगे बढ़ाया। चावेज और मादुरो दोनों ने चीन और रूस के साथ रणनीतिक साझेदारी विकसित की। चीन ने वेनेजुएला के ऊर्जा क्षेत्र में भारी निवेश किया और वह उसका प्रमुख तेल खरीदार बन गया। रूस ने सैन्य और तकनीकी सहयोग बढ़ाया। इन संबंधों ने न केवल अमेरिका की ऊर्जा सुरक्षा को चुनौती दी, बल्कि लैटिन अमेरिका में उसके पारंपरिक प्रभुत्व को भी कमजोर किया। अमेरिका के लिए यह स्थिति अस्वीकार्य थी। ट्रंप प्रशासन ने वेनेजुएला में चीनी और रूसी प्रभाव को सीधे अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ दिया। डोनाल्ड ट्रंप का उद्देश्य स्पष्ट था। वो वेनेजुएला में अमेरिकी तेल कंपनियों की वापसी चाहते थे और क्षेत्र में अमेरिकी दबदबे की पुनर्स्थापना चाहते थे।



खुलकर सामने आई वैचारिक दुश्मनी

डोनाल्ड ट्रंप समाजवादी और कम्युनिस्ट विचारधाराओं के मुखर आलोचक रहे हैं। वेनेजुएला के समाजवादी नेतृत्व से उनकी वैचारिक दुश्मनी खुलकर सामने आई। ट्रंप लगातार वेनेजुएला के आर्थिक संकट के लिए समाजवाद को जिम्मेदार ठहराते रहे और इसी बहाने अमेरिका के भीतर डेमोक्रेटिक पार्टी के सोशल डेमोक्रेट नेताओं पर भी हमला करते रहे। एक सुनियोजित रणनीति के तहत ट्रंप प्रशासन ने निकोलस मादुरो की वैधता को नकार दिया और विपक्षी नेता जुआन गुएदो को वेनेजुएला का अंतरिम राष्ट्रपति के तौर पर मान्यता दे दी। इसके साथ ही कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए, जिनका उद्देश्य अर्थव्यवस्था को कमजोर करना, सेना और नौकरशाही में असंतोष फैलाना और सत्ता परिवर्तन के लिए जमीन तैयार करना था। इन प्रतिबंधों ने वेनेजुएला को गहरे मानवीय संकट में धकेल दिया। महंगाई बढ़ी, गरीबी फैली और लाखों लोग देश छोड़ने को मजबूर हुए। ट्रंप प्रशासन ने इस संकट को अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनाकर सत्ता परिवर्तन की राजनीति को और तेज किया।



ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर नाराजगी

ईरान के प्रति ट्रंप की नीति कोई अपवाद नहीं है। यह अमेरिका की उस पारंपरिक नीति का विस्तार है, जिसकी नींव 1979 की ईरानी क्रांति के बाद पड़ी थी। अमेरिका समर्थित शाह रजा पहलवी के तख्ता पलट के बाद से ही ईरान अमेरिका की नजरों में स्थायी शत्रु बन गया। डोनाल्ड ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल में ईरान के साथ हुए परमाणु समझौते को तोड़ दिया। दूसरे कार्यकाल में उन्होंने खुले तौर पर ईरान में शासन परिवर्तन की मांग शुरू कर दी। हाल के वर्षों में ईरान के परमाणु केंद्र फोर्दों पर हुए अमेरिकी हमले इसी आक्रामक नीति का हिस्सा हैं। अमेरिका ईरान का परमाणु कार्यक्रम का विरोध इसलिए भी करता रहा कि इसके विरोध में इजरायल और सऊदी अरब दोनों रहे। दोनों देशों ने ईरान के परमाणु कार्यक्रम को अपने लिए खतरा बताया। सऊदी अरब तो लगातार अपने परमाणु कार्यक्रम की शुरुआत करने की योजना बनाता नजर आया। ईरान पर ट्रंप की सख्ती का बड़ा कारण अमेरिकी डीप स्टेट की ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर नाराजगी है। 2018 में ट्रंप ने ईरान परमाणु समझौते को इतिहास का सबसे खराब समझौता बताते हुए उससे अमेरिका को बाहर निकाल लिया। ईरान विरोध की अमेरिकी नीति में इजराइल की सुरक्षा केंद्रीय भूमिका निभाती है।

ईरान की भौगोलिक स्थिति उसे असाधारण रणनीतिक शक्ति प्रदान करती है। वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हॉर्मुज जलडमरूमध्य पर ईरान का प्रभाव है। दुनिया के एक बड़े हिस्से का तेल इसी मार्ग से गुजरता है। अमेरिका को यह डर है कि यदि ईरान इस मार्ग को बाधित करता है, तो वैश्विक तेल कीमतों में भारी उछाल आएगा और आर्थिक अस्थिरता फैल जाएगी। इसी कारण अमेरिका दशकों से इस समुद्री मार्ग पर ईरानी नियंत्रण को कमजोर करने की कोशिश करता रहा है। प्रमुख समुद्री मार्ग पर ईरान के प्रभुत्व का विरोध स्थानीय ताकतें भी करती रही हैं। प्रमुख सुन्नी इस्लामिक देश शिया ईरान के इस प्रभुत्व को इसलिए भी विरोध करते रहे कि उन्हें डर है कि उनके तेल निर्यात को भी ईरान रोक सकता है क्योंकि प्रमुख समुद्री रूट पर ईरान का कब्जा है।

ईरान ने भी वेनेजुएला की तरह चीन और रूस के साथ अपने संबंध मजबूत किए। हालांकि ईरान एक समाजवादी देश होने के बजाए कट्टर इस्लामिक देश है, और चीन रूस के साथ कोई वैचारिक सहयोग नहीं है, लेकिन चीन और रूस दोनों ईरान को एशिया में महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार मानते रहे हैं। इसके मूल में ईरान का अमेरिका विरोध रहा है। चीन ने इसी रणनीति के तहत ईरान से संबंध विकसित किए। चीन उसका सबसे बड़ा तेल खरीदार बना। दूसरी तरफ रूस के साथ ईरान का सैन्य सहयोग बढ़ा। ट्रंप की नजर में यह एक उभरती हुई अमेरिका-विरोधी धुरी है।

वेनेजुएला और ईरान के खिलाफ ट्रंप की नीतियां यह स्पष्ट कर देती हैं कि 21वीं सदी में युद्ध का असली कारण लोकतंत्र नहीं, बल्कि संसाधन हैं। तेल, गैस, समुद्री मार्ग और वैश्विक वर्चस्व ही लड़ाई का मुख्य कारण है। यही आज की वैश्विक राजनीति की वास्तविक धुरी है। लड़ाई के केंद्र में रिसोर्स हैं और रिसोर्स के लिए वार हो रहे हैं। यह रिसोर्स वॉर आने वाले वर्षों में अंतरराष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय करेगा, जिसमें छोटे और संसाधन-समृद्ध देश सबसे बड़े निशाने पर होंगे।

सोना-चांदी, सेंसेक्स और राजनीति का बुखार



हरीश मलिक, लेखक और वरिष्ठ व्यंग्यकार

आ

जकल बुलियन एक्सचेंज में सोने-चांदी के भाव और स्टॉक मार्केट में शेयरों का संतुलन मानो छुट्टी जैसे मजे ले रहे हैं।

चांदी इतिहास की सीढ़ियां फांदती हुई चांद पर जाने को आतुर है। रोज सुबह का भाव देखकर खुद से ही कहती है, 'आज नहीं तो कल गोल्ड मेडल में भी चांदी का झंडा गाड़ दूंगी।' निवेशक दूरबीन लेकर खड़े हैं कि चांद दिखे न दिखे, चांदी जरूर दिख रही है। उधर सोना है, जो लोगों का 'सोना' उड़ाकर सूरज से आंखें चार किए बैठा है। उसकी चाल में अब पुरानी शालीनता नहीं रही। पहले वह तिजोरी में बैठकर चुपचाप दमकता रहता था। अब हर दिन सुखियों में आकर कहता है- 'मैं सुरक्षित निवेश से आगे निकलकर, अब फलानी पार्टी का अति महत्वाकांक्षी नेता भी हूँ।' इसलिए वह भी अब तिजोरी में बैठे साधु-सी तपस्या छोड़कर तेज रफ्तार योगी बन गया है।

रोज-ब-रोज सोने-चांदी के भाव ऐसे उछल रहे हैं मानो गुरुत्वाकर्षण ने इस्तीफा दे दिया हो। अखबारों की सुखियों की होड़ में सोना इतनी तेजी से चमक रहा है कि लोग धूप का चश्मा पहनकर ज्वैलरी शोरूम जा रहे हैं। हालांकि, ज्वैलरी शोरूम में ग्राहक कम और खिड़की पर चिपके दर्शक ज्यादा हैं, जो कह रहे हैं- 'भैया, खरीदना नहीं है, बस देखना है कि आज कितना आगे निकल गया।' दिलचस्प यह है कि आम आदमी दोनों को बड़े प्रेम से देखता है, लेकिन छूता किसी को नहीं। चांदी की कीमत सुनकर वह चांद की ओर देखता है और सोने का भाव देखकर सीधे सूरज को प्रणाम कर देता है कि भाई लोग तुम इनकी हेकड़ी के गवाह रहो।

इस बीच में बेचारा शेयर बाजार। सेंसेक्स बार-बार गोते लगाकर ऐसे डांस कर रहा है कि फिल्म धुरंधर वाला वायरल वीडियो भी शरमा जाए। समझ किसी को नहीं आ रहा, लेकिन देख सब रहे हैं। कभी ऊपर, कभी नीचे। मानो कह रहा हो, 'निवेश नहीं, मनोरंजन चाहिए तो टिकट मत काटो, स्क्रीन खोलो।' विशेषज्ञ टीवी पर माथा पकड़कर बैठते हैं, एंकर उत्साह से उछलते हैं और आम निवेशक सोचता है कि यह बाजार है या मोबाइल की ऊपर-नीचे होती रील? शेयर बाजार की ऊपर-नीचे होती सांसें ने निवेशकों को ऐसा योगाचार्य बना दिया है, जो हर मिनट अनुलोम-विलोम कर रहे हैं। ग्रीन दिखा तो लंबी श्वांस, रेड हुआ तो जोर का उच्छ्वास। सुबह पोर्टफोलियो देखकर दिल धक-धक करता

ममता का तुष्टिकरण का निवेश और मतदाता

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इन दिनों चुनावी ध्यान-योग में हैं। दरअसल, उनके ही एक पुराने सहयोगी और विधायक हुमायूँ कबीर ने ऐसी पसोपेश में फंसा दिया है, ना उगले बन रहा है और ना निगले। कबीर ने 'बाबरी मस्जिद' के नाम पर ईंट क्या रखी और मानो ममता के माथे पर राजनीति का पूरा संविधान रख दिया। अब समस्या यह नहीं कि मस्जिद बनेगी या नहीं, समस्या यह है कि मुख्यमंत्री बोलें तो क्या बोलें। वे विरोध करें, तो अल्पसंख्यक तुष्टिकरण का वर्षों का निवेश डूबने का खतरा है। अगर समर्थन करें, तो बहुसंख्यक मतदाता यह मान लेंगे कि राजनीति में इतिहास का मलबा उठाकर भविष्य की इमारत खड़ी की जा रही है। इसलिए ममता ने सबसे सुरक्षित रास्ता चुना है- चुप्पी। यही चुप्पी चुनावी ध्यान-योग है। टीएमसी कहती है कि यह व्यक्तिगत मामला है। सरकार कहती है कि कानून अपना काम करेगा और नेतृत्व कहता है कि हम सब देख रहे हैं। असल में कोई कुछ नहीं देख रहा, सब सिर्फ यह देख रहे हैं कि वोट किस तरफ गिरते हैं। यह वही राजनीति है जिसमें आग लगे तो कहा जाता है कि हमने माचिस नहीं जलाई, बस पेट्रोल रखा था। हुमायूँ कबीर ने मस्जिद की नींव नहीं रखी, उन्होंने ममता के राजनीतिक संतुलन की नींव हिला दी है।

ठाकरे बंधु, अब किसे बनाएं अपना बंधु

महाराष्ट्र की राजनीति में इन दिनों ठाकरे बंधु उस बेपैदे के लोटे की तरह हैं, जिसे ना घर की शेलफ पहचानती है और न मोहल्ले का हैंडपंप। मजबूरी के नाम पर बना यह गठबंधन अब मजबूरी से भी बाहर हो गया! उद्धव ठाकरे ने विचारधारा की ऐसी परिक्रमा की कि अंततः उन्हें खुद ही नहीं याद रहा कि वे किस देवता की आरती उतार रहे हैं। उधर राज ठाकरे मराठी मानुष का वही पुराना राग अलापते रहे, जिसे सुनकर मतदाता अब रिमोट से दूसरा चैनल लगा लेते हैं। बीएमसी, जो कभी शिवसेना की राजनीतिक तिजोरी



थी, अब इतिहास के उस अध्याय में दर्ज हो चुकी है, जिसे बच्चे परीक्षा के बाद फाड़ देते हैं।

सबसे दिलचस्प स्थिति यह है कि जो ठाकरे बंधु एक-दूसरे से दशकों तक दूरी बनाकर बैठे रहे, वे अब एक-दूसरे की शरण में हैं। दोनों को समझ नहीं

आ रहा कि आगे किसके चरण पकड़ें। कांग्रेस कहती है 'लाइन में लगिए', एनसीपी मुस्कुराती है और भाजपा दूर खड़ी यह तमाशा नोट कर रही है। सयाने कहते हैं कि सियासत में शरण हमेशा उसी को मिलती है जिसके पास कुछ देने को हो। ठाकरे बंधुओं के पास फिलहाल सिर्फ यादें हैं और यादें चुनाव नहीं जितातीं।

खरगे जी की हिचकी अटकी!

भाजपा अध्यक्ष की ताजपोशी में पीएम मोदी ने सहजता से कह दिया- 'नितिन नबीन मेरे बॉस हैं, मैं उनका कार्यकर्ता हूँ।' इस पर लोकतंत्र मुस्कराया, संगठन ने पीठ थपथपाई और कार्यकर्ताओं को लगा कि यहां तो कुर्सी भी संगठन के आगे बौनी है। उधर कांग्रेस मुख्यालय में पहुंचते-पहुंचते यह वाक्य गले में फंस गया। मल्लिकार्जुन खरगे जी ने चश्मा ठीक किया, गला साफ कर आवाज संभाली और बोले— 'हमारी पार्टी में ऐसा कुछ क्यों नहीं है?' कुर्सी के पीछे से आवाज आई यहां तो सर्वेसर्वा हाईकमान ही होता है। कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष भी ऐसे चुना जाता है जैसे मंदिर का पुजारी: नाम पहले तय, प्रक्रिया बाद में। यहां नेतृत्व ऊपर से टपकता है, नीचे सिर्फ श्रद्धा टपकती है। यह फर्क सिर्फ एक वाक्य का नहीं है। वह पूरी राजनीतिक संस्कृति का एक्स-रे है। एक तरफ संगठन, दूसरी तरफ संप्रभुता... और बीच में अटकी खरगे जी की हिचकी।

है, दोपहर तक उम्मीद का ड्रिप चढ़ता है और शाम होते-होते 'लॉन्ग टर्म' का दर्शन याद आ जाता है। मोबाइल हाथ में, नजर स्क्रीन पर और दिल भगवान भरोसे। क्योंकि बाजार जब छींकता है, तो निवेशक बुखार में चला जाता है। कोई मुनाफे में है तो डर रहा है, कोई घाटे में है तो धैर्य पर भाषण दे रहा है। कुल मिलाकर, निवेशक अब पैसा नहीं गिनता, वह अपनी धड़कनें गिनता है।

आम आदमी देख रहा है कि चांदी चांद का टिकट मांग रही है, सोना सूरज की किरणें नाप रहा है और

सेंसेक्स डांस फ्लोर पर है। धरती पर खड़ा आदमी बस तालियां बजा रहा है। क्योंकि इस शो में भाग लेने की उसकी हैसियत अब सिर्फ दर्शक बनने की रह गई है। बाजार के पंडित कह रहे हैं कि यह चमक विकास की है। आम आदमी कह रहा है कि यह चमक हमारी पहुंच से बाहर की है। चांदी चांद पर पहुंच जाए या सोना सूरज को पछाड़ दे। अपन तो वहीं के वहीं रहेंगे। फर्क बस इतना है कि धरती पर बैठे लोग केवल खबरों सोने-चांदी और शेयरों की खरीद-फरोख्त कर सकते हैं।



आईटी पार्क के बहाने तकनीक से कदमताल करता ऐतिहासिक शहर

अजमेर का डिजिटल अवतार

सूफी परंपरा और तीर्थ संस्कृति से पहचाने जाने वाले अजमेर में बनने वाला आईटी पार्क शहर को रोजगार, निवेश और तकनीकी नवाचार की नई दिशा देगा। यह परियोजना युवाओं के भविष्य की उड़ान बनेगी।



रमेश शर्मा वरिष्ठ पत्रकार

सूफी परंपरा और तीर्थ संस्कृति से पहचाना जाने वाला अजमेर अब केवल अतीत का शहर नहीं रहना चाहता। यह भविष्य की तकनीक से हाथ मिलाते हुए नए दौर में डिजिटल और तकनीकी नवाचार के मानचित्र पर उभरने के लिए तैयार है। राइजिंग राजस्थान इन्वेस्टर मीट के अंतर्गत राज्य सरकार की ओर से किए गए एमओयू के आधार पर अजमेर में प्रदेश का चौथा आईटी पार्क स्थापित किया जा रहा है।

अजमेर में शुरू होने वाला आईटी पार्क न केवल डिजिटल रोजगार के अवसर खोलेगा, बल्कि स्थानीय युवाओं के लिए वैश्विक स्तर की क्षमताओं, स्टार्टअप कल्चर और आर्थिक विकास का मार्ग खोलेगा। अगर इसे सुचारू रूप से लागू और पर्यावरण-संगत तरीके से विकसित किया जाए, तो अजमेर एक तकनीकी-औद्योगिक हब के रूप में राजस्थान और भारत के मानचित्र पर अपनी अलग पहचान बना सकता है।

यह प्रोजेक्ट शुरू होता है तो सॉफ्टवेयर विकास, कॉल सेंटर, बीपीओ, मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन, कंटेंट क्रिएशन और ई-कॉमर्स जैसी आईटी-आधारित सेवाओं के साथ-साथ कंप्यूटर, पेरिफेरल्स, नेटवर्किंग उपकरण, मोबाइल डिवाइस, दूरसंचार प्रणाली और इलेक्ट्रॉनिक्स सहित हार्डवेयर विनिर्माण क्षेत्रों में व्यवसायों में अजमेर राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी आईटी डेस्टिनेशन के रूप में उभरने की क्षमता हासिल कर सकता है। विशेष बात यह कि स्थानीय स्तर पर तकनीकी कौशल को बढ़ाने के लिए आईटी से संबंधित पाठ्यक्रम प्रदान करने वाले शैक्षणिक संस्थानों को भी इस पार्क के भीतर संचालित करने की अनुमति होगी। जयपुर, जोधपुर और उदयपुर के बाद यह राज्य का चौथा प्रमुख आईटी केंद्र होगा।

निवेशकों को लुभाने के लिए स्टांप ड्यूटी में छूट, जीएसटी सब्सिडी, महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन जैसी योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। इसे डवलप करने के लिए निवेशकों, उद्योगपतियों और स्टार्टअप प्रतिनिधियों आदि से सुझाव भी लिए गए हैं।



क्यों जरूरी है तकनीक से कदमताल?

आईटी पार्क किसी भी शहर की तस्वीर बदलने की क्षमता इसलिए रखते हैं क्योंकि वे:

- **आकर्षित करते हैं तकनीकी निवेश** : बड़े आईटी और डिजिटल कंपनियों को आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, नेटवर्क क्षमताओं और नियोजित प्लॉट उपलब्ध कराते हैं। इससे वे नई शाखाएं खोल सकते हैं।
- **स्थानीय प्रतिभा को अवसर** : इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस, डिजाइन और अन्य डिजिटल कौशल रखने वाले छात्रों को स्थानीय रूप से रोजगार मिलता है और शहर से बाहर पलायन कम होता है।
- **इकोसिस्टम का निर्माण** : छोटे-बड़े स्टार्टअप, को-वर्किंग स्पेस, इनक्यूबेशन सेंटर, बीपीओ, डेटा सेंटर, कॉर्पोरेट सर्विसेज आदि का एक तकनीकी क्लस्टर बनता है। यह आगे के निवेश को भी आकर्षित करता है।
- **बढ़ाते हैं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार** : केवल आईटी सेक्टर में ही नहीं, होटल, रिटेल, रेस्टोरेंट, परिवहन और आवास जैसे सेक्टर भी इससे लाभान्वित होते हैं।

रोजगार के रजत पथ पर किसे क्या?

राजस्थान सरकार और राजस्थान इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट एंड इन्वेस्टमेंट कॉर्पोरेशन (रीको) के प्रयासों से यह पार्क न सिर्फ आईटी सेक्टर को बल्कि अच्छी संख्या में औद्योगिक और डिजिटल रोजगार को जन्म देगा।

- **आईटी और बीपीओ/आईटी सेक्टर में अवसर** : कॉल सेंटर, सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, डिजिटल कंटेंट क्रिएशन, तकनीकी सहायता से जुड़े रोजगार शुरू हो पाएंगे।
- **हार्डवेयर और डेटा सेंटर उद्योग** : कंप्यूटर, मोबाइल, नेटवर्किंग इत्यादि के निर्माण और संचालन से जुड़े पद पर नौकरियां मिल सकती हैं।
- **गैर-तकनीकी पूरक रोजगार** : होटल, रेस्टोरेंट, रिटेल, परिवहन, सिक्यूरिटी, सुविधाओं के रख-रखाव आदि में रोजगार के अवसर खुलेंगे।
- **स्थानीय युवा स्किल डेवलपमेंट** : ग्रेजुएट्स और डिप्लोमा छात्रों के लिए कोर्स, प्रशिक्षण और उपयोगी कौशल बढ़ाने की संभावनाएं बढ़ेंगी।

आर्थिक और औद्योगिक विकास का ताना-बाना

आईटी पार्क केवल रोजगार तक सीमित नहीं, बल्कि यह अजमेर को एक औद्योगिक और तकनीकी हब के रूप में परिवर्तित कर सकता है। निवेशकों को छूट, सुविधाएं और डिजिटल नेटवर्क से जुड़ने का अवसर मिलेगा। नए व्यवसायों और स्टार्टअप्स को

आईटी पार्क के माध्यम से जैविक रूप से विकसित होने में मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय राजमार्ग, एयरपोर्ट के निकटता और उत्तर-भारत के बाजारों की पहुंच से अजमेर एक लोकेशन सेंट्रिक हब बन सकता है।

ये भी होंगी चुनौतियां

आईटी पार्क बड़े अवसर तो लाया ही है लेकिन इसका सही अर्थों में फायदा मिले, इसके लिए कई चुनौतियां भी होंगी तभी अजमेर के लिए यह आईटी पार्क संभावना से वास्तविकता की ओर कदम बढ़ा पाएगा। स्थानीय युवाओं को वैश्विक तकनीकी मांग के अनुकूल स्किलिंग और ट्रेनिंग पर ध्यान देना जरूरी है। केवल योजनाएं नहीं बल्कि निर्माण और कार्यान्वयन समय पर होना चाहिए।

छोटे व्यवसायों के अलावा बड़े नामी मल्टीनेशनल कंपनियों और बड़े प्लेटफॉर्म भी इस पार्क में निवेश करें, ताकि स्थायी इकोसिस्टम बने।

आईटी पार्क बनकर तैयार भी ही जाए, लेकिन असली प्रश्न यह है कि अजमेर का युवा इस परिवर्तन का भागीदार बनें, केवल दर्शक न रह जाए।

बजट के परिप्रेक्ष्य में- क्या मिलेगा?

पिछले केंद्रीय और राज्य बजट देखें तो समझ आता है कि उनमें डिजिटल और औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया गया है। इसलिए आगामी दोनों बजट (केंद्र और राज्य) में डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर, स्टार्टअप समर्थन, कौशल विकास और प्रोत्साहन पैकेज पर और भी फोकस की उम्मीद है।

- हाल के केंद्रीय बजट के तहत राजस्थान को औद्योगिक पार्क परियोजनाओं के लिए करोड़ों रुपए आवंटित किए गए। यह रोजगार के हजारों अवसर प्रदान करेंगे, ये उम्मीद है।
- राज्य की डेटा सेंटर नीति जैसे प्रोत्साहन, छूट और अनुदान योजनाएं डिजिटल निवेश को मजबूती देती हैं। इससे भविष्य में डेटा-सेंट्रिक कंपनियों को आकर्षित करना आसान होगा।
- आधुनिक डेटा सेंटर और तकनीकी वस्तुओं की मांग के बढ़ते परिदृश्य में, राजस्थान को डेटा सेंटर पॉलिसी-2025 जैसे प्रोत्साहन भी मिले हैं, जो राज्य को डेटा सेवा और क्लाउड कम्प्यूटिंग के केंद्र के रूप में विकसित करने का इरादा दर्शाती है।
- राजस्थान सरकार का लक्ष्य है कि राज्य को आईटी और उभरते डिजिटल सेक्टर का बड़ा केंद्र बनाया जाए। इससे लगभग 1.5 लाख से अधिक नौकरियां पैदा की जा सकती हैं। हालांकि यह संख्या पूरा होने के लिए पूरे राज्य में बड़े निवेश और कार्यान्वयन की आवश्यकता है। यह भी एक दीर्घकालिक लक्ष्य है।

ये होगा स्वरूप

- 27.55 एकड़ अजमेर आईटी पार्क का कुल क्षेत्रफल होगा।
- 45,310 वर्गमीटर भूमि औद्योगिक और वाणिज्यिक उपयोग के लिए उपलब्ध होगी।
- 37 इंडस्ट्रीज स्थापित होंगी। इनके लिए 250 से 3000 वर्गमीटर तक के भूखंड आईटी कारोबारियों के लिए उपलब्ध हैं। भूखण्ड लेने की प्रक्रिया ऑनलाइन है।
- 2026 में इसे तैयार करने का लक्ष्य है। डिजाइन जयपुर आईटी पार्क से अलग होगा।
- 5000 से अधिक अनुमानित रोजगार के अवसर सृजित होंगे।
- 23.65 करोड़ रुपए की राशि आईटी पार्क के लिए मंजूर की गई। भूमि का मुआवजा, समतलीकरण, डिमाकेशन, स्ट्रीट लाइट और अन्य विकास पर यह पैसा खर्च किया जा रहा है।
- आईटी कंपनियों के अलावा यहां होटल, पार्किंग, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स जैसी सुविधाएं भी विकसित की जाएंगी। इनके लिए अलग अलग आकार के प्लॉट उपलब्ध होंगे।



स्पीकर देवनानी के प्रयास

विधानसभा स्पीकर वासुदेव देवनानी ने आईटी पार्क की स्थापना के लिए ताकत लगाई है। उनका कहना है कि अजमेर आईटी पार्क नवाचार और विकास के लिए एक केंद्र के रूप में डिजाइन किया जा रहा है। यह पार्क आईटी कंपनियों, स्टार्टअप्स और उद्यमियों के लिए एक लॉन्च पैड के रूप में काम करेगा। रीको पार्क के भीतर सड़क, बिजली, ड्रेनेज जैसी बुनियादी जरूरतों के साथ आधारभूत विकास करेगा। देवनानी ने सड़क निर्माण, समतलीकरण, बाउंड्री वॉल, डिमाकेशन, पावर लाइन और बेसिक इन्फ्रास्ट्रक्चर से जुड़े कार्यों की समीक्षा भी की।

भले ही इसकी लोकेशन एयरपोर्ट और हाईवे के करीब है, आईटी पार्क सफलता की इबारत तभी लिख पाएगा जब राज्य सरकार बेहतर ढंग से कंपनियों को अग्रोच करे। युवाओं, उद्यमियों और निवेशकों सभी के लिए नए अवसरों के द्वार खोलने के लिए जरूरी है कि यहां बुनियादी ढांचे को बढ़ाया जाए और अनुकूल व्यावसायिक वातावरण बनाया जाए। स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने में ही इसकी सार्थकता है। आईटी पार्क की सफलता का पैमाना केवल इमारतें नहीं होंगी, बल्कि यह देखा जाएगा कि कितने अजमेरवासी अपने ही शहर में भविष्य देख पाए।

लोकेशन

- अजमेर शहर से सटे माकड़वाली गांव में राष्ट्रीय राजमार्ग से सिर्फ एक किमी दूर होगा पार्क।
- अन्तरराष्ट्रीय तीर्थ स्थल पुष्कर से मात्र 13 किलोमीटर की दूरी।
- किशनगढ़ एयरपोर्ट से मात्र 20 किलोमीटर दूर।

गुलाबी नहीं, गिनती में रंगा जयपुर

जयपुर अब आंखों से कम और जेब से ज्यादा देखा जाने लगा है। कभी गुलाबी रंग पहचान था, अब हर कोने पर चिपका टिकट उसका नया प्रतीक बन गया है। किले- महल आज भी इतिहास सुनाते हैं, पर पहले टिकट काउंटर अपनी दास्तान सुनाता है। आमेर में कदम रखते ही सवाल होता है देशी या विदेशी? जवाब.. नहीं, दरअसल दाम तय होता है। हवामहल में हवा अब सिर्फ नाम की है, असली चक्कर टिकट के दाम दिलाते हैं। जंतर-मंतर में सूर्य घड़ी नहीं, महंगाई की छाया नापी जा रही है। अल्बर्ट हॉल में इतिहास दीवारों पर टंगा है, लेकिन हाथ में थमी रसीद ज्यादा वजनी लगती है। पर्यटक पहले सेल्फी का एंगल नहीं, बजट का एंगल तलाशते हैं। भीड़ इतनी कि गाइड इतिहास को व्हाट्सएप संदेश की तरह संक्षेप में सुना देते हैं.. आगे भी लोग खड़े हैं। होटल खचाखच भरे हैं, अतिरिक्त स्टाफ मुस्कान ओढ़े ड्यूटी पर है और टैक्सियां ऐसे दुर्लभ हो गई हैं जैसे कोई संग्रहालय की वस्तु। जयपुर आज भी शाही है, इसमें शक नहीं। बस फर्क इतना है कि अब इस शाहीपन का आनंद लेने के लिए दिल नहीं, जेब का राजतिलक जरूरी हो गया है।

तीन पीढ़ी की अनूठी स्पर्धा

यह दिलचस्प वाक्या बालोतरा का है, जहां एक सुबह सर्द मौसम को मात देती रिश्तों की गर्माहट देखने को मिली। यहां दादा, पोता और पोती तीन पीढ़ियां एक साथ दौड़ पड़ीं, और उम्र को अंकों में गिनने वालों की सोच हांफती रह गई। जिन दादाओं को अक्सर 'अब आराम कीजिए' कहकर किनारे कर दिया जाता है,



वे पोता-पोती का हाथ थामे पूरे उत्साह से कदम बढ़ा रहे थे। दौड़ के दौरान तालियों और ठहाकों से माहौल गुंज उठा। किनारे खड़े वही लोग, जो रोज बुजुर्गों को नसीहतें देते हैं, आज जोश से उनका हौसला बढ़ा रहे थे। पोता-पोती आगे बढ़ने को उतावले थे, दादा उन्हें थामे संतुलन बनाते हुए चल रहे थे। यहां जीत से ज्यादा मायने साथ-साथ फिनिश लाइन तक पहुंचने के थे। बालोतरा की इस अनोखी स्पर्धा ने साफ संदेश दिया। बुजुर्ग

उम्र से नहीं, उपेक्षा से बूढ़े होते हैं। सम्मान और सहभागिता मिले, तो पीढ़ियां साथ दौड़ती हैं।

एगजॉस्ट में अटका चोर

कोटा में अब चोरी भी प्रवेश परीक्षा जैसी हो चली है। कटऑफ निकला तो भीतर, नहीं तो बाहर ही अटक गए। ताजा वायरल वीडियो में चोर महोदय किचन के एगजॉस्ट फैन को शॉर्टकट समझ बैठे। सोचा, रास्ता छोटा है तो मेहनत भी कम लगेगी। लेकिन नियति ने सिलेबस बदल दिया और चोर आधा अंदर, आधा बाहर लटकता रह गया। जैसे चोरी और योग का संयुक्त अभ्यास चल रहा हो। घरवाले खाटूश्यामजी के दर्शन से लौटे तो किचन में भगवान नहीं, भाग्य का चमत्कार दिख गया। शोर मचा, मोहल्ला जुटा और भीड़ देखते ही साथी चोर दोस्ती का पेपर छोड़कर फरार हो गया। उसे शायद पता था कि यहां पास होना मुश्किल है। सबसे रोचक बात यह कि चोरी की कार पर पुलिस का स्टीकर लगा था, यानि अपराध में भी पहचान जरूरी है। पुलिस ने बड़ी मशक्कत के बाद चोर को बाहर निकाला, वरना वह वहीं "स्थायी प्रदर्शन" बन जाता। कोटा ने फिर सिखाया.. गलत शॉर्टकट अक्सर एगजॉस्ट में ले जाकर अटका देते हैं, और मेहनत की जगह हंसी वायरल हो जाती है।



गुरुजी की ड्यूटी वही, जिम्मेदारी नई



कक्षा में अब गणित के सवाल कम, कुत्तों के कदम ज्यादा गिने जाएंगे। जो शिक्षक कल तक बच्चों को वर्णमाला सिखा रहे थे, आज उन्हें भौं-भौं प्रबंधन का अतिरिक्त प्रशिक्षण मिल गया है। शिक्षा विभाग का मानना है कि शिक्षक सर्वगुण संपन्न होते हैं। वे पढ़ा भी सकते हैं, पोषण भी बांट सकते हैं, ऑनलाइन हाजिरी भी भर सकते हैं और जरूरत पड़े तो कुत्तों को भी समझा-बुझा सकते हैं कि स्कूल का समय है, टहलने का नहीं। तीन-तीन महीने में निरीक्षण होगा। कुत्ते कम हुए या शिक्षक का धैर्य। चारदीवारी दुरुस्त रहे, गेट बंद रहे और अगर फिर भी कोई आवारा आ गया तो जिम्मेदारी तय होगी। सवाल बस इतना है कि पाठ्यक्रम में कुत्ता समन्वय कब जुड़ रहा है? शायद अगली परीक्षा में प्रश्न आए, आवारा कुत्तों से बचाव में शिक्षक की भूमिका पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। आखिर शिक्षा बहुआयामी है; पढ़ाना तो अब उसका एक छोटा सा हिस्सा भर रह गया है।

- बलवंत राज मेहता

कोचिंग नगरी से पर्यटन हब बनने की राह

नई उड़ान की ओर कोटा

कोचिंग की राजधानी कोटा अब पर्यटन, हेरिटेज और प्राकृतिक सौंदर्य के नए आयाम गढ़ रहा है। एयरपोर्ट, रिवर फ्रंट और मुकुंदरा रिजर्व जैसे प्रोजेक्ट शहर को नई पहचान दे रहे हैं।



अरविंद गुप्ता बरिष्ठ पत्रकार

चं

बल नदी किनारे बसा कोटा। इस शहर की आबोहवा में सफलता की खुशबू है। देश के विभिन्न राज्यों से यहां पढ़ाई के लिए आने वाले किशोर उम्र के हजारों बच्चे अपने लक्ष्य को लेकर दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। जिससे यह शहर जीवंत दिखाई देता है।

बीते तीन दशकों से शिक्षा और विद्यार्थियों से जुड़े कई तरह के छोटे-बड़े व्यवसाय कोटा की अर्थव्यवस्था को संभाले हुए हैं। देश के हर राज्य की संस्कृति की झलक यहां दिखाई देती है। पढ़ाई के लिए अच्छे स्कूल, कॉलेज, छह यूनिवर्सिटी, ट्रिपल आईटी एवं ब्रांड कोचिंग संस्थानों के साथ यहां के मेस व रेस्टोरेंट में भोजन, हॉस्टल में हर राज्य का पहनावा, भाषा, रहन-सहन और त्योहारों का उल्लास यहां की संस्कृति को समृद्ध बनाए हुए हैं।

इस साल कोचिंग की राजधानी कोटा को कुछ नई चुनौतियां मिली हैं। कभी औद्योगिक नगरी की पहचान रखने वाले इस शहर ने वक्त के साथ कई करवटें बदली हैं। जब कई बड़े और छोटे उद्योग बंद होने लगे तो पिछले तीन दशक से कोचिंग संस्थानों ने छोटे से शहर की इकॉनमी को नई ऊंचाइयां दी। गत तीन वर्षों में यहां बाहर से आने वाले कोचिंग विद्यार्थियों की संख्या धीरे-धीरे कम होने लगी तो कुछ बड़े कोचिंग संस्थानों का संचालन भी प्रभावित हुआ। इसका सीधा असर मुख्य बाजारों की रौनक पर दिखाई देने लगा है।



पर्यटन का नया अध्याय

लेकिन कोटा अपनी जिद पर फिर से खड़ा होना जानता है। यहां के नागरिकों ने बच्चों की नियमित काउंसलिंग को आगे रखते हुए विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों के विश्वास को हमेशा बनाए रखा। दूसरे फलक पर देखें तो कोटा ने विकास की राह पर चलते हुए पर्यटन का नया अध्याय प्रारंभ किया है।

दिल्ली-मुंबई ब्रॉडगेज रेलवे लाइन पर कोटा जंक्शन अपनी विशेष पहचान रखता है। नए वर्ष में कोटा जंक्शन और न्यू कोटा रेलवे स्टेशन का नया स्वरूप आकार ले लेगा। बूंदी रोड पर शंभूपुरा में प्रस्तावित ग्रीन फील्ड एयरपोर्ट का निर्माण कार्य प्रारंभ होने को है। एग्री उद्योगों के साथ ही ट्रिपल आईटी कोटा, पांच प्रमुख यूनिवर्सिटी, निजी एवं सरकारी मेडिकल व इंजीनियरिंग कॉलेज, बड़े कोचिंग संस्थान कोटा को छोटी काशी का ताज पहनाते हैं। कोटा साड़ी, कोटा स्टोन, कोटा कचौरी, कोटा कोचिंग, कोटा बैराज से इस शहर को वैश्विक पहचान मिली है।

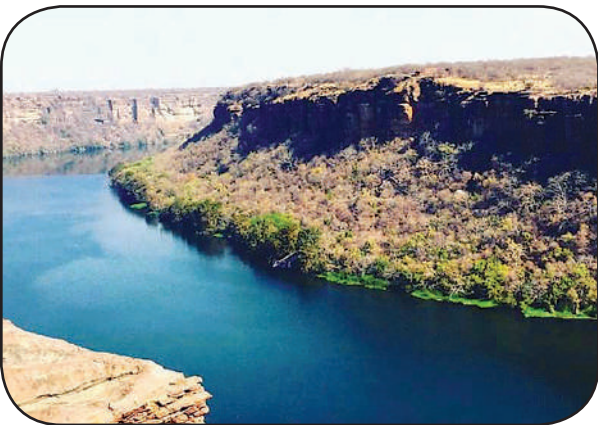


सैलानियों को हेरिटेज व प्राकृतिक सौंदर्य से लगाव



कोटा-बूंदी की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। यहां प्राचीन महलों, छतरियों और मंदिरों की अनूठी स्थापत्य कला, मूर्तिकला व चित्र शैली के साथ गढ़ पैलेस, म्यूजियम, किले, वन्यजीव एवं हस्तशिल्प आदि अलग पहचान रखते हैं। शहर में नदी के दोनों छोर पर विकसित विश्व स्तरीय चंबल रिवर फ्रंट, हरियाली से आच्छादित ऑक्सीजन सिटी पार्क, सेवन वंडर्स, जग मंदिर, चंबल गार्डन, यातायात पार्क, किला, म्यूजियम, चंद्रशेखर मठ, मथुराधीश मंदिर, खड़े गणेशजी मंदिर, आगरा गुरु द्वारा, हैंगिंग ब्रिज, अभेड़ा महल, बायोलॉजिकल पार्क, किशोर सागर, उदयपुरिया का बर्ड वॉचिंग सेंटर, कोटा बैराज आदि दर्शनीय स्थलों ने देश-विदेश के सैलानियों को आकर्षित किया है। हाल में जर्मनी के 14 सैलानियों के एक दल ने कोटा के दर्शनीय स्थलों को बहुत सराहा। वे चंबल रिवर फ्रंट पर विभिन्न घाटों, भव्य स्मारक, म्यूजिकल फाउंटन के साथ प्रतिदिन चंबल माता की आरती का मनोहारी दृश्य देख बहुत प्रभावित हुए।

मुकुंदरा रिजर्व में बड़ी वन्यजीवों की हलचल



कोटा-झालावाड़ राष्ट्रीय राजमार्ग पर मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व बाघ एवं पैंथर देखने के लिए रणथंभौर सेंचुरी के बाद दूसरा बड़ा आकर्षण बन गया है। यह सात नर-मादा बाघ के अलावा जंगल में विचरण करते भेड़िया, सियार, जंगली बिल्ली, लकड़बग्घा, रीछ, चीतल, नीलगाय, सहेली, मोर, बंदर, सांभर आदि वन्यजीवों के लिए अनुकूल शरणस्थली है।



विश्वप्रसिद्ध चीनी लेखिका जुंग चांग से विशेष बातचीत

तीन पीढ़ियां, एक सच

तीन पीढ़ियों की चीनी स्त्रियों के जीवन, पीड़ा और संघर्ष के जरिए यह बातचीत सत्ता, पितृसत्ता और इतिहास में दबाई गई स्त्री आवाज को सामने लाती है।



तीन पीढ़ियों की स्त्रियों की कहानी कहने की प्रेरणा आपको कहां से मिली?

जुंग चांग: इसकी शुरुआत मेरी मां से हुई। चीन में रहते हुए हम अपने जीवन की सच्ची बातें भी खुलकर नहीं कह सकते थे। डर केवल राजनीतिक नहीं था; वह पारिवारिक बातचीत तक में घुला हुआ था। इन्हीं सब हालात से जूझते हुए मैं 1978 में ब्रिटेन आ गई। वहां मेरी मां मुझसे पहली बार मिलने आईं, तब उन्होंने पहली बार अपनी मां और अपने जीवन की कहानियां मुझे सुनाईं। यह केवल पारिवारिक संवाद नहीं था, बल्कि स्त्री की उस आवाज का उभरना था जिसे पहली बार सुरक्षित माहौल मिला। वह केवल पारिवारिक स्मृतियां नहीं थीं, बल्कि तीन पीढ़ियों की स्त्रियों का अनकहा इतिहास था। तब मुझे लगा कि अगर यह सब नहीं लिखा गया, तो यह कहानी भी हमेशा के लिए इतिहास में खो जाएगी।

आपकी दादी के 'बंधे हुए पैरों' का विवरण स्त्री देह पर नियंत्रण की भयावहता दिखाता है। आपके लिए इसका क्या महत्व है?

जुंग चांग: मेरी दादी के पैर दो साल की उम्र में बांध दिए गए थे। स्त्रियों के छोटे छोटे पैरों को चीन में सुंदरता का मापदंड माना जाता था। लेकिन वास्तव में यह स्त्री देह पर पुरुष सत्ता द्वारा थोपा गया अनुशासन था। छोटी उम्र में ही लड़कियों के पैरों की उंगलियों को तलवे के नीचे मोड़कर पत्थरों से कुचलकर हड्डियां तोड़ी जाती थीं, ताकि पैर 'तीन इंच के सुनहरे कमल' जैसे दिखें। उन्हें नाप से छोटे जूतों को घंटों पहनाया जाता था ताकि पैर छोटे दिखें और चलने की क्षमता सीमित हो जाए। चीनी में इसे 'लोटस गेट' या 'स्वर्ण कमल की चाल' माना जाता था। असल में यह चाल सौंदर्य नहीं, विवशता थी। पैर बांधने के कारण स्त्री ठीक से कदम नहीं बढ़ा पाती थी, संतुलन बनाए रखने के लिए उसका शरीर हल्का आगे-पीछे झुकता था, जिससे चाल 'लहराती' दिखती थी। बस उसी चाल को हल्की हवा में झुकते हुए 'विलो के पेड़' (चीन में पाए जाने वाला पेड़) की तरह देखा जाता था। स्त्री के उसी दर्द और असहायता को पुरुष-दृष्टि ने 'कोमलता' और 'नारी सुकुमारता' का नाम दे दिया था। मैंने अपनी नानी को देखा था कि बाहर से लौटकर वे अपने पैरों को गरम पानी में भिगोती थीं। उनकी अंगूठे को छोड़कर बाकी उंगलियां तलवे के नीचे दबी रहती थीं। इससे उनकी चाल तो कोमल लगती थी, लेकिन वह जीवनभर के दर्द की चाल थी। मेरे लिए बचपन की यह स्मृति पितृ सत्तात्मक उस घटिया सोच की प्रतीक है जिसमें स्त्री से सहनशील होने की उम्मीद की जाती है।

वि

श्वप्रसिद्ध लेखिका जुंग चांग का नाम उस निर्भीक आवाज के लिए जाना जाता है जिसने चीन के बंद दरवाजों के पीछे छिपी सच्चाई को दुनिया के सामने रखा। 1952 में जन्मी जुंग चांग ने चीन की सांस्कृतिक क्रांति को नज़दीक से देखा, खेतों में काम किया और 1978 में ब्रिटेन में स्थायी

रूप से बस गई। उनकी लेखनी स्त्री अनुभव और इतिहास के बीच की नाजुक रेखा को उजागर करती है। चीन की सोच, महिलाओं की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और इतिहास के पन्नों से गायब कर दी गई स्त्री कथाओं पर **वरिष्ठ पत्रकार मणिमाला शर्मा** ने उनसे विस्तार से बातचीत की। प्रस्तुत हैं उस बातचीत के मुख्य अंश—



क्या आपको लगता है कि स्त्री के शरीर पर यह नियंत्रण अब अतीत की बात हो चुकी है?

जुंग चांग: नहीं, यह सोच केवल रूप बदल चुकी है। पहले शरीर को बांधा जाता था, पर आज एक आत्मनिर्भर और मजबूत महिला की आवाज को दबाया जाता है। पहले शरीर को तोड़ा जाता था, आज आत्मविश्वास को। पहले दर्द दिखाई देता था, आज उसे सामान्य और स्वाभाविक बना दिया गया है। पितृसत्ता के साथ अपने तरीके बदलती है, लेकिन उसका उद्देश्य वही रहता है और वो है महिलाओं पर अपना नियंत्रण बनाए रखना। मेरे लिए वो सब सिर्फ एक व्यक्तिगत स्मृति नहीं है, बल्कि उस दमनकारी सोच का प्रतीक है, जिसने महिलाओं को शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों में अपाहिज बनाया हुआ था।



'वाइल्ड स्वान्स: श्री डॉटर्स ऑफ चाइना' लिखने से आपके अपने परिवार को देखने का नज़रिया कैसे बदला?

जुंग चांग: लिखते हुए मुझे समझ में आया कि मेरे परिवार की कहानी कोई अपवाद नहीं है। वह पूरे चीन की कहानी है। अपमान के इस जीवन को मेरी नानी या मां ने ही नहीं, उनकी जैसी हज़ारों लाखों चीनी स्त्रियों ने भोगा था। मैंने खुद खेतों में और स्टील वर्कर के रूप में

काम किया। उस समय यह सब मुझे व्यक्तिगत संघर्ष लगता था, लेकिन लेखन की प्रक्रिया ने स्पष्ट किया कि यह अनुभव सामूहिक था, विशेष रूप से स्त्रियों के लिए। इसने मुझे अपने माता-पिता को, खासकर पिता के संघर्ष को नए सिरे से समझने का अवसर दिया।



ब्रिटेन में रहने से चीन के बारे में लिखने के आपके दृष्टिकोण पर क्या असर पड़ा?

जुंग चांग: चीन से दूरी ने मुझे स्पष्टता दी। चीन में डर केवल बोलने तक सीमित नहीं रहता; वह सोचने के तरीके को भी प्रभावित करता है। यूके में आकर मैंने पहली बार बिना भय के अपने आप से भी कई सवाल पूछे और उत्तर ढूंढकर उन्हें लिखने का साहस पाया। यह दूरी मुझे अधिक ईमानदार बनाती है। मैं चीन को न अपना आदर्श बनाकर देखती हूँ और न नफरत के साथ। लेकिन मैं उसे वैसा ही लिखती हूँ जैसा मैंने जिया है।



क्या आज का चीन सांस्कृतिक क्रांति की विरासत से ईमानदारी से निपट पाया है?

जुंग चांग: नहीं। सत्ता ने अब तक अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं किया है। सांस्कृतिक क्रांति पर खुली बातचीत आज भी संभव नहीं है। संरचना अब भी पितृसत्तात्मक और नियंत्रण-केंद्रित बनी हुई है। 2026

में भी चुप्पी को स्थिरता कहा जाता है और आज भी चीन में सवाल पूछना खतरे के बराबर माना जाता है।



माओ जेदोंग की जीवनी पर शोध करते समय सबसे बड़ी चुनौती क्या रही?

जुंग चांग: सबसे कठिन काम था तथ्यों तक पहुंचना। माओ के जीवन को लंबे समय तक मिथक की तरह प्रस्तुत किया गया। दस्तावेज छुपाए गए और गवाहों को चुप कराया गया। शोध के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि सत्ता किस तरह एक व्यक्ति की छवि को लाखों लोगों की पीड़ा से ऊपर रख देती है। तब मुझे महसूस हुआ कि इतिहास को समझने के लिए सत्ता की नहीं, बल्कि पीड़ितों की आवाज सुननी पड़ती है।



सत्य को लेकर आपका नज़रिया क्या है?

जुंग चांग: सत्य कोई दार्शनिक अवधारणा नहीं है। सत्य वह है, जो किसी स्त्री ने अपने जीवन और देह पर सहा है। अगर हम सत्य नहीं लिखेंगे, तो झूठ धीरे-धीरे परंपरा बन जाएगा और जब झूठ परंपरा बन जाए, तो दमन सामान्य लगने लगता है। इसलिए सच लिखना और सबके सामने लाना मेरे लिए किसी भी प्रकार का साहित्यिक प्रयोग नहीं है बल्कि यह मेरी लेखक के तौर पर नैतिक जिम्मेदारी है।



ST. RAJESHWAR SR. SEC. SCHOOL

Scholarship Drive

15th June, 2025
Scholarship offered for meritorious students.

Eligible Candidates
Class I - XI (All Stream)

ADMISSION
OPEN

PLAY GROUP TO XII
SCIENCE | ARTS | COMMERCE

कक्षा प्रथम से ग्यारहवीं के छात्र-छात्राओं के लिए **सुनहरा अवसर**

100% तक

स्काॅलरशिप

प्राप्त करने के लिए नियम -

• आवेदन करने के लिए विद्यालय से आवेदन फॉर्म प्राप्त कर भरे।
टॉप आने वाले प्रत्येक कक्षा से -

• प्रथम पुरस्कार विजेता को 100% छात्रवृत्ति
• द्वितीय पुरस्कार विजेता को 50% छात्रवृत्ति

• तृतीय पुरस्कार विजेता को 25% छात्रवृत्ति
• प्रत्येक प्रतिभागी को एक उपहार प्रदान किया जायेगा।

Note : Student will be tested from the syllabus completed in 2024-25

RSE & CBSE Curriculum
ENGLISH & HINDI MEDIUM
Exam Type : MCQ
Time : 10 AM - 11 AM

अभ्युदय बैच

A Quality Education Center

KEY FEATURES :

- PERSONAL ATTENTION TOWARDS STUDENTS.
- ALL SUBJECT UNDER ONE ROOF.
- EXPERT & EXPERIENCE FACULTY.
- REGULAR DOUBT CLEARANCE.
- DAILY ASSESSMENT & HOMEWORK.
- WEEKLY TEST & MORE BENEFITS.

OUR FACULTIES

PHYSICS | MATHS | CHEMISTRY | BIOLOGY | ENGLISH | HINDI
R. S. Sir P. K. Sir M. D. Sir V. P. Sir A. P. Sir

10th
RESULT
2025



NEW BRAHMPURI COLONY, BEHIND PUROHIT HOSTEL, RAJENDRA NAGAR JALORE

FOR MORE INFO: 916522044/9116682044

स्वास्थ्य संकट, महंगाई और आम आदमी की टूटती कमर बीमारी बना रही कर्जदार

इलाज अब सिर्फ स्वास्थ्य का सवाल नहीं रहा, यह आर्थिक तबाही का कारण बन चुका है। महंगी दवाएं, निजी अस्पतालों की मनमानी और कमजोर सरकारी ढांचे ने आम परिवारों को कर्ज के दलदल में धकेल दिया है।



RT ज्ञान चंद पाटनी, वरिष्ठ पत्रकार

भा रत में बीमारी अब सिर्फ स्वास्थ्य संकट मात्र नहीं है, यह आर्थिक आपदा भी बन चुकी है। इलाज का खर्च इतना अधिक है कि हर साल देश के लाखों लोग गरीबी रेखा के नीचे चले जाते हैं। हालत यह है कि आउट-ऑफ-पॉकेट यानी जेब से सीधे होने वाला खर्च कुल स्वास्थ्य व्यय का लगभग आधा है। यही वजह है कि गंभीर बीमारी की खबर सुनते ही मरीज ही नहीं पूरा परिवार सदमे में आ जाता है। इलाज के चक्कर में जमीन और गहने बिक रहे हैं, लोग कर्ज और क्रेडिट कार्ड के जाल में फंस रहे हैं। कई बार कर्ज का जुगाड़ नहीं होने के कारण इलाज अथूरा छोड़ कर मरीज अपने आपको भगवान भरोसे छोड़ देता है। विकसित देश का ख्वाब देखने वाले देश में यह स्थिति चिंताजनक और निराशाजनक है।

स्वास्थ्य व्यवस्था पर बढ़ता दबाव

असल में भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था दोहरे बोझ के नीचे दबी है। एक ओर मलेरिया, डेंगू, टीबी जैसे रोग अभी खत्म नहीं हुए हैं, दूसरी ओर मधुमेह, उच्च रक्तचाप, दिल की बीमारी और कैंसर जैसे गैर-संक्रामक रोग तेजी से बढ़ रहे हैं। अनुमान है कि हर वर्ष 50-60 लाख भारतीय इन गैर-संक्रामक रोगों से जान गंवा रहे हैं। ऐसे रोगों का इलाज काफी लंबा, थका देने वाला और महंगा होता है।



ग्रामीणों क्षेत्र में बड़ा संकट... तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो ग्रामीण भारत सबसे अधिक संकट में है। देश की आबादी का करीब 70 प्रतिशत हिस्सा गांवों में रहता है। जबकि स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे का करीब एक-तिहाई हिस्सा ही वहां मौजूद है। कई जिलों में प्रति हजार आबादी पर डॉक्टर और नर्सों की संख्या वैश्विक मानकों से आधी भी नहीं है। परिणाम यह होता है कि साधारण बुखार या प्रसव में भी लोगों को 50-100 किलोमीटर दूर जिला मुख्यालय जाना पड़ता है। वहां सरकारी अस्पतालों में भीड़ के कारण बेड नहीं मिलने और दवा उपलब्ध न होने से ऐसे परिवार मजबूरन किसी निजी अस्पताल तक पहुंचते हैं, लेकिन वहां के खर्च से उनकी आर्थिक सेहत भी जवाब दे जाती है।

धार्मिक संस्थाएं हो सकती हैं मददगार... सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों की संतुलित साझेदारी जरूरी है। सरकारी अस्पतालों को बुनियादी ढांचे, मानव संसाधन और दवाओं के लिए आवश्यक बजट से मजबूत करना होगा। साथ ही निजी अस्पतालों के लिए भी स्पष्ट नियम बनाए जाएं, जिससे उनकी मनमानी कम हो सके। कई स्थानों पर मिशनरी और ट्रस्ट आधारित अस्पतालों का नेटवर्क कम लागत पर गुणवत्तापूर्ण सेवा दे रहा है। ऐसे अस्पतालों को विशेष दर्जा देकर आयुष्मान और राज्य योजनाओं से अधिक मजबूती से जोड़ा जा सकता है। केरल में मिशनरी अस्पतालों ने बहुत अच्छा काम किया है। इन अस्पतालों की तर्ज पर सभी धर्मों के लोग अस्पताल चलाने के लिए आगे आए तो हालात सुधर सकते हैं क्योंकि ऐसे अस्पताल मुनाफे के लिए नहीं सेवा के लिए चलाए जाएंगे।

महंगे इलाज की मार

महंगे इलाज की एक वजह दवाओं की ऊँची कीमतें और भारी जांच शुल्क तो है ही, जन औषधि केंद्रों के बाद भी जेनेरिक दवाओं की पहुंच सीमित है। अधिकांश मरीज अब भी ब्रांडेड दवाइयां खरीदने के लिए मजबूर हैं। प्राइवेट डायग्नोस्टिक सेंटरों में एमआरआई, सीटी स्कैन, एंडोस्कोपी जैसी जांचों का शुल्क बहुत ज्यादा है। निजी डॉक्टरों पर लक्ष्य पूरा करने का दबाव और कमीशन-आधारित रेफरल व्यवस्था ने भी इस बोझ को बढ़ाया है।

ऐसे हालात में परिवार दोहरी मार झेलता है। एक ओर जहां बीमार व्यक्ति काम करने की स्थिति में नहीं रहता, वहीं बीमारी का खर्च बढ़ने से परिवार की आर्थिक रीढ़ ही टूट जाती है। यहां तक की इस तरह की व्यस्तता के चलते परिवार के दूसरे सदस्यों की आजीविका भी प्रभावित होती है, जिससे आर्थिक संकट बढ़ जाता है। विषम आर्थिक हालात में कई बार लोग इलाज के बीच में ही हार मान लेते हैं, दवा अधूरी छोड़ देते हैं या सर्जरी टाल देते हैं।

सरकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की भूमिका

इस भयावह तस्वीर के बावजूद आशा की किरण खत्म नहीं हो जाती। सबसे पहली जरूरत सरकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को मजबूत करने की है। यदि गांव स्तर पर ही सरकारी अस्पताल में ब्लड प्रेशर, शुगर, टीबी, कैंसर-स्क्रीनिंग जैसी सेवाएं नियमित रूप से उपलब्ध हों और लोगों को शुरुआती अवस्था में बीमारी का पता चल जाए, तो मरीज की बीमारी जटिल नहीं होगी और वह महंगे इलाज से बच जाएगा। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में ही हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर चलाए जाएं, जहां दवा के साथ पोषण सलाह और मानसिक स्वास्थ्य परामर्श सब एक ही छत के नीचे मिलें। केरल जैसे राज्यों ने दिखाया है कि मजबूत प्राथमिक स्वास्थ्य नेटवर्क से शिशु मृत्यु दर और गंभीर बीमारियों पर खर्च भी घट सकता है।

केरल का स्वास्थ्य मॉडल... केरल स्वास्थ्य सूचकांकों में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाला राज्य है। जहां राजस्थान जैसे राज्यों में जिला अस्पताल तक बदहाली के शिकार हैं, वहीं वर्ष 2023 में केरल के जिला-स्तरीय सरकारी अस्पताल में किडनी का सफल प्रत्यारोपण किया गया था। यह भारत में अपनी तरह की पहली उपलब्धि थी। एर्नाकुलम स्थित जनरल हॉस्पिटल में 50 वर्षीय महिला ने अपने 28 वर्षीय बेटे को किडनी दान दी थी। वहां के सरकारी अस्पतालों में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा के साथ-साथ मिशनरी अस्पताल भी बेहतर काम कर रहे हैं। इसकी वजह से आम आदमी इलाज की आशा नहीं छोड़ता।

स्वास्थ्य बजट बढ़ाना जरूरी... यदि हम सचमुच बीमारी-जनित गरीबी को रोकना चाहते हैं, तो सार्वजनिक स्वास्थ्य बजट को शीघ्र सकल घरेलू उत्पाद के 2.5 प्रतिशत तक लाकर 6 प्रतिशत तक ले जाना होगा। इसके लिए तंबाकू, शराब और चीनी युक्त पेय पर विशेष स्वास्थ्य उपकर लगाकर एक समर्पित “राष्ट्रीय स्वास्थ्य फंड” बनाया जा सकता है। इस फंड का उपयोग प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के विकास, मुफ्त जेनेरिक दवाओं की आपूर्ति और गरीब मरीजों के लिए विशेष सहायता में किया जा सकता है।

टेलीमेडिसिन भी है महत्वपूर्ण... टेलीमेडिसिन भी कर्ज के बोझ को कम करने में अहम भूमिका निभा सकती है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मरीज अपने गांव से ही वीडियो कॉल के माध्यम से विशेषज्ञ डॉक्टर से सलाह ले सकें और स्थानीय केंद्र पर जरूरी जांच हो जाए, तो उन्हें हर बार शहर जाने का खर्च और दिन-भर की मजदूरी का नुकसान नहीं होगा। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत बने डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड का उपयोग कर डॉक्टर पूर्व उपचार और जांच देख सकते हैं, लेकिन यह कार्य गंभीरता से होना चाहिए। टेलीमेडिसिन को खानापूर्ति या दिखावटी इलाज का माध्यम नहीं बनाया जाना चाहिए।

बदलनी होगी मानसिकता और जीवनशैली



यह तो निश्चित है कि सुधार केवल ढांचे और पैसे से नहीं होगा, मानसिकता भी बदलनी होगी। यदि स्वास्थ्य को मौलिक अधिकार मानकर नीति बनाई जाए, तो सरकार, समाज और बाजार तीनों की प्राथमिकताएं बदलेंगी। स्वास्थ्य-शिक्षा, साफ पानी और स्वच्छता, प्रदूषण नियंत्रण के साथ तंबाकू और अल्कोहल पर सख्त नीति बने तो लोग बीमार कम होंगे। साथ ही इलाज के कारण गरीबी के दुष्चक्र में फंसने से भी एक हद तक बचाव होगा। लोगों को स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक करना होगा।

यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज का लक्ष्य

यदि नीतियों का फोकस प्राथमिक स्वास्थ्य, किफायती बीमा, मजबूत सार्वजनिक ढांचे और पारदर्शी निजी भागीदारी पर ईमानदारी से रखा जाए, तो आम आदमी का बजट नहीं बिगड़ेगा और आर्थिक बदहाली से बचा जा सकेगा। भारत ने वर्ष 2030 तक यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज का लक्ष्य बनाया है। इसके लिए देश की स्वास्थ्य प्रणाली का मजबूत ढांचा आवश्यक है। यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी आर्थिक बोझ के आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त हों। लोगों को चिकित्सा खर्च के कारण होने वाली निर्धनता से बचाने और 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने के लिए जरूरी है कि यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज का लक्ष्य पूरा हो। ऐसा अनुमान है कि 2050 तक लगभग हर पांचवां भारतीय 60 वर्ष या उससे अधिक आयु का हो सकता है। जाहिर है इससे स्वास्थ्य ढांचे पर दबाव बढ़ेगा। इसलिए सरकार को इस मोर्चे पर गंभीरता से काम करना होगा।

सरकार की सक्रियता नाकाफी... सरकार ने स्थिति में सुधार के लिए कुछ कदम जरूर उठाए हैं। आयुष्मान भारत के तहत पूरे देश में स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों यानी आयुष्मान आरोग्य मंदिरों का नेटवर्क बनाया जा रहा है। इनका उद्देश्य गांव-गांव तक प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाना है। माना जा रहा है कि इससे उच्च रक्तचाप और मधुमेह जैसी सामान्य जांचों की पहुंच ग्रामीणों तक होगी। साथ ही प्रसव और मातृ-शिशु देखभाल का काम भी ठीक होगा। इसी तरह ई-संजीवनी जैसे टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म पर करोड़ों ऑनलाइन परामर्श का दावा किया गया है। इससे मरीजों को कितना फायदा हुआ, इस बारे में अभी कोई डेटा नहीं है। जाहिर है, मरीजों को राहत देने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

बच्चों की मुस्कान छीन रहा है अदृश्य दबाव, समाज नहीं सुन पा रहा उनकी चुप्पी

बचपन का अदृश्य बोझ



डॉ. मधु वैनर्जी, वरिष्ठ पत्रकार

भारत में बच्चों और किशोरों में आत्महत्या के बढ़ते मामले सिर्फ आंकड़े नहीं, बल्कि उस मौन त्रासदी का संकेत हैं, जिसे हम समय रहते समझ नहीं पा रहे। अदृश्य अपेक्षाएं, तुलना, सोशल मीडिया, परिवारिक तनाव और कोचिंग का दबाव बच्चों से उनका बचपन छीन रहा है। अब जरूरी है कि समाज, परिवार और व्यवस्था मिलकर उन्हें भावनात्मक सुरक्षा का वास्तविक सहारा दें।



बच्चों में बढ़ती आत्महत्या आज एक ऐसी त्रासदी बन चुकी है जिसकी जड़ें हमारे घरों, स्कूलों और सामाजिक ढांचे तक फैली हुई हैं। भारत का बचपन खतरों के साये में है और इस बोझ का आकार इतना गहरा है कि वह दिखाई भी नहीं देता। स्कूल बैग का वजन जो दिखता है, उससे कहीं भारी वह दबाव है जो न पकड़ा जा सकता है न पहचाना। तुलना, डर, अवसाद और असफलता का भय बच्चों पर ऐसी अदृश्य जिम्मेदारियों का पहाड़ बनकर टूटता है, जिसे नए दौर में बच्चे खुद 'मिस्टर इंडिया ड्यूटी' कहते हैं। यानी वह ड्यूटी जो

दिखाई नहीं देती, पर हर दिन निभानी पड़ती है। यही मौन दबाव आज ऐसी खामोश त्रासदियों का कारण बन रहा है, जिन्हें पढ़कर हम केवल पछताते हैं।

भारत में बच्चों और किशोरों में आत्महत्या के मामले केवल बढ़ नहीं रहे, बल्कि खतरनाक स्तर पर पहुंच चुके हैं। 2023 में 13,892 छात्रों ने आत्महत्या की। यह संख्या केवल एक सांख्यिकीय तथ्य नहीं, बल्कि हमारे समाज, परिवार और व्यवस्था की विफलताओं का कठोर आईना है। ताजा घटनाएं बार-बार हमें झकझोरती हैं पर समाज हर बार सामान्य होकर आगे बढ़ जाता है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की रिपोर्ट बताती है कि 2023 में

छात्र आत्महत्याओं में वृद्धि पिछले एक दशक की तुलना में 65 प्रतिशत से अधिक है। बच्चों की आत्महत्या किसी एक कारण से नहीं होती। यह कई छोटे-छोटे मानसिक बोझों का संयुक्त भार है जो अंततः उन्हें तोड़ देता है। सबसे बड़ा बोझ शैक्षणिक दबाव है, जिसने बच्चों से उनका बचपन छीन लिया है। रैंक की दौड़ में धकेले गए बच्चे जब कहते हैं कि वे 'डर के मारे पढ़ते हैं', तो यह उन अदृश्य घावों का संकेत है जिन्हें हम अनदेखा करते रहते हैं। यह डर धीरे-धीरे अवसाद में बदलता है और बच्चा यह सोचने लगता है कि यदि वह यह बोझ नहीं उठा पाया तो उसके जीने का क्या अर्थ है।



कोचिंग संस्कृति ने इसे और गंभीर बनाया



सोशल मीडिया ने उनके मन पर एक नया दबाव डाल दिया है। तुलना की इस फैक्ट्री ने बच्चों में 'कमतर होने का डर' पैदा कर दिया है। दूसरों की चमकती तस्वीरों के बीच अपनी संघर्षभरी वास्तविकता उन्हें और अकेला कर देती है। लाइक कम आना, ऑनलाइन मजाक उड़ाया जाना या बॉडी शेमिंग जैसे अनुभव वयस्कों को तोड़ सकते हैं, तो एक बच्चे पर इसका क्या असर होता होगा, इसे समझना मुश्किल नहीं।

घर, जो सबसे सुरक्षित जगह होनी चाहिए, आज तनाव का केंद्र बन गया है। लड़ाई, आर्थिक दबाव, अनबन और अलगाव बच्चों की मानसिक सुरक्षा को भीतर तक हिला देते हैं। बच्चे जब खुद को घर की समस्याओं का कारण मानने लगते हैं, तब उनकी मासूम मानसिकता टूटने लगती है।

कोचिंग संस्कृति ने इस स्थिति को और गंभीर बना दिया है। 12 साल के बच्चे को 12 घंटे पढ़ने की बाध्यता क्या उसे इंसान बनाएगी या सिर्फ एक मशीन? आज बच्चे दो वर्गों में बांटे जा रहे हैं— टॉपर और फेलियर। यह टैगिंग मानसिक हिंसा बन चुकी है जिसकी चोट उनके भीतर जमा होती रहती है और कभी-कभी घातक रूप में फूटती है। सबसे बड़ी समस्या है संवाद की कमी। बच्चे बोलना चाहते हैं पर डरते हैं कि उन्हें जज किया जाएगा। वे अपने मन की बात भीतर ही भीतर जमा करते रहते हैं और वही चुप्पी कभी अंतिम चुप्पी बन जाती है।

नजरअंदाज किए जाने वाले संकेत

अक्सर माता-पिता और स्कूल उन संकेतों को नजरअंदाज कर देते हैं जो मदद की पुकार होते हैं। अचानक चुप हो जाना, दोस्तों से दूरी, पढ़ाई में रुचि कम होना, नींद या भूख में बदलाव, गुस्सा और बार-बार खुद को बेकार कहना— ये सब संकेत हैं कि बच्चा मदद चाहता है। वह कहना चाहता है कि कोई उसे सुने, समझे, थामे। पर अक्सर सुनने वाला कोई नहीं होता। 'मिस्टर इंडिया ड्यूटी' यानी वह अदृश्य बोझ जो बच्चे हर दिन उठाते हैं। खुश दिखो, परफेक्शन दिखाओ, परिवार को गर्व दिलाओ, गलती मत करो, कमजोर मत दिखो। यह अदृश्य ड्यूटी ही बच्चों को भीतर से कुचल देती है। जब यह भार सीमा से ज्यादा हो जाता है, बच्चा टूट जाता है।

समाधान एक दिशा में नहीं, चारों दिशाओं में खोजने होंगे। संवाद सबसे बड़ा उपचार है। हर दिन केवल दस मिनट बच्चे की भावनाओं पर बात की जाए तो यह समय जीवन बदल सकता है। तुलना खत्म की जाए क्योंकि बच्चा कोई मॉडल नंबर नहीं बल्कि भावनाओं वाला इंसान है। स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य और काउंसलिंग अनिवार्य हो। डिजिटल जीवन को संतुलित किया जाए और असफलता को सामान्य रूप में स्वीकार करवाया जाए।

बच्चों की आत्महत्या व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक असफलता है। बच्चे पढ़ाई, मोबाइल या कोचिंग के नंबर नहीं होते। वे भावनाओं, सपनों और डर के साथ जीते हुए इंसान हैं। यदि हम अब भी नहीं बदले तो आने वाली पीढ़ियां हमसे यही पूछेंगी कि जब हम टूट रहे थे तब आप कहाँ थे। क्योंकि बचपन एक बार खो जाए तो कभी लौटता नहीं।



डॉ. शोभा भंडारी कवि, लेखक

सजा लो अंजुमन खयालों की



आओ हम सब मिलकर सुंदर-रूहानी,
दिलकश खयालों की एक अंजुमन सजाते हैं,
दिल को चैन-ओ-सुकून दे,
ऐसे ख्वाबों की महफिल जमाते हैं।
शून्य और नफी का चर्चा बहुत होता है,
अब नुकसान नहीं, नफे पर ध्यान लगाते हैं।

अपयश, मानहानि, नाफरमानी से दूर,
लाभ और यश की अलख जगाते हैं,
गम और मुफलिसी के किस्से बहुत हो गये,
अब गम को गलाने की तरकीब लगाते हैं।
हिंसा की चर्चा कम से कम हो,
आओ अहिंसा का ऐसा परचम लहराते हैं।
आफताब की रौशनी सा प्रखर, और
मेहताब की चांदनी सा शीतल किरदार बन,
अपने मंसूबों का महल बनाते हैं,
जज्बातों और जुनून का जश्न मनाते हैं।

युवा शक्ति को दिग्भ्रमित करने वालों को,
एक तिरस्कार भरी फटकार लगाते हैं,
हमारी सभी फौजों ने अनुशासन बहुत सिखाया,
उन सभी को बाअदब सलाम फरमाते हैं।
जो सुशासन, नवाचार का मार्ग दिखलाये,
उसके इरादों को मजबूत करने का प्रण उठाते हैं।
जयहिंद और जयभारत के उद्घोष से,
इंकलाब का बिगुल बजाते हैं।



जय भाजपा, विजय भाजपा



सबका साथ, सबका विकास

केबिनेट मंत्री श्री अविनाश गहलोत की अनुशंसा पर जैतारण नगर पालिका क्षेत्र में बही विकास की गंगा



- पार्षद कंचन भाटी व पार्षद प्रतिनिधि बाबूलाल भाटी के प्रयास लाए रंग
- पार्षद श्रीमति कंचन भाटी ने सफलतम कार्यकाल के लिए मंत्री अविनाश गहलोत व जनता का जताया हार्दिक आभार



बाबूलाल भाटी
(भाजपा शहर महामंत्री, जैतारण)



कंचन भाटी
पार्षद, वार्ड संख्या-4, नगर पालिका
जैतारण (जिला ब्यावर)

पार्षद कंचन भाटी ने लगाई वार्ड संख्या- 4 में विकास कार्यों की जड़ी

श्री अविनाश गहलोत, कैबिनेट मंत्री, राजस्थान सरकार

जैतारण (ब्यावर)। राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के केबिनेट मंत्री श्री अविनाश गहलोत (जैतारण विधायक) की अनुशंसा पर ब्यावर जिले के जैतारण नगर पालिका के वार्ड संख्या 4 की पार्षद श्रीमति कंचन भाटी व पार्षद प्रतिनिधि श्री बाबूलाल भाटी के अथक प्रयासों से वार्ड संख्या 4 में लगी विकास कार्यों की जड़ी, करोड़ों रुपए के विकास कार्य करवाकर जनता को राहत पहुंचाई। जैतारण नगर पालिका की वार्ड संख्या 4 की पार्षद कंचन भाटी का 5 वर्षीय सफलतम कार्यकाल यादगार रहा। पार्षद प्रतिनिधि बाबूलाल भाटी वर्तमान में भाजपा शहर मंडल के महामंत्री पद पर कार्यरत हैं। बाबूलाल भाटी जैतारण माली समाज के कार्यकारिणी सदस्य भी हैं। वे समाज सेवा से जुड़े हुए हैं। जैतारण के समाज सेवा में हमेशा अग्रणी रहते हैं। श्रीमति कंचन भाटी भाजपा शहर महिला मोर्चा की उपाध्यक्ष पद पर भी कार्यरत हैं। जैतारण विधायक व कैबिनेट मंत्री श्री अविनाश गहलोत की अनुशंसा व प्रयासों से लगातार जैतारण में विकास की गंगा बह रही है। अपने कार्यकाल में करोड़ों रुपए लागत के विकास कार्य करवाए। अपने 5 साल के सफलतम कार्यकाल पर पार्षद कंचन भाटी व पार्षद प्रतिनिधि बाबूलाल भाटी ने मंत्री श्री अविनाश गहलोत व जनता का आभार व्यक्त किया है।

- जैतारण में राम बेरा से आगेवा बाईपास तक 2 करोड़ की सीसी रोड का निर्माण
- बेरा लुनायत पर 15 लाख रुपए लागत के सीसी चौक का निर्माण
- बेरा दूजेडीया पर 10 लाख रुपए के सीसी ब्लॉक लगवाएं
- 5 लाख रुपए लागत के बेरा आमलियाला पर सीसी रोड का निर्माण
- राम बेरा धाम पर सीसी ब्लॉक 9 लाख रुपए लागत के लगवाएं
- बेरा सेठारी बावड़ी पर 14 लाख रुपए के विकास कार्य (सीसी रोड)
- जैतारण फौजी चौराहा पर सोहन जी, किशन जी व मिटुजी फौजी की गली में 9 लाख रुपए की सीसी रोड का निर्माण
- वार्ड संख्या 4 में 5 लाख रुपए लागत की ट्यूबवेल खुदवाई
- बेरा निंबड़िया पर 10 लाख रुपए लागत की सीसी रोड का निर्माण
- राम धाम उचियाडा पर 6 लाख रुपए लागत की सीसी रोड का निर्माण
- बेरा खेड़ा री बावड़ी पर 3 लाख रुपए लागत के सीसी ब्लॉक लगवाएं
- 3 लाख रुपए लागत के बेरा रिवली व भरेत के माता जी मंदिर पर सीसी ब्लॉक लगवाएं
- जैतारण फौजी चौराहे पर गोलू जी भाटी व कालू जी भाटी के घर तक 4 लाख रुपए लागत की सीसी रोड का निर्माण
- वार्ड संख्या 4 में स्थित बेरों पर 24 घंटे सिटी जैसी बिजली की सुविधा
- खेड़ा री बावड़ी से बेरा रिवली-भरेत तक रोड लाइट सुविधा
- बेरा रूपायेल पर 12 लाख रुपए लागत का सीसी चौक निर्माण कार्य प्रगति पर
- बेरा मेड़तियाला पर 11 लाख रुपए लागत के सीसी चौक निर्माण कार्य प्रगति पर
- राम धाम उचियाडा पर 9 लाख रुपए लागत का सीसी चौक का निर्माण कार्य प्रगति पर

विश्व पटल पर छाई जैतारण की सीमेंट

राजस्थान के ब्यावर जिले का जैतारण क्षेत्र तेजी से सीमेंट हब के रूप में उभर रहा है। यहां बहुराष्ट्रीय सीमेंट कंपनियों के निवेश से रोजगार, बुनियादी ढांचे और भूमि मूल्यों में वृद्धि हुई है, वहीं सरकार को प्रतिवर्ष लगभग 150 करोड़ रुपये का राजस्व मिल रहा है। हालांकि स्थानीय रोजगार, प्रदूषण नियंत्रण और मजदूर हितों को लेकर मांगें भी सामने आ रही हैं।



चैनराज भाटी, वरिष्ठ पत्रकार

रा

जस्थान के ब्यावर जिले का जैतारण क्षेत्र आज तेजी से विश्व पटल पर एक सशक्त सीमेंट हब के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। कभी शांत और कृषि प्रधान माने जाने वाले इस इलाके ने अब औद्योगिक मानचित्र पर खास स्थान प्राप्त कर लिया है। बहुराष्ट्रीय सीमेंट कंपनियों के बड़े निवेश ने न केवल क्षेत्र की तस्वीर बदली है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी नई गति दी है।

जैतारण क्षेत्र में वर्तमान में चार बड़ी बहुराष्ट्रीय सीमेंट कंपनियों ने अपने प्लांट स्थापित किए हैं, जहां से देश के साथ-साथ विदेशों में भी सीमेंट की आपूर्ति की जा रही है। इन कंपनियों द्वारा करोड़ों डॉलर का निवेश किया गया है, जिसका सीधा असर क्षेत्र के विकास पर दिखाई दे रहा है।

सरकार को इन कंपनियों की खनन लीज से प्रतिवर्ष लगभग 150 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हो रहा है, जो राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण योगदान है।

जमीन उगल रही है चायना क्ले रूपी सोना

जैतारण क्षेत्र की सबसे बड़ी ताकत इसकी अपार खनिज संपदा है। यहां की जमीन में प्रचुर मात्रा में चायना क्ले पाया जाता है, जो सीमेंट निर्माण में एक अहम कच्चा माल है। यही कारण है कि प्रदेश में सर्वाधिक सीमेंट प्लांट अब इसी क्षेत्र में स्थापित हो रहे हैं। वर्तमान में रास में अंबुजा सीमेंट और बांगड़ श्री सीमेंट, टूकड़ा गांव में अल्ट्राटेक सीमेंट तथा निम्बोल में निरमेक्स कंपनी के प्लांट कार्यरत हैं। इन संयंत्रों से उत्पादित सीमेंट का निर्यात विदेशों तक किया जा रहा है।



बदली क्षेत्र की फिजा... एक साथ चार बड़े सीमेंट प्लांट लगने से जैतारण क्षेत्र की फिजा पूरी तरह बदल गई है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। सीमेंट उद्योग के विस्तार के साथ ही नए कस्बे और आवासीय कॉलोनियां बसने लगी हैं। होटल, ढाबे, ट्रांसपोर्ट, अस्पताल, मरम्मत कार्य और अन्य सहायक व्यवसायों को भी नया जीवन मिला है। इसके साथ-साथ खनिज गतिविधियों में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

स्थानीय रोजगार बना बड़ा मुद्दा... हालांकि औद्योगिक विकास से क्षेत्र को व्यापक लाभ हुआ है, लेकिन स्थानीय युवाओं को सीमेंट फैक्ट्रियों में प्राथमिकता के आधार पर रोजगार देने का मुद्दा लगातार उठता रहा है। लोगों का कहना है कि जिन संसाधनों पर उद्योग खड़े हैं, उनका पहला लाभ स्थानीय निवासियों को मिलना चाहिए। रोजगार में वरीयता को लेकर जनप्रतिनिधियों और प्रशासन से निरंतर मांग की जा रही है।

स्थानीय लोगों की प्रमुख मांगें

औद्योगिक विकास के साथ-साथ स्थानीय समाज की कुछ अहम मांगें भी सामने आई हैं—

- सीमेंट कंपनियों से होने वाले प्रदूषण से प्रभावित फसलों के लिए किसानों को उचित मुआवजा दिया जाए।
- सीमेंट संयंत्रों के आसपास की सड़कों की हालत में सुधार किया जाए।
- औद्योगिक हादसों में जान गंवाने वाले कर्मचारियों के परिजनों को समुचित मुआवजा मिले।
- सीमेंट उद्योग में कार्यरत मजदूरों के श्रम अधिकारों और सुरक्षा की प्रभावी रक्षा की जाए।

हर वर्ष 150 करोड़ का राजस्व



रविरूप सिंह गहलोत, एएमई, खनिज विभाग, जैतारण (ब्यावर)

■ खनिज विभाग, जैतारण खण्ड के अनुसार, क्षेत्र में स्थापित चारों सीमेंट प्लांटों से सरकार को हर साल करीब 150 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हो रहा है। खनिज विभाग के एएमई स्वरूप सिंह गहलोत के अनुसार, यह क्षेत्र भविष्य में और भी बड़े औद्योगिक निवेश का केंद्र बन सकता है, जिससे राज्य और स्थानीय स्तर पर विकास की संभावनाएं और मजबूत होंगी।

■ जैतारण क्षेत्र आज औद्योगिक प्रगति व आर्थिक बदलाव की नई कहानी लिख रहा है। जरूरत है विकास के इस सफर में स्थानीय हित, पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक संतुलन को समान महत्व की, ताकि प्रगति दीर्घकालिक व सर्वसमावेशी हो।

प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री के प्रयासों से प्रदेश लगातार बढ़ रहा है आगे

राजस्थान एक मिनरल प्रदेश है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के प्रयासों से लगातार नई औद्योगिक इकाइयां लग रही हैं। इसी क्रम में जैतारण का सीमेंट हब बनना गौरव की बात है। केंद्र व प्रदेश की भाजपा सरकार नीतियों के चलते प्रदेश लगातार औद्योगिक क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। जैतारण में सीमेंट इकाइयों के लगने से स्थानीय लोगों को रोजगार सहित आय बढ़ाने के स्रोतों में काफी फायदा पहुंच रहा है। भविष्य में इस दिशा में प्रदेश निरंतर प्रगति करता रहेगा।

— अविनाश गहलोत, कैबिनेट मंत्री, राजस्थान सरकार।



डिजिटल युग में पढ़ने और सीखने की बदलती मानसिकता

ज्ञान की नई उड़ान



बलवंत राज मेहरा, वरिष्ठ पत्रकार

अ

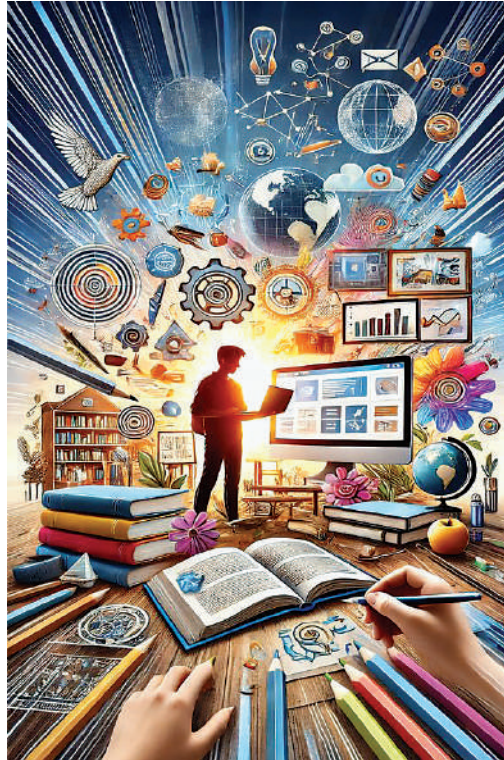
क्सर यह कहा जाता है कि नई पीढ़ी किताबों से दूर हो रही है। मोबाइल, सोशल मीडिया और स्क्रीन ने पढ़ने की आदत छीन ली है। लेकिन अगर सतह के नीचे झांककर देखा जाए, तो तस्वीर उलटी दिखाई देती है। नई पीढ़ी पढ़ रही है। कुछ अलग तरह से, अलग उद्देश्य से और अलग माध्यमों के साथ। यह बदलाव पढ़ाई के अंत का नहीं, बल्कि सीखने की संस्कृति के रूपांतरण का संकेत है।

आज की नई पीढ़ी की अध्ययन रुचि टेक्नोलॉजी-केंद्रित, व्यावहारिक और त्वरित सूचना आधारित है। वे मोटी पाठ्य-पुस्तकों के बजाय ऐसी किताबें और सामग्री चुनते हैं, जो सीधे जीवन, करियर और मनोविज्ञान से जुड़ी हों। यही कारण है कि बुकस्टोर्स और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर कुछ किताबें लगातार बेस्टसेलर बनी हुई हैं। ये किताबें केवल पढ़ी नहीं जा रही, बल्कि खरीदी जा रही हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि किताबों का बाजार खत्म नहीं हुआ उसका स्वरूप बदला है।

सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली श्रेणी है सेल्फ-हेल्प और आत्मविकास। जेम्स क्लियर की 'एटॉमिक हैबिट्स' आज युवाओं के लिए लगभग पाठ्य-पुस्तक बन चुकी है। छोटे-छोटे व्यावहारिक बदलावों से जीवन सुधारने की यह अवधारणा नई पीढ़ी को इसलिए भाती है क्योंकि यह उपदेश नहीं देती, बल्कि प्रयोग करने योग्य तरीके सुझाती है। इसी तरह 'द सबटल आर्ट ऑफ नॉट गिविंग...' या 'द मॉक हू सोल्ड हिज फ्रेररी' जैसी किताबें युवाओं को यह भरोसा देती हैं कि परफेक्ट होना जरूरी नहीं, समझदार होना जरूरी है।

दूसरी बड़ी श्रेणी है वित्तीय साक्षरता और करियर से जुड़ी किताबें। नई पीढ़ी नौकरी पाना ही नहीं, पैसे को समझना भी चाहती है। 'रिच डैड पुअर डैड' और 'द साइकोलॉजी ऑफ मनी' जैसी किताबें इसी वजह से लगातार बिक रही हैं। हिंदी में मोनिका हलान की 'लेट्स टॉक मनी' जैसी किताबें भी युवाओं के बीच लोकप्रिय हैं। ये किताबें स्कूल-कॉलेज की पाठ्य-पुस्तकों में नहीं मिलतीं, लेकिन जीवन की पाठशाला में बेहद काम आती हैं।

नई पीढ़ी किताबों से दूर नहीं हुई है, उसने बस पढ़ने का तरीका बदल लिया है। स्क्रीन, ऑडियोबुक, ऑनलाइन कोर्स और व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से वह सीखने की संस्कृति को नए अर्थ दे रही है। यह बदलाव शिक्षा के अंत का नहीं, बल्कि ज्ञान की नई यात्रा का संकेत है।



तीसरी श्रेणी है टेक्नोलॉजी, स्टार्टअप और भविष्य की दुनिया। कोडिंग, स्टार्टअप और नवाचार की ओर झुकाव के कारण 'जीरो टू वन', 'द लीन स्टार्टअप' और 'स्टीव जॉब्स' जैसी किताबें इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट के छात्रों द्वारा खरीदी जा रही हैं। ये किताबें उन्हें यह सिखाती हैं कि असफलता अंत नहीं, प्रक्रिया का हिस्सा है।

रोचक बात यह है कि कहानी और फिक्शन भी नई पीढ़ी से गायब नहीं हुए हैं। चेतन भगत, दुर्गाय दत्ता, रवींद्र सिंह और कोलीन हूवर जैसे लेखकों की किताबें आज भी युवाओं की पहली पसंद बनी हुई हैं। वजह साफ है इन कहानियों में उन्हें अपनी जिंदगी की झलक मिलती है। भारी-भरकम साहित्य नहीं, बल्कि सहज भाषा और भावनात्मक जुड़ाव।

मानसिक स्वास्थ्य और मनोविज्ञान भी नई पीढ़ी की पढ़ाई का अहम हिस्सा बन चुका है। एंगज़ायटी, तनाव और आत्म-पहचान जैसे विषय अब छिपाए नहीं जाते, बल्कि किताबों के जरिये समझे जाते हैं। यह अपने आप में एक सकारात्मक सामाजिक बदलाव है।

इन प्रवृत्तियों की पुष्टि शोध भी करते हैं। नैसकॉम और इनडीड के संयुक्त सर्वे के अनुसार भारत में लगभग 77 प्रतिशत युवा टेक्नोलॉजी इंडस्ट्री में रुचि रखते हैं, और तकनीकी कार्यबल में मिलेनियल्स व जेन जेड का योगदान करीब 90 प्रतिशत तक पहुंच चुका है। यही वजह है कि सीखने का केंद्र भी तकनीक और कौशल बन गया है। पैन अमेरिका और अन्य वैश्विक अध्ययनों से पता चलता है कि युवाओं में गहन वाचन कम हुआ है, लेकिन सूचना समझने और विश्लेषण करने की क्षमता बढ़ी है। वे ई-बुक, ऑडियोबुक और डिजिटल नोट्स के जरिये पढ़ रहे हैं। हार्वर्ड बिजनेस स्कूल जैसी संस्थाओं के अध्ययन बताते हैं कि आज के छात्र डिग्री से ज्यादा स्किल-बेस्ड लर्निंग को महत्व दे रहे हैं। यही कारण है कि ऑनलाइन कोर्स और प्रमाण-पत्र उनकी पढ़ाई का हिस्सा बन चुके हैं।

छोटे शहरों और कस्बों के उदाहरण इस बदलाव को और रोचक बनाते हैं। झुंझुनूं, सिवान या बारां जैसे इलाकों के युवा यूट्यूब और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से कोडिंग, डिजाइन और वीडियो एडिटिंग सीख रहे हैं। कई छात्र पढ़ाई के साथ फ्रीलांस काम कर रहे हैं। उनके लिए किताब अब केवल परीक्षा पास करने का साधन नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर बनने का औजार है। हां, चुनौतियां भी हैं। डिजिटल विचलन के कारण एकाग्रता और गहरे वाचन में कठिनाई होती है। लेकिन यह पीढ़ी समाधान भी खोज रही है। डिजिटल डिटॉक्स, टाइमर के साथ पढ़ाई, ऑडियोबुक और माइंडफुल लर्निंग जैसे प्रयोग इसका उदाहरण हैं।

बहरहाल नई पीढ़ी किताबों से दूर नहीं हुई है। उसने बस यह तय कर लिया है कि वह वही पढ़ेगी, जो उसे जीवन में आगे बढ़ने में मदद करे। पाठ्य-पुस्तक की जगह अब पाठ्य-अनुभव ने ले ली है। यह बदलाव साहित्य और शिक्षा के लिए खतरा नहीं, बल्कि एक अवसर है नई पीढ़ी से संवाद करने का, उनकी भाषा और जरूरत को समझने का। नई पीढ़ी की पढ़ाई दरअसल एक नई पतंग है। डिजिटल हवा में उड़ती हुई, लेकिन ज्ञान की डोर से बंधी हुई। अगर हम इस उड़ान को समझदारी से दिशा दें, तो यही पीढ़ी सीखने की संस्कृति को पहले से कहीं अधिक व्यापक और अर्थपूर्ण बना सकती है।



आधुनिक क्रिकेट का बदलता व्याकरण रफ्तार का नया भारतीय युग



सुनील गावस्कर के दौर में गेंद को 'सम्मान' देना कला थी, आज अभिषेक, ईशान और तिलक जैसे युवा उसे 'सीमा पार' भेजना धर्म मानते हैं। भारतीय क्रिकेट में रोहित-सूर्या से शुरू हुई निडरता की यह लहर अब एक ऐसी सुनामी बन चुकी है, जिसने बल्लेबाजी के पारंपरिक सॉफ्टवेयर को पूरी तरह अपडेट कर दिया है।



अजय अस्थाना वरिष्ठ पत्रकार

भारतीय क्रिकेट के इतिहास में बदलाव की लहरें अक्सर आती रही हैं, लेकिन वर्तमान दौर में जो परिवर्तन हम देख रहे हैं, वह केवल बदलाव नहीं बल्कि एक 'पूर्ण रूपांतरण' है। यह ठीक वैसा ही है जैसे दुनिया एनालॉग से डिजिटल और अब डिजिटल से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में प्रवेश कर चुकी है। जिस गति से तकनीक ने हमारे जीवन की प्रोसेसिंग स्पीड को बढ़ाया है, ठीक उसी तर्ज पर रोहित शर्मा और सूर्यकुमार यादव की विरासत को आगे बढ़ाते हुए अभिषेक शर्मा, तिलक वर्मा

और ईशान किशन जैसे खिलाड़ियों ने टी-20 क्रिकेट की 'प्रोग्रामिंग' ही बदल दी है।

हाल ही में महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने एक बड़ी दिलचस्प बात कही। उन्होंने स्वीकार किया कि जितनी गेंदों पर वे अपना खाता खोलने के लिए संघर्ष करते थे या पिच का मिजाज समझते थे, आज की नई नस्ल के बल्लेबाज उतनी ही गेंदों पर अर्धशतक जड़कर पवेलियन में आराम कर रहे होते हैं। गावस्कर का यह बयान आत्म-ग्लानि नहीं, बल्कि उस युग परिवर्तन की स्वीकारोक्ति है, जहां समय 'बचाने' का नहीं बल्कि समय को 'निचोड़ने' का नाम है।



आधुनिक युग के सूत्रधार हैं रोहित-सूर्या

इस क्रांति की नींव रोहित शर्मा ने रखी। 2023 के वनडे वर्ल्ड कप से लेकर टी-20 वर्ल्ड कप तक, रोहित ने खुद को एक 'एंकर' से एक 'विनाशक' में बदला। उन्होंने संदेश दिया कि कप्तान का काम केवल पारी को अंत तक ले जाना नहीं, बल्कि पहली गेंद से विरोधी के मनोबल को कुचलना है। उनके साथ सूर्यकुमार यादव ने क्रिकेट के मैदान को 360 डिग्री के कैनवास में बदल दिया। सूर्या की बल्लेबाजी में वह 'एआई' जैसी सटीकता है, जो फील्डर के खड़े होने से पहले ही गैप ढूँढ़ लेता है। उन्होंने यह साबित किया कि अब क्रिकेट केवल सीधे बल्ले का खेल नहीं, बल्कि कोणों और गणनाओं का विज्ञान है।

प्रोसेसिंग स्पीड का अपग्रेड है नई पौध... अभिषेक, ईशान और तिलक जैसे युवाओं को देखना ऐसा है जैसे किसी सुपर-कंप्यूटर को काम करते देखना। अभिषेक शर्मा जब मैदान पर उतरते हैं, तो वे गेंद की 'मेरिट' नहीं देखते, बल्कि गेंदबाज की 'मंशा' पर प्रहार करते हैं। उनके पास वह 'फ़ायरलेस' सॉफ्टवेयर है जो उन्हें पहली गेंद पर छक्का मारने के लिए प्रेरित करता है। वहीं तिलक वर्मा और ईशान किशन ने साबित किया है कि तकनीक अगर ताकत के साथ मिल जाए, तो क्रिकेट के मैदान पर कोई भी लक्ष्य नामुमकिन नहीं है। तिलक की बल्लेबाजी में जहां एक ओर क्लास झलकता है, वहीं दूसरी ओर उनकी 'स्ट्राइक रेटेशन' और बड़े शॉट्स लेने की क्षमता उन्हें भविष्य का सबसे घातक बल्लेबाज बनाती है।



खत्म हुआ 'विकेट' का मोह

इन बल्लेबाजों ने टी-20 के सबसे पुराने उस डर को खत्म कर दिया है और वो है 'विकेट गिरने का डर'। पुराने दौर में विकेट बचाना एक सुरक्षित निवेश की तरह था, जहां आप अंत के लिए रन बचाकर रखते थे। लेकिन आज की रणनीति 'नेट-रन-रेट' और 'इम्पैक्ट' पर टिकी है। अब विकेट का जाना केवल एक नई शुरुआत है। ईशान किशन की आक्रामकता और तिलक वर्मा की क्लासिकल पावर यह दर्शाती है कि भारतीय क्रिकेट का 'बेंच स्ट्रेंथ' अब केवल खिलाड़ियों की संख्या नहीं, बल्कि प्रतिभा का एक पावरहाउस है। आज का युवा बल्लेबाज जानता है कि अगर वह आउट भी हो गया, तो डगआउट में उसके जैसा ही कोई दूसरा 'पावर-हिटर' अपनी बारी का इंतजार कर रहा है।

एआई युग और क्रिकेट का तालमेल

आज का क्रिकेट डेटा और विश्लेषण का खेल है। जिस तरह एआई एल्गोरिदम सेकंडों में करोड़ों सूचनाओं को प्रोसेस करता है, वैसे ही अभिषेक और तिलक जैसे खिलाड़ी पलक झपकते ही गेंदबाज की ग्रीप, लेंथ और फील्डिंग की बनावट को भांप लेते हैं। अब 'वेट एंड वॉच' की नीति पुरानी पड़ चुकी है। अब 'हिट एंड डोमिनेट' का युग है। तकनीक की ही तरह इन खिलाड़ियों की 'मसल मेमोरी' इतनी तेज है कि वे मुश्किल से मुश्किल गेंद पर भी असंभव दिखने वाले शॉट खेल जाते हैं।

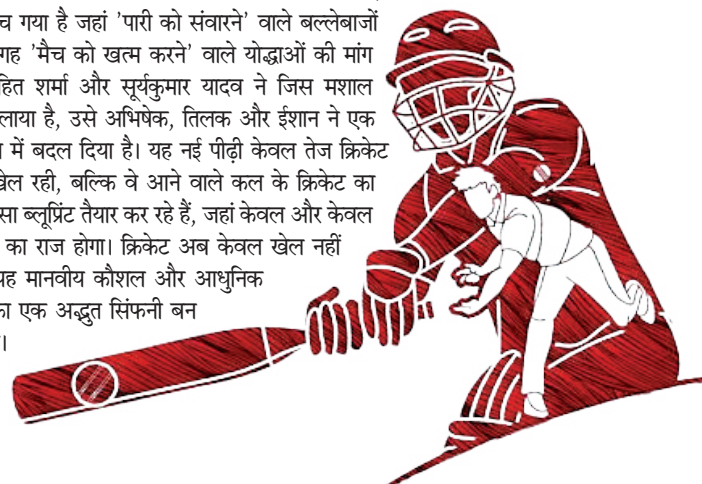
गावस्कर की तपस्या बनाम अभिषेक की आतिशबाजी

सुनील गावस्कर के दौर में क्रिकेट एक तपस्या थी, जहां धैर्य की परीक्षा होती थी। लाल गेंद के सामने घंटों टिके रहना महानता का मानक था। आज क्रिकेट एक 'हाई-स्पीड थ्रिलर' है। गावस्कर का 60 ओवर में 36 रन बनाना उस समय की रक्षात्मक तकनीक की पराकाष्ठा थी, लेकिन आज अभिषेक शर्मा का 15 गेंदों पर 50 रन बनाना आधुनिक कौशल का शिखर है। यह तुलना किसी को छोटा या बड़ा दिखाने के लिए नहीं, बल्कि विकास की कहानी बयां करने के लिए है। जिस तरह हम अब बैलगाड़ी से सीधे हाइपर-लूप की कल्पना कर रहे हैं, क्रिकेट भी उसी गति से अपने पुराने ढर्रे को छोड़ चुका है।



क्या है अगला स्टेशन?... भारतीय क्रिकेट अब उस दौर

में पहुंच गया है जहां 'पारी को संवारने' वाले बल्लेबाजों की जगह 'मैच को खत्म करने' वाले योद्धाओं की मांग है। रोहित शर्मा और सूर्यकुमार यादव ने जिस मशाल को जलाया है, उसे अभिषेक, तिलक और ईशान ने एक ज्वाला में बदल दिया है। यह नई पीढ़ी केवल तेज क्रिकेट नहीं खेल रही, बल्कि वे आने वाले कल के क्रिकेट का एक ऐसा ब्लूप्रिंट तैयार कर रहे हैं, जहां केवल और केवल रफ्तार का राज होगा। क्रिकेट अब केवल खेल नहीं रहा, यह मानवीय कौशल और आधुनिक गति का एक अद्भुत सिंफनी बन गया है।



स्मृति से सृजन तक

कायस्थ समाज के सामूहिक संकल्प का प्रतीक बना 'सुधा भटनागर स्मृति भवन'



समाज की प्रगति केवल आर्थिक संसाधनों या भौतिक संरचनाओं से नहीं होती। उसकी वास्तविक शक्ति स्मृतियों, मूल्यों और साझा संकल्प में निहित होती है। जब कोई स्मृति सेवा का रूप ले लेती है, तब वह व्यक्तिगत शोक से ऊपर उठकर सामाजिक प्रेरणा बन जाती है। जोधपुर में प्रस्तावित 'सुधा भटनागर स्मृति भवन' इसी विचार का मूर्त रूप है—एक ऐसी संरचना, जो ईंट-पत्थर से कहीं अधिक भाव, उत्तरदायित्व और सामूहिक चेतना का प्रतीक है।

25 जनवरी को सम्पन्न भूमि पूजन समारोह केवल एक औपचारिक धार्मिक अनुष्ठान नहीं था, बल्कि कायस्थ समाज के आत्मविश्वास, संगठनात्मक क्षमता और भविष्य-दृष्टि का सार्वजनिक प्रकटीकरण भी था। यह अवसर इस बात का साक्ष्य बना कि स्मृति यदि समाज से जुड़ जाए, तो वह आने वाली पीढ़ियों के लिए दिशा-सूचक बन सकती है।

स्मृति, जो समाज की धरोहर बनी

कायस्थ कल्याण समिति के सचिव अजय अस्थाना के अनुसार, यह भूमि समाज को एल. एन. भटनागर द्वारा अपनी धर्मपत्नी, स्वर्गीय सुधा भटनागर की पुण्य स्मृति में समर्पित की गई है। यह दान केवल भूमि का हस्तांतरण नहीं, बल्कि एक संवेदनशील सोच का विस्तार है—जहाँ निजी भावनाएँ सामाजिक उत्तरदायित्व में रूपांतरित हो जाती हैं। इसी भावभूमि पर स्मृति भवन की संकल्पना खड़ी है।

आध्यात्मिकता और संकल्प का संगम

■ भूमि पूजन का पावन अनुष्ठान गायत्री शक्तिपीठ के सुनील भारद्वाज एवं अंजू सक्सेना के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। समिति अध्यक्ष डॉ. पीयूष सक्सेना और सचिव अजय अस्थाना ने सपत्नीक विधिवत पूजन कर निर्माण कार्य के शुभारंभ की घोषणा की। पूरे वातावरण में श्रद्धा, सकारात्मक ऊर्जा और भविष्य के प्रति आश्वस्त स्पष्ट रूप से महसूस की जा सकती थी।

■ यह क्षण केवल धार्मिक आस्था का नहीं, बल्कि सामाजिक संकल्प के दृढीकरण का भी था—मानो समाज ने एक स्वर में कहा हो कि यह भवन केवल बनेगा ही नहीं, बल्कि समय पर और सशक्त रूप में बनेगा।



एल एन भटनागर
भूमि दानदाता



स्वर्गीय श्रीमती
सुधा भटनागर

सहयोग, जो संकल्प में बदला

■ समारोह की एक उल्लेखनीय उपलब्धि रही समाज के प्रबुद्धजनों द्वारा खुले मन से की गई आर्थिक सहयोग की घोषणाएँ। यह सहयोग मात्र धनराशि का नहीं था; यह उस सामूहिक प्रतिबद्धता का संकेत था, जिसके बिना कोई भी सामाजिक परियोजना सफल नहीं हो सकती। यहाँ दान भावना नहीं, बल्कि सहभागिता का भाव प्रमुख रहा।

■ समिति के उपाध्यक्ष आलोक सक्सेना ने बताया कि स्मृति भवन का निर्माण तीन चरणों में पूर्ण किया जाएगा। लक्ष्य स्पष्ट है—एक ऐसा केंद्र विकसित करना, जो कायस्थ समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक आयोजनों के लिए स्थायी मंच बन सके।

एक भवन नहीं, एक विचार

■ निःसंदेह, स्वर्गीय सुधा भटनागर स्मृति भवन को केवल ईंट-पत्थर की संरचना के रूप में देखना इसके उद्देश्य को सीमित करना होगा। यह भवन समय के साथ कायस्थ समाज की सामूहिक स्मृति, उसकी एकजुटता और उसकी सामाजिक चेतना का जीवंत कथन बनकर उभरेगा। यह वह स्थान होगा, जहाँ अतीत की प्रेरक स्मृतियाँ भविष्य की दिशा तय करेंगी और जहाँ स्मरण, संकल्प में रूपांतरित होगा।

सामूहिक उपस्थिति, सामूहिक शक्ति

इस गरिमामय अवसर पर कायस्थ कल्याण समिति के पदाधिकारियों के साथ-साथ शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष ओमकार वर्मा, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की विशेषज्ञ समिति के सदस्य राकेश श्रीवास्तव, समिति संरक्षक राजेश श्रीवास्तव, रतनलाल श्रीवास्तव, मिलन श्रीवास्तव, कपिल सक्सेना, संजय अस्थाना, अवरिल सक्सेना, डॉ. मनोज कुलश्रेष्ठ, मुकेश अस्थाना, दीपक प्रभात सक्सेना, आशीष श्रीवास्तव, सत्येंद्र श्रीवास्तव, राजीव निगम, वीरेंद्र निगम सहित समाज के अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

...विशेष रूप से, नारी शक्ति की सक्रिय और गरिमामय सहभागिता ने आयोजन को और अधिक अर्थपूर्ण बना दिया।

मौन में गूंजता संकल्प... यह स्मृति भवन समाज से शांत स्वर में, पर दृढ़ विश्वास के साथ कहेगा कि विरासत केवल स्मरण की वस्तु नहीं होती, वह सृजन का स्रोत भी होती है। जब कोई समाज अपनी स्मृतियों को सहेजकर उन्हें भविष्य की राह से जोड़ता है, तब वह सिर्फ आज को नहीं संवारा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए विचार, मूल्य और दिशा की स्थायी नींव रखता है। यही इस भवन का मौन लेकिन सशक्त कथन होगा—स्मृति से सृजन तक की निरंतर यात्रा।

-अजय अस्थाना,
सचिव, कायस्थ कल्याण समिति

वसन्त के रंगों में कृष्ण भक्ति और संस्कृति का उत्सव आज के आनन्द की जय

वसन्त ऋतु केवल मौसम परिवर्तन नहीं, बल्कि भारतीय भक्ति परंपरा में उल्लास, सौंदर्य और आध्यात्मिक चेतना का महापर्व है।
पुष्टिमार्गीय मंदिरों से लेकर बृज संस्कृति तक श्रीकृष्ण की लीलाओं में रंग, संगीत और शृंगार का अनूठा समन्वय दिखाई देता है।



डा. राकेश तैलंग, शिक्षाविद् एवं पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी

**‘पीरेहि कुंडल नूपुर पीरे
पीरे पीतांबर ओढे ठाडो
पीरहि पाग लटक सिर सोहे
पीरो छोर रह्यो कटि गाढो
पीरी बनी कटि काछनी लाल के
पीरी छोर रच्यो पटुका को
गोविंददास प्रभु की लीला दरसत
पीरो ही लकुट लिये कर ठाडो’**

हिन्दी साहित्य के ‘अष्टछाप’ के कवि और पुष्टिमार्गीय कीर्तन साहित्य के मात्र गोविन्द दास ही नहीं प्रत्युत सूरदास सहित अनेक भक्तिकालीन कवि कीर्तनकारों ने अपने काव्य में वसंत काल के प्रभु और प्रकृति के कितने ही वासंती रंगों से आराध्य श्रीकृष्ण और राधा व गोपियों के साथ रची निकुंज लीला को अभिव्यक्त किया है। इतना ही नहीं, इन काव्याभिव्यक्तियों में पुष्टिमार्ग, सरखी, हरिदासी, राधा वल्लभिय और गौडेश्वर परंपरा के मंदिरों की प्रभु सेवा के शृंगार और तदनुसार कीर्तनों का मानों लाइव टेलिकास्ट होते देखने को मिलता है।

मंदिर संस्कृति का समवाय सम्बन्ध माघ माह के बाद ऋतु परिवर्तन से इतना गहन है कि यहां वसंत पंचमी से लेकर होलिकाोत्सव पर्यंत चालीस दिवसीय आनन्दोत्सव की अविच्छिन्न परम्परा इन देवाल्यों में देखते ही बनती है। वसन्त कलश की स्थापना या अधिवासन से लेकर पुष्टि व अन्य श्रीकृष्ण मन्दिरों में अष्टकालीन सेवा में रंग, अबीर, चौवा, गुलाल वातावरण का अभिन्न अंग बन चुकी होती है।

श्रीकृष्ण के उत्सव नायक व निकुंज नायक के स्वरूप की अभिव्यक्ति वसन्त पंचमी से अपने पूर्ण ओज से शुरू होती है। श्रीकृष्ण दर्शनों की झांकियों में अपने निकुंज लीला नायक के साथ लौकिक रूप से विवाहित लेकिन श्रीकृष्ण में आसक्त ‘अन्यपूर्वा’, श्रीकृष्णाभिलाषी कुमारिकाएं ‘अनन्यपूर्वा’ और श्रीकृष्ण के बाल्यकाल से ही वात्सल्य भाव से पूर्ण ‘सामान्या’ गोपिकाएं वसंत ऋतु के इस उत्सव को मदनोत्सव का रूप दे देती हैं। कामदेव के भाव की आराधना का उत्सव। यहां श्रीकृष्ण अपने बहुमुखी रूप में ‘यशोदोत्संगलालित्य’, ‘उत्सवप्रिय’, और ‘निकुंज’ नायकत्व की अलौकिक गरिमा के साथ उपस्थित होते हैं कुछ इस रूप में-



**‘बोलत श्याम मनोहर
बैठे कदंब छैया
कुसुमित द्रुम अलि
गुंजत सखी कोकिला
कल कूजत तहियां
सुनत दूतिका के वचन
हुलास जाके मन महियां
कुंभनदास बृजकुंवर मिलन चलि
रसिक कुंवर गिरिधरन पैया’**

बृजमंडल में लगभग समस्त मन्दिरों में वसंत माघ और फाल्गुन माह की संधि रेखा का परिवर्तन, संक्रमण प्रस्तुत करता है कुछ इस अर्थ में-

**‘प्रकृति के यौवन का शृंगार
करेंगे कभी न बासी फूल
मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र
आह उत्सुक है उनकी धूल’**

पुरातन का निषेध और परिवर्तन का स्वीकार-यही संदेश है वसन्त का- ‘old orders changeth yielding place to new.’ यह परिवर्तन वसन्त पंचमी से शुरू हो माघ पूर्णिमा पर होरी दंड रोपण से होकर होलिकाष्टक और आमों के ‘मौड़’ आने के प्रतीक कुंज एकादशी और चौरासी स्तंभ में परभु के बिराजने और राग, भोग व शृंगार की पीत रंगी आभा के साथ अन्य रंगों के समुच्चय में स्नात हो होलिका प्रदीपन व धूलिवंदन उत्सव पर जाकर चरम पर पहुंच जाता है।

वसंत से लेकर फाल्गुन माह-यह श्रीकृष्ण के प्रकृति प्रेमी स्वरूप को तो सामने लाता ही है, प्रकृति में होने वाले परिवर्तन को भी समक्ष ला इससे आनंदित होने का अवसर हमें देता है। यह अभिव्यक्ति भारतीय संगीत के ऋतु अनुकूल रंगों को धमार शैली के कीर्तनों द्वारा प्रस्तुत होते देखी जा सकती है। कान्हडा, होरी व वसन्त राग की विभिन्न प्रणालिकाओं की प्रस्तुति के महत्व को भक्ति परंपरा के गायकों ने समझा था, ऐसी ऋतु अनुकूल रागरागिनियों को उन्होंने दरबारी राज्याश्रय से मुक्त कर लोक व भगवदाश्रयी सबके लिए सुलभ बनाया। वसन्त से लेकर होली तक ये रागमालाएं सर्वत्र दृष्टव्य होती हैं।

वसन्त के शुभागमन को संस्कृति साधक सरस्वती देवी की आराधना के पर्व के रूप में भी देखते हैं। अवश्य ही, जहां भक्ति, संस्कृति, शृंगार, कला, संगीत की युति के अवसर हों वहां सरस्वती अपने विविध रंगों में हमारे लिए मार्गदर्शी बन जाती है। इन दिनों श्रीकृष्ण मन्दिरों में ‘द्वादश बृज कुंजों’ के भाव से अरुण, हरित, हेम, पूर्णेंद्रु, श्याम, कदंब, सिताम्बु, वसन्त, माधवी, कमल, चंपा और नील कमल कुंज घटाओं की जो झांकियां प्रस्तुत होती हैं, वे प्रकृति के समस्त ऋतु प्रवर्द्धक उपादानों और रंग बिरंगी चितराम कुदरत के विविध रूपाकृतियां हैं। ये कुंज संक्रमण कालीन समय में परिवर्तन का राग गाती हैं।

वसन्त ऋतु अभाव में भाव, दुःख में सुख, हानि में लाभ, नैराश्य में आशा और आने वाले कल के लिए आज के आनन्द की जयकार का पर्व है। और इस ऋतु की महिमा भी कैसी? कवि बिहारी ने कहा है- वृक्षों से विनम्र याचक बन वसन्त ने पत्तों का दान चाहा और वृक्षों ने सहर्ष पत्ते त्याग दिए। दान की महिमा देखिये- फिर से वृक्षों को नयी नयी कोंपलों से लकदक कर दिया- ‘ऋतु वसन्त जाचक भया, हरखि दिया द्रुम पात। तातें नव पल्लव भया, दिया दूर नहीं जात।’

आइये, सकारात्मकता के भावों का शंखनाद करने वाले ऋतुराज वसन्त की अगवानी करें और सर्व कल्याणकारी काम व सरस्वती समाराधन द्वारा कल के आनन्द के लिए आज के आनन्द का जयकार करें।

सीएम की पहली सभा का राजनीतिक संदेश खाली कुर्सियां और खामोश मंच

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहली सिरोही सभा संगठनात्मक कमजोरियों, खराब समय प्रबंधन और स्थानीय मुद्दों की अनदेखी के कारण फीकी रही। भीड़ प्रबंधन और कार्यकर्ताओं की नाराजगी ने स्थानीय भाजपा नेतृत्व की तैयारियों पर सवाल खड़े कर दिए।



कड़ी सुरक्षा, अलग-थलग कार्यकर्ता

सिरोही में सीएम की सभा को लेकर कड़े सुरक्षा बंदोबस्त किए गए थे। चप्पे-चप्पे पर पुलिस और अन्य सुरक्षाकर्मी तैनात थे। मॉनिटरिंग में अफसरों की भी लंबी कतार थी। पहली बार किसी सीएम की इतनी सख्त सुरक्षा व्यवस्था देखी गई। इतनी सख्ती से खुद भाजपाई भी धक्के खाते दिखे। पार्टी के लिए दिन-रात मेहनत करने वाले कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों तक को पांडाल में आने की अनुमति नहीं दी गई। कार्यकर्ताओं ने अपनी पीड़ा

संगठन की मुखिया और राज्यमंत्री को सुनाई, लेकिन उनकी तक अफसरों ने नहीं सुनी।

गैरहाजिरी और असहज संकेत...
सभा में जिले के प्रभारी मंत्री केके विश्नोई की गैरहाजिरी ने राजनीतिक अटकलों को और हवा दी। मुख्यमंत्री की पहली यात्रा में ही ऐसी अनुपस्थिति को महज संयोग मानना कठिन है। यह स्थानीय सत्ता-संतुलन और अंदरूनी समन्वय की कमी की ओर इशारा करता है।

खाली कुर्सियों का राजनीतिक संदेश

सिरोही की सभा में खाली हुई कुर्सियां केवल अव्यवस्था का परिणाम नहीं थीं। वे सत्ता और संगठन के बीच बढ़ती दूरी, संवादहीनता और जमीनी मुद्दों की अनदेखी का प्रतीक बन गईं। मुख्यमंत्री की पहली यात्रा यदि उत्साह पैदा नहीं कर सकी, तो आने वाले समय में सरकार और संगठन दोनों को इस संकेत को गंभीरता से पढ़ना होगा।



गणपत सिंह मांडोली, वरिष्ठ पत्रकार

भीड़ रोकने में संगठन की उदासीनता



■ खास बात यह है कि सीएम की माकूल सुरक्षा बंदोबस्त में प्रशासन की ही हजुरी में लगे भाजपाईयों ने भीड़ को रोकने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। मंचासीन सिरोही भाजपा की मुखिया रक्षा भंडारी और राज्यमंत्री ओटाराम देवासी ने भी अपनी कुर्सी से उठकर लोगों को रोकने की जरूरत नहीं समझी। पूरा कार्यक्रम सिर्फ स्वागत और भाषण तक ही सीमित रहा।

■ बतौर सीएम भजनलाल शर्मा के पहली बार सिरोही आगमन पर भाजपाई बेहद खुश थे और इसके प्रचार-प्रचार के लिए पोस्टर-बैनर भी लगवाए। हालांकि, यह अलग बात है कि सीएम की सभा के हिसाब से भाजपाई भीड़ जुटाने और जो लाई उसको रोकने में नाकाम रहे।

मांगें रखी गई, सरकार खामोश रही

पहली बार सीएम की सभा से अतिउत्साहित स्थानीय विधायक राज्यमंत्री ओटाराम देवासी ने सिरोही में विकास की गंगा बहाने की बात करते हुए सिरोही में वेटरनरी कॉलेज की मांग की। करीब पौने घंटे तक के भाषण में सीएम ने सिरोही तो क्या जालोर और पाली जिले के लिए भी कोई सौगात का जिक्र नहीं किया। ओटाराम देवासी की मांग पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

सी

एम बनने के बाद 22 जनवरी को पहली बार सिरोही पहुंचे भजनलाल शर्मा की सभा को यादगार बनाने में स्थानीय भाजपाई विफल रहे। सिरोही, जालोर और पाली तीन जिलों की आमसभा में भाजपाई अपेक्षित भीड़ नहीं जुटा पाए और जो लाए वो भी सीएम का भाषण शुरू होते ही रवाना हो गईं।

समय प्रबंधन की चूक, जनता की परीक्षा

आमजन को सभा का समय सुबह 10 बजे प्रचारित करने से लोग निर्धारित समय पर पहुंचने शुरू हो गए थे, जबकि सीएम भजनलाल शर्मा दोपहर ढाई बजे पहुंचे। सीएम के आने से पहले स्थानीय सांसद, विधायक समेत भाजपा नेताओं के भाषण हुए और इसके बाद सिरोही विधायक पंचायतीराज विभाग राज्यमंत्री ओटाराम देवासी, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ व सहकारिता मंत्री गौतक कुमार दक ने भाषण दिया।

सीएम का भाषण शुरू होते-होते साढ़े 3 बज गए। चार घंटे से भी ज्यादा समय से बैठे लोग सीएम के भाषण में भी स्थानीय मुद्दें शामिल नहीं होने से रवाना होने लगे और देखते ही देखते 15-20 मिनट में पांडाल आधे से ज्यादा खाली हो गया।

काव्यात्मक सत्य और ऐतिहासिक सत्य का अंतर

कविता का सच: इतिहास नहीं, अनुभूति

कविता तथ्य नहीं, अनुभूति है। यह लेख काव्यात्मक सत्य और ऐतिहासिक सत्य के अंतर को सरल उदाहरणों से स्पष्ट करता है, तर्क नहीं बल्कि संवेदना रचना के मर्म तक पहुंचाती है।



दिनेश सिंदल कवि, लेखक

कवि वह सपेरा होता है जिसकी पिटारी में सांपों की जगह लोगों के दिल बंद होते हैं।

कभी-कभी किसी रचना को पढ़ कर रचनाकार से यह सवाल किया जाता है कि यह रचना आपने किसको देखकर लिखी। विशेषकर प्रेम कविता को पढ़/ सुन कर श्रोता/ पाठक की जिज्ञासा होती है कि आपकी इस रचना का नायक कौन है?

कवि अपने आसपास से ही चरित्र उठाता है।
तुम से पाया तुम्हीं को लौटाया
गीत कहकर कभी गजल कहकर

लेकिन उसमें रचनाकार वह देखता है जो कोई अन्य सामान्य व्यक्ति नहीं देख पाता। कवि की यह दृष्टि ही उसे आम आदमी से अलग करती है।

कवि के जहन में कोई एक व्यक्ति नहीं होता। बल्कि बहुत से व्यक्तियों के जोड़ से बना कोई एक अमूर्त चरित्र होता है। जो वास्तव में भौतिक रूप से कहीं नहीं होता। कवि उसे अपने शब्दों से आकर देता है। उसे गढ़ता है। वह कवि द्वारा रचा हुआ चरित्र होता है।

किसी इक फूल की बू तो किसी का रंग भाया है
तुझे इक मुश्त खो बैठा मगर किस्तों में पाया है

अपनी रचना में कवि जो है को नकारता है व जैसा होना चाहिए को स्थापित करने की कोशिश करता है।

जब कोई चित्रकार किसी सुंदर स्त्री का चित्र बनाता है तो जो चित्र बनता है, वह किसी एक विशेष स्त्री का चित्र नहीं होता। वैसी स्त्री कहीं होती भी नहीं है, जिसका चित्र उस चित्रकार ने बनाया होता है। वह चित्र उस चित्रकार की कल्पना की कई स्त्रियों का जोड़ होता है।

कवि की कल्पना का चरित्र होता है कविता का 'तुम'

कविता का 'तुम' भी किसी एक व्यक्ति विशेष को संबोधित नहीं होता। वह कवि की कल्पना का चरित्र होता है। और ये भी हो सकता है कि वह 'तुम' कोई व्यक्ति नहीं हो, कोई प्रवृत्ति, कोई मौसम, कोई अच्छा- बुरा समय भी हो सकता है।

काव्यात्मक सत्य वह सत्य है जो भावना, अनुभव, मानवीय स्वभाव और जीवन की गहराई को व्यक्त करता है। यह कल्पना, रूपक, प्रतीक, अतिशयोक्ति और संवेदना के माध्यम से व्यक्त होता है। काव्यात्मक सत्य तथ्य के स्तर पर सदैव सही नहीं होता, परंतु अनुभव के स्तर पर गहरा और वास्तविक लगता है।

ऐतिहासिक सत्य वह सत्य है जो तथ्यों, दस्तावेजों, साक्ष्यों और विश्वसनीय प्रमाणों पर आधारित होता है। यह कल्पना की नहीं, बल्कि घटनाओं की वास्तविकता की बात करता है। शोध, तिथियां, साक्ष्य, क्रम सब इसमें महत्वपूर्ण होते हैं। इसीलिए कविता को इतिहास की तरह नहीं देखा जाना चाहिए। किसी काव्य- कृति में कोई घटना या कोई पात्र का किसी रूप में होना जरूरी नहीं कि ऐतिहासिक सत्य हो। वह आभासी सत्य है। वह काव्यात्मक सत्य है।

जैसे महावीर जंगल में तपस्या कर रहे हैं। वे समाधी में बैठे हैं। उन्हें एक सांप काटता है। और हम पढ़ते- सुनते आए हैं कि उनके शरीर से खून की जगह दूध निकालता है। क्या इसे विज्ञान मानेगा? नहीं! क्योंकि किसी भी व्यक्ति के शरीर में अगर खून की जगह दूध है तो वह व्यक्ति जीवित ही नहीं रह सकता। इस घटना का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं हो सकता। यह ऐतिहासिक सत्य नहीं है। यह घटना महावीर की करुणा को दर्शाती है। रचनाकार इस घटना के माध्यम से कहना चाहता है कि महावीर इतने करुणावान थे की जो उन्हें नुकसान पहुंचाए उसका भी वे सदैव भला ही सोचते थे।

सांप काटे जाने पर शरीर से खून की जगह दूध का निकलना ऐतिहासिक सत्य नहीं, काव्यात्मक सत्य है।

संवेदना से परिचय कराना ही कवि का काम

कवि का काम इतिहास पढ़ना नहीं है। वह अपने पाठक व श्रोता का उस संवेदना से परिचय करवाता है जिससे जीवन आगे बढ़ता है।

हमें कविता को कविता की तरह देखना चाहिए। कविता में विचार के साथ कवि की कल्पना भी है। वह विचार को ऐसे प्रस्तुत करता है कि वह सर्वमान्य हो जाए, सबके हित का हो जाए।

जो शब्दों तक में ठहर जाते हैं वे काव्यात्मक सत्य को नहीं सोच पाते। वो घटनाओं का ऐतिहासिक विश्लेषण करते हैं। उनकी सत्यताओं की परख- खोज करते हैं, शोध करते हैं। वे तर्क से समझने की कोशिश करते हैं। भाव वहां खत्म हो जाता है। रस खत्म हो जाता है। इस तरह वे रचना में उल्लेखित उस ऐतिहासिक पात्र के खोल को तो पकड़ पाते हैं, उसके शरीर को तो पकड़ पाते हैं लेकिन उसकी आत्मा को नहीं पकड़ पाते। वह तत्व जो महावीर को महावीर बनाता है या बुद्ध को बुद्ध बनाता है, उससे वे वंचित रहे जाते हैं। लेकिन जो शब्दों के पार, भाव तक पहुंचाते हैं वे रचना के मर्म को समझ पाते हैं।

कवि एक सूत्र के रूप में आपके समक्ष चीजों को रखता है, कोडिंग करता है। जो उसे डिकोड कर पाते हैं वे कवि के हृदय तक पहुंच पाते हैं।

इसीलिए कविता के मर्म तक पहुंचाने के लिए, कविता के रस तक पहुंचाने के लिए, उसके भाव को स्पर्श करने के लिए श्रद्धा की जरूरत है, समझ की नहीं। कविता के पास श्रद्धा के साथ जाना चाहिए। अगर हम अपनी समझ के साथ जाते हैं तो हम वही चीज देख पाते हैं जो पहले से हमारे भीतर है।

रिफाइनरी, परिसीमन और राजनीति

बाड़मेर-बालोतरा विवाद की परतें



धर्मसिंह भाटी, वरिष्ठ पत्रकार

लो

कतंत्र में प्रशासनिक निर्णय कभी भी केवल प्रशासनिक नहीं रहते। विशेषकर तब, जब वे भूगोल से जुड़े हों और उस भूगोल में राजनीति सांस लेती हो। राजस्थान सरकार द्वारा वर्ष 2025 के अंतिम दिन बाड़मेर और बालोतरा जिलों की सीमाओं में किया गया फेरबदल इसका ताजा उदाहरण है। यह फैसला कागजों पर भले ही 'प्रशासनिक पुनर्गठन' हो, लेकिन जमीनी हकीकत में यह सत्ता, संसाधन और भविष्य की राजनीति से गहराई से जुड़ा हुआ है।

बायतु विधानसभा क्षेत्र के बड़े हिस्से को बालोतरा से हटाकर पुनः बाड़मेर में शामिल करना और गुड़ामालानी व धोरीमना जैसे क्षेत्रों को बाड़मेर से अलग कर बालोतरा जिले में जोड़ना, देखने में तकनीकी बदलाव लग सकता है। लेकिन यही बदलाव आज पश्चिमी राजस्थान की राजनीति में उबाल का कारण बन चुका है। सवाल यह नहीं है कि सीमाएं बदली जा सकती हैं या नहीं—सवाल यह है कि किस प्रक्रिया, किस समय और किस उद्देश्य से बदली गई।

समय ही सवाल खड़ा करता है

31 दिसंबर की रात जारी अधिसूचना केवल एक प्रशासनिक आदेश नहीं थी, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत सोच-समझकर चुना गया क्षण भी था। 2027 की प्रस्तावित जनगणना से पहले सीमाओं में किया गया यह बदलाव भविष्य के परिसीमन को प्रभावित करेगा, यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है। यही कारण है कि इस निर्णय को लेकर विपक्ष ही नहीं, आम जनता के बीच भी संदेह गहराता जा रहा है।

यदि यह बदलाव वास्तव में प्रशासनिक सुगमता के लिए था, तो व्यापक जनसुनवाई, स्थानीय निकायों से संवाद और पारदर्शी प्रक्रिया क्यों नहीं अपनाई गई? लोकतंत्र में फैसलों की वैधता केवल संवैधानिक नहीं होती, सामाजिक सहमति भी उतनी ही आवश्यक होती है।

बाड़मेर-बालोतरा जिला सीमा फेरबदल केवल प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि संसाधनों, परिसीमन और भविष्य की राजनीति से जुड़ा कदम है। संवाद के अभाव ने इसे जनअसंतोष और राजनीतिक टकराव का मुद्दा बना दिया है।



विरोध को महज राजनीति कहना अधूरा सत्य... कांग्रेस द्वारा किए जा रहे विरोध को सत्ता पक्ष राजनीतिक स्टंट करार दे सकता है, लेकिन यह कहना भी उतना ही सच है कि यह असंतोष केवल नेताओं तक सीमित नहीं है। धोरीमना और गुड़ामालानी जैसे क्षेत्रों में आम नागरिक यह पूछ रहे हैं कि जिला बदलने से उनकी प्रशासनिक पहुंच, न्यायिक प्रक्रिया और दैनिक जीवन पर क्या असर पड़ेगा।

पूर्व राजस्व मंत्री हेमराम चौधरी का धरना और कांग्रेस का शक्ति प्रदर्शन निश्चित ही राजनीतिक है, लेकिन वह उस बेचैनी की अभिव्यक्ति भी है जो बिना संवाद के लिए गए निर्णयों से जन्म लेती है। लोकतंत्र में विरोध का अर्थ अराजकता नहीं, बल्कि सहभागिता की मांग होता है।

भाजपा का तर्क और उसकी सीमाएं

- सत्ताधारी भाजपा का यह तर्क कि प्रशासनिक जिलों का गठन संगठनात्मक ढांचे के अनुरूप किया गया है, अपने आप में एक गंभीर सवाल खड़ा करता है। क्या प्रशासनिक इकाइयों का निर्धारण राजनीतिक दलों की संगठनात्मक जरूरतों के अनुसार होना चाहिए? यदि ऐसा है, तो 'तटस्थ प्रशासन' की अवधारणा कहाँ ठहरती है?
- भाजपा इस निर्णय को 'सुशासन' व 'बेहतर प्रबंधन' से जोड़ रही है, लेकिन सुशासन की पहली शर्त पारदर्शिता व सहभागिता है। बिना पर्याप्त संवाद के लिया निर्णय, चाहे वह व्यावहारिक क्यों न हो, अविश्वास को जन्म देता है।

रिफाइनरी व संसाधनों की राजनीति

- इस पूरे विवाद के केंद्र में पंचपदरा रिफाइनरी का होना संयोग नहीं है। यह परियोजना केवल आर्थिक विकास का प्रतीक नहीं, बल्कि राजनीतिक प्रभाव का स्रोत भी बन चुकी है। जिला सीमाएं तय करती हैं कि विकास का लाभ किसे मिलेगा और निर्णय-प्रक्रिया पर किसका नियंत्रण होगा।
- जब प्रशासनिक फैसले संसाधनों के वितरण को सीधे प्रभावित करने लगें, तो यह स्वाभाविक है कि उन्हें संदेह की दृष्टि से देखा जाए। यही कारण है कि यह विवाद भावनात्मक से अधिक संरचनात्मक बन चुका है।

आगे की राह: संवाद या टकराव... यह स्पष्ट है कि बाड़मेर-बालोतरा सीमा विवाद आने वाले वर्षों में समाप्त नहीं होने वाला। 2027 की जनगणना और 2028 के विधानसभा चुनाव इस मुद्दे को और धार देंगे। लेकिन सरकार के पास अब भी अवसर है कि वह इस टकराव को संवाद में बदले। एक उच्चस्तरीय स्वतंत्र समीक्षा, स्थानीय प्रतिनिधियों से खुला संवाद और स्पष्ट मानदंडों के आधार पर पुनर्विचार—ये ऐसे कदम हैं जो इस फैसले को राजनीतिक विवाद से निकालकर प्रशासनिक विश्वास में बदल सकते हैं। अंततः, सीमाएं कागज पर खींची जाती हैं, लेकिन उनका असर लोगों की ज़िंदगी पर पड़ता है। लोकतंत्र में वही निर्णय टिकाऊ होते हैं, जो केवल सत्ता के हित में नहीं, बल्कि जनता की सहभागिता से लिए गए हों। बाड़मेर-बालोतरा का विवाद यही याद दिलाता है कि भूगोल बदलना आसान है, भरोसा बदलना नहीं।



बचत और निवेश से बनाएं आर्थिक मजबूती

घर का बजट, जीवन की सुरक्षा

घरेलू बजट, बचत और अनुशासित खर्च ही आर्थिक स्वतंत्रता की कुंजी है। दिखावे और अनावश्यक खर्च से बचकर सही निवेश अपनाएं ताकि भविष्य सुरक्षित और तनावमुक्त बन सके।



डॉ. गौरव बिस्सा जीवन प्रबंध प्रशिक्षक

पा किंसन का नियम कहता है कि खर्च हमेशा आमदनी की बराबरी पर आने के लिए बढ़ते जाते हैं। इसका अर्थ है कि अगर आप उस कमाई को खर्च करने में अनुशासित और कठोर नहीं हैं तो अंततः आप उस संपूर्ण राशि से थोड़ा ज्यादा खर्च कर चुके होंगे। केन्द्र या राज्य के बजट के निर्माण और उसके विश्लेषण से पूर्व हमें अपने घर के बजट का निर्धारण, आय और व्यय तथा भविष्य के खर्चों को ध्यान में रखकर लिखित बजट बनाना चाहिए। बजट बनाते समय ये निश्चित करना जरूरी है कि हम अधिकतम कितनी बचत कर सकते हैं। बजट का अहम हिस्सा बचत है। प्रसिद्ध इन्वेस्टर वारेन बुफे के अनुसार, 'आपकी कमाई आपकी आय नहीं होती। आपकी आय तो वह रकम है जो बचत कर चुकने के बाद शेष बची हो।'

दिखावे की बजाए बचत पर ध्यान जरूरी

एक शोध के अनुसार, समाज में लगभग 70 फीसदी व्यक्ति जितना कमाते हैं लगभग उतना ही खर्च भी कर लेते हैं। वर्तमान में क्रेडिट कार्ड से खर्च करने की प्रवृत्ति के चलते बचत की प्रवृत्ति कम हो रही है। दिखावा, खुद को धनी साबित करने का प्रयास, अत्यंत प्रसन्न और आनंदित दिखाने की चाहत ने ईंसान की बचत की प्रवृत्ति को कम किया है। हमें यह मानकर चलना चाहिए कि कठिन आपदा कभी भी आ सकती है और उसके लिए हमारे पास कम से कम तीन से चार माह तक घर चलाने जितना पैसा होना ही चाहिए। इसके लिए आज से ही हमें अपनी आय का बीस से तीस फीसदी बचाना शुरू करना होगा।



बचत, खर्च और शोध

हमें घरेलू बजट बिगड़ने के सबसे बड़े कारणों पर निगाह रखनी होगी। शोध अध्ययनों के अनुसार खर्च बढ़ने और बजट बिगड़ने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं-

- इकोनॉमिक टाइम्स के अनुसार, भारत में केवल 28 प्रतिशत युवा वित्तीय अवधारणाओं को समझते हैं। ज्ञान की कमी के कारण युवा वित्तीय निर्णय नहीं ले पाते। इससे आवेगपूर्ण खर्च होता है।
- एक अध्ययन के अनुसार, ग्रामीण भारत में परिवारों द्वारा विवाह पर खर्च उनके वार्षिक आय का दो से चार गुना होता है। इससे वित्तीय असुरक्षा बढ़ जाती है।
- स्लोनिकिट द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, खरीदारी में भारतीय अपनी आय का लगभग 30 प्रतिशत ऑनलाइन शॉपिंग पर खर्च करते हैं।
- इंडियन जर्नल ऑफ कैपिटल मार्केट्स की रिपोर्ट के अनुसार, ऑनलाइन शॉपिंग में बेवजह की खरीदारी होती है और ऑनलाइन पेमेंट होने से खर्च का भय नहीं रहता।

सुरक्षित निवेश पर ध्यान

घरेलू बजट में सबसे जरूरी है अच्छा व सुरक्षित निवेश। एक ही जगह पर सारे पैसे निवेश करने के बजाय अपना निवेश विभिन्न विकल्पों में करना उचित रहता है। जमीन, शेयर बाजार, बॉन्ड, फिक्स्ड डिपॉजिट्स इत्यादि में आनुपातिक निवेश उचित है। इन सबके साथ कर्ज से बचने की कोशिश करना चाहिए। 'ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत', यानी उधार लेकर घी पीने की प्रवृत्ति को छोड़िये। यही वित्तीय स्वतंत्रता का मार्ग है।

क्यों बिगड़ता है बजट

हाथ में पैसा हो तो उसे उल-जलूल खर्च करना और खर्च के बाद पछताना अजीब आदत है। हमें याद रखना चाहिए कि यदि आज हम अनावश्यक चीजें खरीद रहे हैं तो कल हमें अपने रोजमर्रा के आवश्यक खर्च के लिए जरूरी वस्तुओं को बेचना पड़ेगा। भारत में पिछले कुछ समय में आर्थिक संरचना के बदलाव का प्रभाव विशेष रूप से युवा वर्ग की वित्तीय आदतों पर पड़ा है। खर्च की बढ़ती प्रवृत्ति बचत प्रधान देश भारत के लिए घातक संकेत बनती जा रही है। भारत में विवाह और जन्मदिन जैसे सामाजिक आयोजनों में बड़ा व्यय होने लगा है, जो चिंताजनक है। बचत बढ़ाने के लिए घर में समझाइश जरूरी है। साथ ही युवाओं को श्रम का महत्व समझाया जाना जरूरी है। छोटे से बच्चे को एक शार्पनर दिलाने से पहले उससे कुछ घरेलू श्रम करवाएं, ताकि उसे महसूस हो कि मेहनत के बाद ही सफलता मिलती है।

कम में ज्यादा सुख

अपनी आमदनी से कम पर जीवन जीने के लिए खुद को तैयार करना आज की जरूरत है। जितनी आमदनी हो, उसके 60 प्रतिशत में जीवन यापन करने का प्रयास करना चाहिए। यदि ऐसा न किया तो बुढ़ापे में भी काम करना होगा। समाज, संतान और रिश्तेदारों पर बिल्कुल भी निर्भर न हों, क्योंकि उनका प्रेम और निष्ठा भी अक्सर धन से जुड़ी होती है। अनर्गल खर्च से बचते हुए कम से कम खर्च में आनंदित रहने के बारे में सोचना चाहिए।

सुरों के सरताज का चौंकाने वाला फैसला: संगीत जगत में गहराया सन्नाटा

‘अच्छा चलता हूँ, दुआओं में याद रखना...’

मुर्शिदाबाद की गलियों से निकलकर करोड़ों दिलों की धड़कन बनने वाले अरिजीत सिंह का पार्श्व गायन छोड़ना सिर्फ एक कलाकार का विदा लेना नहीं है; यह उस सुरीले दौर का अवसान है जहां को शब्दों से ज्यादा सुरों में महसूस किया जाता।



सुधांशु दाक, लेखक, समीक्षक

भा

रतीय संगीत जगत में पिछले एक दशक से अगर कोई एक नाम धड़कन बनकर गूंज रहा है, तो वह

है अरिजीत सिंह। अपनी मखमली आवाज से करोड़ों दिलों को सुकून देने वाले इस फनकार के प्लेबैक संगीत से संन्यास लेने की खबरों ने प्रशंसकों को स्तब्ध कर दिया है। इसे केवल एक गायक का जाना नहीं, बल्कि हिंदी सिनेमा के एक 'सुरीले युग' का विराम माना जा रहा है।

अरिजीत का सफर किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं है। साल 2005 में एक रियलिटी शो 'फेम गुरुकुल' से छोटे स्थान पर बाहर होने के बाद, किसी ने नहीं सोचा था कि यह लड़का एक दिन भारतीय संगीत का चेहरा बनेगा। लेकिन अरिजीत टूटे नहीं, उन्होंने सालों तक म्यूजिक प्रोग्रामर और असिस्टेंट के तौर पर पर्दे के पीछे काम किया। 'आशिकी-2' की सफलता से पहले का वह गुमनाम संघर्ष ही था, जिसने उनकी आवाज में वह ठहराव और दर्द पैदा जाता, जिसे आज दुनिया 'रूहानियत' कहती है।

संगीत की विरासत जियागंज से मुंबई तक

अरिजीत की संगीत यात्रा पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के एक छोटे से शहर जियागंज से शुरू हुई। 25 अप्रैल 1987 को जन्मे अरिजीत को विरासत में ही संगीत का माहौल मिला। उनकी मां गायिका थीं और मामा तबला वादक, इसलिए संगीत उनके रक्त में था। उन्होंने राजेंद्र प्रसाद हजारी जैसे दिग्गजों से शास्त्रीय संगीत सीखा। हारमोनियम और तबले पर उनकी पकड़ ने उन्हें अन्य गायकों से अलग एक 'कम्प्लीट म्यूजिशियन' बनाया।



उपलब्धियों का शिखर

अरिजीत ने न केवल लोकप्रियता हासिल की, बल्कि आलोचकों का भी दिल जीता। उनके खाते में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जैसा प्रतिष्ठित सम्मान है, जो उन्हें फिल्म 'पद्मावत' के गाने 'बिन्ते दिल' के लिए मिला। इसके अलावा, लगातार पांच वर्षों तक फिल्मफेयर अवार्ड जीतना उनकी निरंतरता का प्रमाण है। वर्तमान दौर में जब संगीत शोर-शराबे और ऑटो-ट्यून के बीच अपनी पहचान खो रहा था, तब अरिजीत सुरों की शुद्धता के ध्वजवाहक बने रहे।

संन्यास के पीछे का दर्शन

अरिजीत हमेशा से चकाचौंध से दूर रहने वाले इंसान रहे हैं। अक्सर बड़े कलाकार खुद को व्यावसायिक बंधनों से मुक्त करने के लिए ऐसे फैसले लेते हैं। शायद वे अब फिल्म निर्माण की बंदिशों से बाहर निकलकर संगीत की किसी नई और गहरी साधना में उतरना चाहते हैं। हालांकि, उनके गाए हुए गीत आने वाली पीढ़ियों के एकांत और प्रेम के स्थायी साथी बने रहेंगे।

आगे क्या: निर्देशन की नई पारी!

- फैसले के मन में सवाल है कि अरिजीत अब आगे क्या करेंगे? चर्चा है कि उनके स्टेज शो की भारी मांग है, जिसके लिए वे 15 से 20 करोड़ रुपए तक की फीस चार्ज करते हैं। लेकिन 'राजस्थान टुडे' को अपने फिल्मी सूत्रों से जो चौंकाने वाली जानकारी मिली है, वह यह है कि अरिजीत सिंह अब निर्देशक बनने जा रहे हैं।
- सूत्रों के अनुसार, अरिजीत 'जंगल एडवेंचर' पर आधारित एक हिंदी फिल्म का निर्माण अपनी पत्नी कोयल सिंह के साथ मिलकर करने का निर्णय कर चुके हैं। इसे महावीर जैन सह-निर्माता के रूप में प्रोड्यूस करेंगे। चर्चा यह भी है कि शांतिनिकेतन में फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है और इसमें मुख्य भूमिका में नवाजुद्दीन सिद्दीकी नजर आ सकते हैं। हालांकि, अभी आधिकारिक पुष्टि का इंतजार है।

एक नजर में



सफर की शुरुआत: फिल्म 'मर्डर-2' का गाना 'फिर मोहब्बत'।

ग्लोबल स्टारडम: 2013 में 'तुम ही हो' से मिली वैश्विक पहचान।

बड़ी उपलब्धि: फिल्म 'पद्मावत' के लिए सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक का राष्ट्रीय पुरस्कार।

अनोखा रिकॉर्ड: फिल्मफेयर और आईफा जैसे दर्जनों पुरस्कारों से सुशोभित।

प्रारंभिक शिक्षा: उस्ताद राजेंद्र प्रसाद हजारी से शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण।





विपुल डोवाल, ज्योतिष, पीठाधीश्वर।
श्री शनिधाम आश्रम, विकासनगर देहरादून
ईमेल : vipravaani@gmail.com
मोबाइल : 9928424374

ग्रहों की चाल



मेष

करियर के मामले में जबरदस्त उछाल, प्रमोशन या नई जिम्मेदारी के योग बन रहे हैं। वहीं धारी नौकरी पेशा के लिए विशेष लाभ संभावित है। व्यापारिक लाभ गुरु दृष्टि से, लेकिन पितृ स्वास्थ्य चिंता रहेगी। प्रथमार्ध भागदौड़ भरी, उत्तरार्ध स्थिरता दर्शाता है। मंगलवार को बालाजी के मंदिर में गुड़ का प्रसाद अर्पित करें और सूर्य को जल अर्पित करें। दुर्घटना-वाहन सावधानी बरतें। परिवार सुखद, जीवनसाथी सहयोगी रहेंगे। शुभ रंग लाल।



वृषभ

क्रिएटिव/फिल्म/टूरिज्म/फैशन से संबंधित व्यवसायों में बड़ा लाभ हो सकता है। बृहस्पति धन भाव, शनि योगकारक— तेल/लोहा इत्यादि शनि संबंधित व्यापार शुभ संकेत दे रहे हैं। धन आगमन के योग हैं और मां की सेहत सुधरेगी। वैवाहिक जीवन मधुर रहेगा। शेर-सोना इत्यादि में निवेश शुभ रहेगा। शुभ रंग हरा।

Aquarius



मिथुन

विवाह से संबंधित बातचीत चल रही है तो सफल रहेगी। साथ ही नई जॉब के योग भी बना रहे हैं। बुध भाग्य स्थान पर लॉटरी/ शेयर इत्यादि में लाभ के संकेत दे रहा है। लेकिन साथ ही किसी बड़े एक्सीडेंट या सर्जरी के योग बन सकते हैं अतः सतर्क रहें। वाणी प्रभावी रहेगी और मान बढ़ेगा। विद्यार्थियों के लिए समय शुभ है। शुभ रंग पीला।



कर्क

महीने के मध्य तक कैरियर और संतान को लेकर सुखद समाचार मिल सकते हैं। दूरगामी यात्रा होगी तथा निवेश में भी लाभ दिखाई देता है। व्यर्थ का मानसिक तनाव रह सकता है। वैवाहिक जीवन में मिठास घुलती दिखाई दे रही है। तीर्थ यात्रा शुभ। चंदन तिलक लगाना आपके लिए शुभ रहेगा। पारिवारिक सहयोग मजबूत है। शुभ रंग सफेद।



सिंह

हृदय/पेट से संबंधित रोगों के प्रति सावधानी बरतें। दांपत्य जीवन में सुधार होगा। किसी धार्मिक यात्रा के योग बन रहे हैं। मन को थोड़ा शांत रखें। व्यर्थ खर्चों का योग भी बन रहा है। गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें। शुभ रंग सुनहरा।



कन्या

इस माह सबसे पहले आपको चर्म रोग से कष्ट मिल सकता है, इसके प्रति सतर्कता आवश्यक है। मानसिक परेशानियां बढ़ सकती हैं। जिन लोगों का तलाक से संबंधित केस चल रहा है उन्हें अनुकूल निर्णय मिल सकता है। चमड़ी/मानसिक रोग, तलाक योग। धन के लेनदेन में सतर्कता रखें। कार्यक्षेत्र में स्थिरता बनी रहेगी। शुभ रंग हरा।



तुला

छात्रों के लिए समय अनुकूल है। जमकर तैयारी करें तो लाभ प्राप्त होगा। हालांकि एकाग्रता बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। गर्भधारण की हुई महिलाओं को सतर्कता बरतनी चाहिए। विदेश योग उत्तरार्ध में बनता दिखाई दे रहा है। शुभ रंग नीला।



वृश्चिक

भाइयों तथा मित्रों के साथ बेवजह का क्लेश उत्पन्न हो सकता है, हालांकि तार्किक रूप से अंततः आप ही सही साबित होंगे। मृत्यु स्थान पर पांच ग्रहों का होना किसी बड़ी दुर्घटना का संकेत देता है अतः सतर्कता बरतें। लंबी यात्राओं से परहेज करें। किसी को दिया हुआ उधार डूब जाने की आशंका रहेगी। मान सम्मान में वृद्धि होगी। माता को स्वास्थ्य लाभ होगा। हनुमान चालीसा प्रत्येक मंगलवार को पाठ करना शुभ रहेगा। शुभ रंग लाल।



धनु

शनि की ढैया का प्रभाव बना हुआ है। समय बहुत ज्यादा अनुकूल तो नहीं दिखाई दे रहा है। हालांकि कोई कुटुंबी विवाद सुलझता हुआ दिखाई देता है। धन लाभ के भी योग इस माह दिखाई दे रहे हैं। प्रेम के क्षेत्र में संबंध मधुर होते दिख रहे हैं। छात्रों को सफलता प्राप्त होती दिखाई दे रही है। शुभ रंग पीला।



मकर

धन हानि के योग हैं। किसी भी प्रकार के फ्रॉड से बचाव रखने की आवश्यकता रहेगी। पैतृक संपत्ति लाभ मिलता दिख रहा है। घर में कोई शुभ कार्य संपन्न होगा। तेल दान शनिवार को करना आपके लिए शुभ रहेगा। शुभ रंग काला।

001



कुंभ

साढ़ेसाती का अंतिम चरण चल रहा है। कुछ आवश्यक निर्णय को लेकर दुविधा बनी रहेगी। जन्म स्थान से दूर बनने वाले व्यापारिक संबंध आपको लाभ देते दिखाई दे रहे हैं। कोलेस्ट्रॉल और बीपी की नियमित जांच कराएं। हृदय रोग के प्रति सतर्कता रखें। राजनीतिक क्षेत्र में लाभ होता दिखाई दे रहा है। तकनीकी क्षेत्र के लोगों को भी उन्नति कारक अवसर प्राप्त होंगे। शुभ रंग नीला।



मीन

सरकारी तंत्र के साथ कुछ विवाद की स्थिति बन सकती है। पहले से चले आ रहे न्यायिक मामले अटकेंगे। आर्थिक पक्ष कमजोर रहता दिखाई दे रहा है। निर्णय लेने की क्षमता भी कमजोर रहेगी। दुविधा में बहुत समय बर्बाद होगा। चोट या एक्सीडेंट से अपना बचाव रखें। उत्तरार्ध में कुछ पेंडिंग काम निपटेंगे। शुभ रंग बैंगनी।

सोना सिक्का®



महंगा है पर
खरा है!
स्वाद और सेहत
से भरा है

42 वर्षों से शुद्धता के हर
मापदंड पर खरा उतरा है,
इसलिए बेस्ट है सोना सिक्का

सोना सिक्का रखता है ख्याल आपकी सेहत का आपके परिवार की खुशियों का इसलिए सोना सिक्का तेल
के निर्माण में गुणवत्ता शुद्धता और सेहत से कोई समझौता नहीं किया जाता है।

परिवार की सेहत के लिए सोना सिक्का में व्यंजन बनायें, खुद खायें, सबको खिलायें.....!

मिलते-जुलते नाम और अशुद्ध ब्रांड से सावधान. आपके स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ नहीं

Shyam and Shyam Oils Pvt. Ltd. Jodhpur

Plot No. B 5,6,7 (A), 1st Phase, Basni Industrial Area, Jodhpur, (Raj.)

डिस्ट्रीब्यूटर बनने एवं डीलरशिप हेतु
तेल फ्री नं. पर सम्पर्क करें: 1800 313 3292

🌐sonasikka.com | 📧info@sonasikka.com | 📱sonasikka

📞0291-2512333, 2512338

Available on: 📺amazon 📺Flipkart 📺



AYUSHI
BUILDCON PVT. LTD.



AYUSHI
BUILDERS & DEVELOPERS



221-222, Shyam Nagar, Pal Link Road, Jodhpur - 342 003 (Raj.)
Tel. : 0291-2710071 Mobile : 94141 27593, 93147 11416
E-mail : mdsharma74@live.in